इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ायद

(इस्लाम के तीन मूलभूत विश्वास)

लेखक

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह०)

अनुवादक :

मुहम्मद हसन अन्सारी

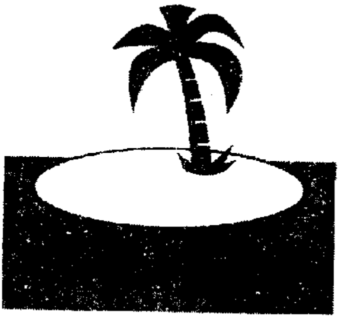

प्रकाशक :

सत्यमार्ग प्रकाशन

अल-आफ़िया

504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

® सर्वाधिकार सुरक्षित

किताब : इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ायद

लेखक : हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह०)

अनुवाद : मुहम्मद हसन अन्सारी

पृष्ठ : 188

मूल्य : Rs.60/-

संस्सकरण : प्रथम (हिन्दी), सन् २०१०

प्रकाशक : सत्यमार्ग प्रकाशन

यूनिट : अल–आफ़िया *(रजिस्टर्ड ट्रस्ट)*

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह०) की स्मृति में स्थापित)

504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

Phone: 0522-2741230 E-mail: al_aafiya@yahoo.com

मिलने का पता :

- अल–आफ़िया, **504/45/2D**, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ
- नदवी बुक डिपो, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
- एकाडमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
- मकतबे इस्लाम, गोइन रोड, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

विषय सूची

भूमिका 5
प्रस्तावना 8

अध्याय एक : तौहीद (एकेश्वर वाद)

तौहीद (एकेश्वर वाद) एक मानवीय आवश्यकता 12
धोखा व असावधानी 13
सर्वश्रेष्ठ ज्ञान 14
नबियों के आवाहन (दावत) की विधि 15
लोगों के दो वर्ग 21
एकेश्वरवाद तथा बहुदेववाद की वास्तविकता 25
शिर्क के रूप व कार्य और जाहिली रीति–रिवाज 29
नबूवत का मूल उद्देश्य विश्वव्यापी मुशरिकाना जाहिलियत (अज्ञानता) को समाप्त करना है 31
तौहीद की दावत और उसके तक़ाज़े (आवश्यकताएं) 35
हिन्दुस्तान में तौहीद की दावत 47
हज़रत मुजद्दिदे अलिफ़े सानी रह० 47
तौहीद के कुछ बुद्धिमता के उदाहरण 49
हज़रत मीर सैयद अली हमदानी रह० 51
तौहीद का स्रोत 52
सैयद अली हमदानी की ग़ैरत 53
तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा मुसलमानों की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान 57
तौहीद ताक़त का स्रोत 58
शुद्ध तौहीद का अक़ीदा 60

अध्याय दो : रिसालत (दूतता)

मानव–प्रवृत्ति के प्रश्न 62
प्रश्नों के उत्तर की दो राहें 64
ज़िन्दगी की पूरी विवेचना वह्इ और पैग़म्बरों की बुद्धिमता के बिना सम्भव नहीं 71

www.abulhasanalinadwi.org

नबियों और अनुसंधानकर्ताओं के विचार व कार्य–विधि का मतभेद..... 72
नबियों की विशिष्टता 77
नबियों की शिक्षा से विमुख होने का अंजाम 78
नबियों के ज्ञान और दूसरे ज्ञान व कला कौशल की तुलना 79
रसूल के आ जाने के बाद इन्कार की गुंजाइश नहीं 83
नबियों का आवाहन 84
बह्इ (ईश्वाणी) व रिसालत सभ्यता की बुनियाद है 86
इन्सानियत की ख़ैर व बरकत और सभ्यता के विकास का
बुनियादी कारण 99
दीन व शरीअत के बारे में नबियों की ग़ैरत व अडिगता 102
दावत की हिकमत 109
नबियों के आज्ञा पालन और अनुकरण पर क़ुर्आन का जोर 111
नबियों का सम्मान और उनसे प्रेम 112
नबी सल्ल० के आज्ञापालन व मुहब्बत में क़ौम का कल्याण है 119
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की महानता और मानव
जाति को इसकी आवश्यकता 120
नबूवत का असल कारनामा 143
ख़त्म नबूवत का अक़ीदा (विश्वास) एक इन्सानी ज़रूरत 146
मुस्लिम समप्रदाय की सबसे बड़ी विशेषता 148
अक़ीदों की वहदत (एकता) 150
अरकान की वहदत (एकता) 151
नबूवत के समापन का एलान इस उम्मत की हिफाज़त
व बक़ा की ज़मानत लेता है 151
सब फैज़ है ख़त्मे नबूवत का 155
शरीअत में इज़ाफा करने वाला गुस्ताख़ है 157

अध्याय तीन : आख़िरत

क़ुर्आन में आख़िरत का बयान और उसके तर्क 158
आख़िरत पर ईमान की विशेषतायें 169
मोमिन (आस्थावान) की दुआ 175
आख़िरत के इन्कार के प्रभाव 181

www.abulhasanalinadwi.org

भूमिका

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वस्सलातु वस्सलामु अला, सैय्यिदिल मुरसलीन व अला आलिही व सहबिही अजमईन, अम्मा बाअद।

हजरत मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा है, "मनुष्य के कार्य सुधार के लिए सर्वप्रथम उसके हृदय और मस्तिष्क का सुधार होना चाहिए, और मनुष्य के हृदय और इरादे पर अगर कोई वस्तु राज्य करती है तो वह उसका विश्वास (अक़ीदा) है"। अल्लाह के संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट शब्दों में अक़ाएद (विश्वास) के पांच नियम बताए, ख़ुदा पर ईमान (आस्था), फरिश्तों (देवदूतों) पर ईमान, ईशदूतों पर ईमान, ईशग्रन्थों पर ईमान और कर्मों के बदले व सज़ा के दिन पर ईमान।

यह वह पांच नियम हैं जिनका वर्णन पवित्र कुर्आन में विभिन्न स्थानों पर आया है, सूरः निसा में इसको इस तरह बयान किया गया है–

अनुवाद– *ऐ वह लोगों जो ईमान ला चुके हो! ईमान लाओ, ख़ुदा पर और उसके रसूल (दूत) पर और उसकी किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले उतारी, और जो सख़्श ख़ुदा का, उसके फरिश्तों का, उसके पैग़म्बरों का और अन्तिम दिन का इन्कार करे वह अति पथभ्रष्ठ हुआ।*

पवित्र कुर्आन में यह सारे विश्वास (अक़ाएद) बार बार वर्णन किये गये हैं और इसके अलावा दूसरे अक़ाएद जो अहले सुन्नत व जमात के यहां सर्वमान्य हैं उनका वर्णन पवित्र कुर्आन और हदीस शरीफ़ में पाया जाता है जैसा कि भाग्य का प्रश्न है, पवित्र कुर्आन में

www.abulhasanalinadwi.org

इसका विभिन्न शैली में वर्णन किया गया है और फिर हदीस शरीफ़ में बड़ी स्पष्टता से इसको ईमान की श्रेणी में शामिल किया गया है।

इनमें तौहीद का अक़ीदा, आख़रत का अक़ीदा और रिसालत को तो पवित्र कुर्आन में अधिकाधिक वर्णन किया गया है। इसलिए पवित्र कुर्आन को "किताबुत्तौहीद" भी कहा गया। हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिख है कि तौहीद के बारे में स्पष्ट से स्पष्ट और प्रबल से प्रबल दो टूक बात जो कही जा सकती है पवित्र कुर्आन में मौजूद है, पवित्र कुर्आन पढ़ कर आदमी सब कुछ हो सकता है लेकिन मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं हो सकता।

इसी प्रकार ईशदूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आख़िरत के अक़ीदे पर बहुत बल दिया है। बल्कि मक्का काल में अवतरित वह्इ (ईशवाणी) का अधिकतर भाग इसी के प्रचार प्रसार पर आधारित है।

ईशदूत पर ईमान आवश्यक घोषित किया गया है, और विभिन्न स्थानों पर इनके गुण और विशेषताओं का वर्णन किया गया है, क्योंकि अल्लाह तआला के आदेश उसके निर्देश और उसकी प्रसन्नता का ज्ञान उन्हीं के माध्यम से होता है उसके साथ उसकी किताबों और फरिश्तों पर ईमान अवश्यक घोषित किया गया है।

हज़रत मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इन समस्त ईमान की बातों पर अपनी अदिवित्य पुस्तक "सीरतुन्नबी" भाग ४ में अति शोधात्मक और उत्तम शैली में बहस की है।

हज़रत मौलाना सैयद अबुलहसन अली नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने, "अरकाने अरबअह" पर क़लम उठाया और एक ऐसी कृति वजूद में आई जिसकी दाद हर लेखक ने दी और दिल खोल कर दी, उनका इरादा था कि इसी शैली में इस्लाम के प्रथम स्तम्भ पर भी क़लम उठाएं और इसका ख़ाका भी तैयार कर लिया था परन्तु यह काम पूरा

www.abulhasanalinadwi.org

न हो सका, उनके चाहने वालों को यह ख़्याल हुआ की हज़रत मौलाना ने अक़ीदों पर समय समय से विभिन्न शैली में कुछ न कुछ लिखा है जो भिन्न पत्र पत्रिकाओं की फाइलों में बन्द हैं, अगर उनको एकत्र करके छपवा दिया जाए तो लाभप्रद होगें, मेरे आदरणिय भाई मोलवी बिलाल साहब सबके धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपना सौभाग्य समझकर मेहनत और छानबीन करके यह सारे लेख संकलित किए, इस प्रकार तौहीद, आख़िरत और रिसालत जो अक़ीदे के मूलभूत और अतिआवश्यक भाग में सें हैं पर एकाधिक लेख उपलब्ध हो गये, जो अल्लाह के नाम से छपवाए जा रहे हैं।

बड़ी हर्ष की बात है कि इस महत्वपूर्ण पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का सौभाग्य अल्–आफ़िया ट्रस्ट (जो लेखक हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह॰ की स्मृति में स्थापित किया गया है) को प्राप्त हो रहा है जिसका उद्देश्य धार्मिक साहित्य को हिन्दी में प्रकाशित करना है।

इससे भी अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि ट्रस्ट के हिन्दी विभाग की यह पहली पुस्तक है, जिससे ट्रस्ट अपने हिन्दी अकादमी का उद्धाटन कर रहा है। अल्लाह तआला इस प्रयास को स्वीकार करे, इस बिगड़े हुए परिवेश में तौहीद के अक़ीदे के फैलने, तौहीद को दृढ़ होने और रिसालत के अक़ीदे को समझने और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आन्तिम सन्देष्टा होने को मानने और उनको ईमान का भाग बनाने का साधन बनाए और इस काम को ख़ैर व बरकत का कारण बनाकर लाभकारी बनाए। ....**आमीन**।

मौलाना सैय्यद अब्दुल्ला हसनी नदवी
(दारूल उलूम नदवतुल उलेमा, लखनऊ)

प्रस्तावना

इस्लाम धर्म की सर्वप्रथम विशिष्टता तथा स्पष्ट चिन्ह यह है कि वह "अकीदा" (विश्वास) पर बल देता है और सबसे पहले इस समस्या के समाधान का निर्देश देता है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक सारे नबी (ईश दूत) एक निश्चित अकीदा (विश्वास/मत) (जो उन्हें वह्इ (ईशवाणी) के माध्यम से प्राप्त हुआ था) की ओर लोगों को बुलाते रहे और इस की मांग करते रहे, और इस सम्बन्ध में किसी समझौता व दस्तबरदारी (विरक्तता) के लिए तैयार न हुए। उनकी दृष्टि में उत्तम से उत्तम नैतिक जीवन तथा बुलंद से बुलंद मानवीय किरदार धारक, नेकी व सतकर्म सही चाल और सार्थकता की जीवंत आकृति और आदर्श प्रतिमूर्ति चाहे उससे किसी उत्तम सत्ता की स्थापना किसी अच्छे समाज का अस्तित्व और कोई लाभप्रद क्रांति हुई हो उस समय तक कोई मूल्य नहीं जब तक तक वह उस अकीदा (मत) का मानने वाला न हो जिसको वे लेकर आए तथा जिसकी ओर बुलाना उनका जीवन-लक्ष्य है और जब तक उसकी यह सारी चेष्टाएं उस अकीदे के आधार पर न हों। यही वह सीमा रेखा व स्पष्ट तथा उज्जवल रेखा है जो नबियों (ईशदूतों) अलैहिमुस्सलाम की दावत (आवाहन) और राष्ट्रीय नेताओं, राजनीतिक लीडरों, क्रान्तिकारियों तथा हर उस व्यक्ति के बीच खींच दी गई है जिसकी सोच व दृष्टि का स्रोत नबियों (ईशदूतों) अलैहिमुस्सलाम की शिक्षाओं तथा जीवन चरित्रों के अतिरिक्त कोई और हो।[1]

[1] वर्तमान युग की बिगड़ी हुई परिस्थितियों से कुंठित बहुत से लोगों में यह प्रवृत्ति पैदा हो गई है कि वह हर उस व्यक्ति को जो क्रान्ति का नारा लगाए या किसी महाशक्ति को चुनौती दे, अकीदे (विश्वास) के हर बिगाड़ तथा सोच व

www.abulhasanalinadwi.org

पवित्र कुर्आन जो परिवर्तन से सुरक्षित तथा क़यामत (महाप्रलय) तक शेष रहने वाला एक मात्र आकाशीय ग्रन्थ है और अन्तिम संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी जो अन्य नबियों की जीवनियों में अकेली ऐसी जीवनी है जिस पर ऐतिहासिक व ज्ञान के दृष्टिकोण से विश्वास किया जा सकता है तथा जिससे हर युग में व्यवहारिक लाभ सम्भव है इस वास्तविकता के अधिकाधिक तर्क व सबूत उपलब्ध कराते हैं। निम्न में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैः–

इस सम्बन्ध में स्पष्ट वह आयत (मंत्र) है जिसमें अल्लाह तआला अपने नबी व ख़लील (घनिष्ट मित्र) हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के धैर्य तथा हृदय की कोमलता की विशेष रूप से प्रसंशा की है।

अनुवाद– *निःसंदेह इब्राहीम अलैहिस्सलाम बड़े ही सहनशील, कोमल हृदय वाले और (अल्लाह की ओर) झुकने वाले थे।*

(सूरः हूद ७५)

और उनके साथियों तथा अनुयायियों के आचरण, जीवन विधान तथा प्रवृत्ति व प्रकृति की इस प्रकार व्याख्या की है।

अनुवाद– *तुम लोगों के लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके साथियों के तरीके में उत्तम आदर्श है, जब उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से (साफ़–साफ़) कह दिया कि हम तुमसे और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते हो उन सब से अलग हैं (और) तुम्हारी बातों को कभी नहीं मान सकते और जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान*

दृष्टिकोण की हर ख़राबी व विकार को क्षमा कर देते हैं और अकीदे की समस्या को उपेक्षित कर देते है, बल्कि जो इस अवसर पर अकीदे की बहस को उठाए व उसकी मान्यताओं के विषय में कोई प्रश्न करे उनकी भर्त्सना करते हैं और कभी असत्य शक्तियों से साठ–गांठ कर लेने का आरोप भी लगा देते हैं, यह विचारधारा और आचरण सही धार्मिक स्वभाव व नबी वाले ढंग से कोई सम्बन्ध नहीं रखता।

www.abulhasanalinadwi.org

(विश्वास) नहीं लाओगे हमारे तुम्हारे बीच सदैव शत्रुता व ईर्ष्या (विद्वेष) स्पष्ट रूप से जारी रहेगा, हाँ! इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने पिता से (अवश्य) कहा कि मैं आपके लिए क्षमा याचना करूँगा,[१] लेकिन अल्लाह के सामने आपके संबंध में किसी वस्तु का अधिकार नहीं रखता, ऐ हमारे पालनहार आप ही पर हमारा भरोसा है, और हम आपकी ओर दिल के पूरे झुकाव के साथ आते हैं तथा आप ही की सेवा में हमें लौट कर जाना है!

(सूरः अलमुम्तहिनह ४)

अक़ीदे (विश्वास) के महत्व और उसके ठीक होने की दशा में अल्लाह से निकटता तथा गलत होने पर उससे दूरी का माप दण्ड होने का तर्क इससे अधिक क्या हो सकता है कि सूरः अल् काफिरून पवित्र मक्का में उस समय उतरी जब परिस्थितियाँ यह मांग कर रही थीं कि नर्मी, विनम्रता से काम लिया जाए तथा इबादत (उपासना) व अकीदे (विश्वास) के आधार पर दुश्मनी पैदा न की जाए और इस समस्या को उस समय तक स्थगित रखा जाए जब तक कि इस्लाम को शक्ति प्राप्त हो तथा परिस्थितियाँ सामान्य व शांत हों, परन्तु पवित्र कुर्आन साफ़–साफ़ कहता है और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुलकर एलान व घोषणा करते हैं।

अनुवाद– *ऐ पैगम्बर! इस्लाम का इन्कार करने वालों से कह दीजिए कि ऐ इन्कार करने वालो (काफिरो)! जिनकी पूजा तुम करते हो मैं*

[१]शायद कुछ लोगों के दिल में सन्देह उत्पन्न हो कि हजरत इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* ने अपने मूर्तिपूजक पिता से प्रार्थना और क्षमा–याचना का वायदा क्यों किया। इसका उत्तर कुरआन की सूरः बराअत की आयत ११३–११४ में मौजूद है कि उन्होंने वायदे को पूरा किया लेकिन जब उनको मालूम हो गया कि वह खुदा का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गए और उन्होंने उससे बरी होने का एलान किया और हमेशा के लिये यही सिद्धान्त बना दिया गया।

www.abulhasanalinadwi.org

उनकी इबादत (उपासना) नहीं करता और मैं जिस (अल्लाह) की इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत नहीं करते और मैं फिर कहता हूँ कि जिनकी तुम पूजा करते हो उनकी मैं इबादत (पूजा) करने वाला नहीं हूँ, तथा न तुम उसकी बन्दगी (उपासना) करने वाले (मालूम होते) हो जिसकी मैं बंदगी करता हूँ (बस अब) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन (धर्म) है।

(सूरः अलकाफ़िरून १–६)

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय एक

तौहीद (एकेश्वर वाद)

तौहीद (एकेश्वर वाद) एक मानवीय आवश्यकता-

मनुष्य पूर्ण रूप से मोहताज और मोहताजी की प्रतिमूर्ति है और सर्वथा आकांक्षाओं का पुतला है। उसकी आवश्यकताएं अथाह मानो असीम, उसकी शारीरिक आध्यात्मिक अपेक्षाएं व आकांक्षाएं असीमित, और उसकी प्रकृति में लोभ व असंतोष है। इसलिए वह किसी ऐसी हस्ती के सहारे नहीं जी सकता् जिसकी शक्ति व अधिकार, जिसका दान व अन्नदान (रज़्ज़ाकी) जिसकी सूचना व ज्ञान चाहे कितना ही विशाल हो, परन्तु सीमित हो।

मनुष्य अपनी प्रवृत्ति में शीशे से अधिक कोमल और पानी के बुलबुले से ज़्यादा कमजोर है। वह अपने अस्तित्व के लिए सैकड़ों चीजों का मोहताज है और इस संसार में हज़ारों वस्तुएं उसकी शत्रु हैं, उसकी रक्षा वही कर सकता है, जिसका सत्ता समस्त ब्रह्माण्ड पर हो, तत्वों पर अधिकार हो, वस्तुओं के प्रभाव व विशेषताएं (गुण) उसकी मुट्ठी में हों, वह उनका सृजक भी हो और उनका निरंतरक भी हो व व्यवस्थापक भी हो तथा उसमें समाप्त कर देने, परिवर्तित कर देने की सामर्थ्य भी हो, उसकी शक्ति में तनिक कमी और उसकी प्रभुसत्ता में कभी अस्थिरता उत्पन्न न हो क्योंकि एक तनिक सी अस्थिरता तथा छोटी सी चूक और गड़बड़ी ब्रह्माण्ड व सृष्टि की कोमल संरचना का विनाश और विलोम व विभिन्नताओं के इस कारख़ाने को टकरा कर अस्त-व्यस्त कर सकती है। उसका ज्ञान सर्वव्यापी हो वह हर समय जागृत व सावधान हो, भूल-चूक, गफ़लत

www.abulhasanalinadwi.org

तथा नींद की झपकी भी कभी उसके पास न आ सके। इसलिए कि सृष्टियां अनगिनत और उनकी आवश्यकताएं असीम और ऐसी गुप्त हैं कि उनको स्वयं ज्ञात नहीं, वे दुधमुंहे शिशु से अधिक पालन–पोषण व संरक्षण का मोहताज व प्यार व स्नेह का पात्र है। उसको ऐसी हस्ती की आवश्यकता है जो माता–पिता से अधिक स्नेही हों परन्तु उसके प्यार में करूणा व युक्ति दोनों हों क्योंकि उसके पालन–पोषण के लिए दोनों अनिवार्य हैं।

यद्यपि इस बाह्य व आंतरिक संसार पर विचार करने से ज्ञात होता है कि ऐसी हस्ती अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं, तथा आंतरिक व बाह्य संसार की अधिकाधिक निशानियां तथा प्रमाण इस वास्तविकता की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जैसा कि स्वयं अल्लाह तआला कहते हैं।

अनुवाद– शीघ्र ही हम उनको अपनी निशानियाँ उनके चारों ओर दिखाएंगे तथा स्वयं उनके भीतर भी, यहाँ तक कि उनके लिए यह वास्तविकता स्पष्ट हो जाए कि वह सत्य है, क्या तुम्हारा पालनहार स्वयं हर वस्तु पर साक्षी होने के लिए पर्याप्त नहीं।

(सूरः हा मीम सज्दा ५३)

अतः इबादत (उपासना) व बन्दगी (पूजा) का पात्र वही है।

धोखा व असावधानी

परन्तु इस संसार में भ्रामक लाभ–हानि की मृगतृष्णा इस प्रकार हिलोरे ले रही है कि मानव दृष्टि बार–बार धोखा खाती है, और अपनी जैसी सैकड़ों असहाय व अधिकार हीन हस्तियों को लाभ व हानि पहुँचाने वाला और समर्थ व अधिकर्ता (मुख़्तार) समझकर अपना पूज्यनीय व उपास्य (माबूद) बना लेती है, और यह भ्रम कभी–कभी आजीवन नहीं टूटता।

www.abulhasanalinadwi.org

मनुष्य खाये पीये पड़ा रहे तथा उसका वंश चलता रहे, और कभी–कभी ज्ञान के क्षेत्र में आकाश से तारे तोड़ लाए तथा विशाल समुद्र व मरूस्थल पार कर ले परन्तु अपने पैदा करने वाले को न पहचाने इससे बढ़कर अज्ञान क्या हो सकता है। परन्तु संसार में यही हो रहा था, करोड़ों मनुष्य अपने पैदा करने वाले को नहीं जानते थे, पिता को जानते थे परन्तु पिता को किसने पैदा किया? फिर उसके पिता को किसने पैदा किया? ब्रह्माण्ड को किसने बनाया, धरती व आकाश का सृजन किसने किया? पहाड़ किसने खड़े किए? यह बाग बगीचे किसने उगाए तथा जीविका कौन देता है? और अच्छा बुरा भाग्य किसने बनाया? व कौन मृत्यु व जीवन का मालिक है? आज यदि कोई हिन्दी नहीं पढ़ा है तो लोग कहेंगे कि "अनपढ़" है और यदि उर्दू नहीं पढ़ा है तो मुसलमानों के क्षेत्र में निरक्षर कहेंगे, और अरबी नहीं पढ़ा है तो अरब वाले "उम्मी" (अनपढ़) कहेंगे परन्तु इससे बढ़कर क्या अज्ञान (जिहालत) हो सकता है कि अपने पैदा करने वाले को न जाने कि वही इबादत (उपासना) का पात्र है, संसार पूर्ण रूप से इससे अनभिज्ञ था इसलिए अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा।

सर्वश्रेष्ठ ज्ञान

नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के माध्यम से जो ज्ञान मनुष्यों तक पहुँचे हैं, उनमें सर्वश्रेष्ठ, महत्वपूर्ण व आवश्यक ज्ञान अल्लाह की ज़ात (व्यक्तित्व) व गुण व कर्म का ज्ञान है। इस ज्ञान का स्रोत केवल नबी (ईशदूत) हैं, इस ज्ञान के स्रोत व संसाधन तथा इसकी प्रारम्भिक जानकारी व अनुभव भी मनुष्य की पहुँच से बाहर है। यहाँ अनुमान का सर्वथा आधार ही नहीं, अल्लाह का कोई छायाचित्र व सदृश्य ही नहीं, और वह हर प्रकार की सदृश्यता व समानता से पवित्र (पाक), बुलंद

www.abulhasanalinadwi.org

व उच्च है, वह हर उस विचार, निरीक्षण तथा एहसास से उच्च व सर्वथा अलग है जिनसे मनुष्य अवगत व परिचित है तथा जिनसे वह भौतिक संसार में काम लेता है, यहाँ बुद्धि का अनुमान तथा प्रतिभा भी कुछ सहायता नहीं कर सकती, क्योंकि यह वह क्षेत्र नहीं है जहाँ बुद्धि के घोड़े दौड़ाए जाएं और अनुमानों की पतंगें उड़ाई जाएं।

यह ज्ञान इसलिए सर्वश्रेष्ठ व सर्वोत्तम घोषित किया गया कि इसी पर मनुष्यों की भलाई व कल्याण निर्भर है तथा यही अकीदों (विश्वासों) कर्म, नैतिकता व सभ्यता का आधार है। इसी के द्वारा मनुष्य अपनी वास्तविकता से अवगत होता है, ब्रह्माण्ड की पहेली बूझता है और जीवन रहस्य मालूम करता है। इसी से इस संसार में अपनी हैसियत निर्धारित करता है तथा इसी के आधार पर अपने जैसे लोगों से संबंध स्थापित करता है, अपनी जीवन शैली के विषय में निर्णय और पूर्ण विश्वास, बुद्धिमता तथा स्पष्टता के साथ अपने लक्ष्य निर्धारित करता है।

इसलिए हर सम्प्रदाय व वंश तथा हर युग व वर्ग में इस ज्ञान को उच्चतम श्रेणी प्राप्त है, और प्रत्येक गम्भीर, शुभचिंतक, लक्ष्यधारक तथा परिणाम की चिन्ता करने वाले मनुष्य ने इस ज्ञान से घनिष्ट रूचि व लगाव का प्रदर्शन किया। क्योंकि इस ज्ञान से वंचित होना (चाहे जान बूझकर हो अथवा अनजाने में) ऐसी वंचितता का कारण है जिससे बढ़कर कोई दुर्भाग्य नहीं, और ऐसी बर्बादी व विनाश का कारण है जिससे बढ़कर कोई विनाश नहीं।

नबियों के आवाहन (दावत) की विधि

नबियों *(अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम)* ने सत्य को उजागर करने के

www.abulhasanalinadwi.org

लिए तथा लोगों के नज़र के भ्रम को तोड़ने के लिए दो प्रकार की विधियों का उपयोग कियाः–

(१) अल्लाह तआला के गुणों की स्पष्ट रूप से बार–बार बयान किया इसलिए कि शिर्क (बहुदेववाद) तथा अज्ञान के ज़हर का इससे बढ़कर कोई विषहर नहीं, शिर्क (बहुदेववाद) अज्ञान, अल्लाह से अस्वजनता, अल्लाह के अतिरिक्त से लगाव व उससे व्यस्तता का मूल कारण, ख़ुदा से अवगत न होना तथा उसके गुणों व कर्मो से **अनभिज्ञता** या अनदेखी है, इसीलिए कहाः–

अनुवाद– *और वे अल्लाह को उतना नहीं समझे जितना वह है, जबकि सारी धरती क़यामत (महाप्रलय) के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और उसके दाहिने हाथ में आकाश लिपटे हुए होंगे अल्लाह पवित्र है तथा वे लोग जो सहभागी व साक्षी ठहराते हैं उससे वह बहुत बुलंद है।*

(सूरः अज़्ज़ुमर ६७)

(२) अल्लाह के अतिरिक्त समस्त हस्तियों व सृष्टियों की वास्तविकता तथा उनकी वास्तविक प्रतिष्ठा की व्याख्या कर दी ताकि आँखों से परदा हट जाए और प्रकाश में देख लिया जाए कि वे वास्तव में क्या है और अन्य के लिए तथा अपने लिए वे कहाँ तक लाभप्रद व उपयोगी हो सकते हैं। उनके साथ आराधना व बन्दगी का मामला तथा उनसे लाभ–हानि व कार्यपूर्ति की अपेक्षा उनके समर्थन व संरक्षण पर विश्वास, उनके ज्ञान पर भरोसा तथा उनके सहारे जीना कहाँ तक ठीक व बुद्धि के अनुकूल है?

अल्लाह तआला के गुणों के सम्बन्ध में उन लोगों ने सैद्धान्तिक और क्रांतिकारी बातें की जिससे जीवन का रुख़ तथा मन मस्तिष्क की दिशा बदल जाती है, जैसेः– वह "समद" है, अर्थात सम्पूर्ण

www.abulhasanalinadwi.org

ब्रह्माण्ड तथा संसार का हर कण अपना अस्तित्व तथा अस्तित्व से सम्बन्धित वस्तुओं में उसका मोहताज है और वह कदापि किसी वस्तु में किसी का मोहताज नहीं। रचना व सृजन के साथ–साथ संसार का यह सारा कारखाना ही वही अकेला चला रहा है तथा आकाश से लेकर धरती तक उसी की सत्ता और उसी का प्रशासन है।

अनुवाद– *सुनलो! उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है आदेश देना! आकाश से धरती तक वही काम की व्यवस्था करता है।* *(सूरः अस्सजदा ५)*

और इस राजसत्ता में कोई उसका सहायक व सहभागी नहीं।

अनुवाद– *आप कह दीजिए, सारी प्रशसाएं उस अल्लाह के लिए हैं, जिसकी न संतान है और न ही सत्ता में कोई साझी तथा न कोई जिल्लत के समय में सहायक है और उसकी पूर्ण रूप से बड़ाई बयान करो।* *(सूरः अल् इस्रा १११)*

अनुवाद– *और न मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के उपास्यों का आकाशों और धरती में कुछ साझा है और न उनमें से कोई अल्लाह का सहायक है।* *(सूरः अस्सबा २२)*

केवल उसी की सत्ता असीम, शक्ति न समाप्त होने वाली करूणा सागर अथाह और कोष समाप्तहीन है।

अनुवाद– *और धरती व आकाश के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं।*

(सूरः अल् मुनाफिकून ७)

अनुवाद– *उसके करूणा व दया के हाथ खुले हुए हैं जैसे चाहता है **खर्च** करता है।* *(सूरः अल् माइदाः ६४)*

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *जिसको चाहता बेहिसाब देता है।*

(सूरः अल् बक़रह १२२)

इसलिए लालची मनुष्य की झोली वही भर सकता है और उसकी संतुष्टि वही कर सकता है केवल उसी की आंतरिक व बाहरी रहस्य तथा हृदय की बातों का ज्ञान है और केवल उसी की ज़ात सर्वज्ञाता व सर्व–दृष्टा है।

अनुवाद– *वह आँखों की चोरी व सीनों की छुपी हुई बातों को जानता है।* *(सूरः गाफ़िर १६)*

अतः क़ेवल उसी के ज्ञान पर भरोसा किया जा सकता है तथा हृदय की गुप्त आकांक्षाओं और जीवन की असीम आवश्यकताओं को वही जान सकता है तथा वही पूरा कर सकता है, वही मनुष्य की रक्षा करता है और उसके संत्री मनुष्य की रक्षा हेतु ताएनात हैं।

अनुवाद– *प्रत्येक व्यक्ति के आगे और पीछे लगे हुए चौकीदार हैं जो अल्लाह के आदेशानुसार उसकी रक्षा करते हैं।*

(सूरः अर्रअ्द ११)

फिर वह निकटतम लोगों से अधिक निकट तथा यकताओं से अधिक यकता है, वह मनुष्य से उसके गर्दन की नस से अधिक निकट है और मरने वाले से उसके परिचायकों से अधिक निकट है।

अनुवाद– *और हम तो मनुष्य की गर्दन की नस से भी अधिक निकट हैं।* (सूरः काफ़ १६)

अनुवाद– *उस समय तुमसे भी अधिक मरने वाले से हम निकट होते हैं परन्तु तुम देख नहीं सकते।* *(सूरः अल–वाक़िअह ८५)*

www.abulhasanalinadwi.org

वह हर व्यक्ति की प्रार्थना व विनती को हर समय व हर स्थान पर सुनता है, उसके और बन्दे के बीच कोई दीवार और आड़ नहीं, और न उसके यहाँ मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए किसी साधन व शिफ़ारिश की आवश्यकता है।

अनुवाद– *और जब तुमसे मेरे बंदे मुझको पूछें तो मैं तो निकट ही हूँ जब दुआ माँगने वाला मुझसे दुआ माँगता है तो मैं स्वीकार करता हूँ, तो उन्हें मेरा आदेश मानना चाहिए और मुझ पर ईमान (आस्था) लाना चाहिए ताकि सत्यमार्ग पर आएं।* (सूरः अल् बक़रह १६८)

उसका प्यार व स्नेह असीमित है, माता–पिता का प्यार केवल उसके पालनहार होने तथा करूणा का एक चमत्कार तथा एक छोटा सा नमूना है।

फिर वह सदैव जीवित और जागरूक है, क्योंकि वह धरती आकाश को संभाले हुए है, अतः उसके यहाँ किसी समय असावधानी व भूल नहीं।

अनुवाद– *अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना (बन्दगी) के योग्य नहीं वही हमेशा जीवित रहने वाला है, कायम व स्थापित है। सबको थामने वाला है, उसको कभी भी ऊँघ व नींद नहीं आ सकती।*

(सूरः अल–बक़रह २५५)

इसके विरूद्ध उन्होंने अल्लाह की समस्त सृष्टि के लिए वह सारे गुण सिद्ध किये जो उन ईश्वरीय गुणों के विरूद्ध व विलोम सिद्ध हुए हैं, जिनका समूह गुलामी, असहायता व दुर्बलता तथा असमर्थता है।

अनुवाद– *उसी को पुकारना सत्य है, जिनको यह लोग अल्लाह के*

www.abulhasanalinadwi.org

अतिरिक्त पुकारते हैं वे उनके कुछ भी काम नहीं आते, जैसे कोई प्यासा आदमी अपनी दोनों हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि उसके मुँह में आ जाए जब कि पानी कभी भी उसके मुँह में नहीं पहुँच सकता, इसी प्रकार इंकार करने वालों की दुआ व प्रार्थना का कुछ भी प्रभाव नहीं। (सूरः अर्रअद १४)

अनुवाद— ऐ लोगो! एक उदाहरण दिया जाता है ध्यान से सुनो, अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते हो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकते, यदि सब एकत्र होकर पैदा करना चाहें तो भी नहीं कर सकते और यदि मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन झपट कर ले जाए तो उससे छुड़ा भी नहीं सकते, जिसने अपनी दुआ व प्रार्थना में ऐसे को तलब किया जो स्वयं बहुत कमज़ोर, बेबस है और जिससे दुआ की वह भी बेचारा बेबस, अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने वालों ने अल्लाह की कदर नहीं समझी जैसी कदर का उसे अधिकार है। निःसंदेह अल्लाह तआला शक्तिमान व ज़बरदस्त है।

(सूरः अल् हज्ज ७३)

अनुवाद— जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को समर्थक बना लिया है, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जिसने अपना एक घर बनाया यह सच है कि सब घरों में कमजोर घर मकड़ी का घर होता है, क्या ही अच्छा होता कि वे (इस वास्तविकता को) जानते।

(सूरः अल् अंकबूत ४१)

अनुवाद— यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है उसी की राज सत्ता है, जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो उनको तो खजूर की गुठली के छिलके **के बराबर भी अधिकार** प्राप्त नहीं। यदि तुम उनको **पुकारते हो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही** नहीं और यदि सुन लें तो

www.abulhasanalinadwi.org

तुम्हारी कुछ काम न आएं और क़यामत (महाप्रलय) के दिन तुम्हारे साझी बनाने के कार्य को भी नकार देंगे, और हर प्रकार की ख़बर रखने वाले (अल्लाह) की तरह दूसरा कोई तुमको घटना की सूचना, नहीं दे सकता। ऐ लोगो! तुम लोग अल्लाह के मोहताज हो और केवल वही बेपरवाह है तथा हर प्रकार की प्रशंसा का पात्र है।

(सूरः फातिर १३–१५)

अनुवाद– *मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे उपास्य (मअ़बूद) बनाए जो किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते और अपने ही लिए किसी लाभ व हानि का अधिकार नहीं रखते और उनको जीवन–मृत्यु और मरकर दुबारा जीवित होने का भी अधिकार नहीं।* *(सूरः अल्फ़ुर्क़ान ३)*

लोगों के दो वर्ग

नबीगणों के इन स्पष्ट निर्देश तथा शिक्षाओं के पश्चात साधारण रूप से लोगों के दो वर्ग अस्तित्व में आए।

(१) एक वर्ग वह है जिसने अल्लाह के उन पैगम्बरों पर भरोसा किया जिनको अल्लाह ने नबूव्वत (दूतता) व रिसालत (दूतकर्म) से सम्मानित किया अपनी सत्य पहचान (मअ़रिफ़त) प्रदान किया। अपने व्यक्तित्व व गुणों तथा इच्छाओं से अवगत करने के लिए अपने तथा सृष्टि के बीच माध्यम बनाया और उनको विश्वास का ऐसा धन प्रदान किया जिससे अधिक की कल्पना सम्भव नहीं, वह प्रकाश प्रदान किया जिससे अधिक बुद्धि को रोशन करने वाला तथा विश्वसनीय कोई प्रकाश नहीं हो सकता।

अनुवाद– *और इसी प्रकार हम इब्राहिम को आकाशों और धरती की*

www.abulhasanalinadwi.org

राज सत्ता दिखाते हैं ताकि उन्हें भलीभांति विश्वास हो जाए।

(सूरः अल् अन्आम ७५)

नबियों के इसी वर्ग के एक व्यक्ति हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जब वह उनसे अल्लाह तआला के व्यक्तित्व व गुणों के विषय में (बिना किसी ज्ञान व प्रकाश के) अनावश्यक बहस कर रही थी उत्तर दिया।

अनुवाद– *क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ा करते हो जबकि उसने मुझे सत्यमार्ग दिखा दिया है।* *(सूरः अल् अन्आम ८१)*

इस वर्ग के लोगों ने नबियों का दामन थाम कर और उनके द्वारा प्रदत मूल वास्तविक्ताओं व अक़ीदों (विश्वासों) के प्रकाश में ब्रह्माण्ड व जीवों में चिन्तन–मनन और अल्लाह की निशानियों तथा आकाशीय ईश ग्रन्थों में विचार की यात्रा आरम्भ की तथा इसकी सहायता से सदकर्म, मन–शुद्धि और आचरण सुधार का कार्य ठीक लकीरों पर किया, उन्होंने बुद्धि प्रयोग को त्यागा नहीं, केवल यह किया कि उसको सही मार्ग पर लगाकर उससे वह काम लिया जो वह कर सकती थी और जो उसका वास्तविक लाभ था, उन्होंने देखा कि उसके पश्चात नबियों की शिक्षाओं और उनके परिणाम के चिन्तन–मनन में पूर्णतया सामन्जस्य है और वे एक दूसरे की सत्यापन करते हैं तथा उनके ईमान व यक़ीन (आस्था व विश्वास) में बढ़ोत्तरी होती जाती है।

अनुवाद– *और (इस चिन्तन–मनन) से उनके ईमान व आज्ञाकारिता में बढोत्तरी ही हुई।* (सूरः अल् अहज़ाब २२)

(२) दूसरा वह गिरोह है जिसने अपनी प्रतिभा व ज्ञान पर

www.abulhasanalinadwi.org

पूर्ण रूप से भरोसा किया, बुद्धि की लगाम को स्वतंत्र छोड़ दिया तथा खूब अनुमान लगाया, अल्लाह की ज़ात (व्यक्तित्व) व गुणों के अध्ययन व शोध में इस प्रकार निःसंकोच विश्लेषण किया जैसे प्रयोगशाला में प्रकृति, ऊर्जा अथवा किसी वनस्पति के साथ किया जाता है, और अल्लाह के विषय में "वह ऐसा है" वह ऐसा नहीं है कि बेधड़क निर्णय प्रारम्भ कर दिये, उनके यहाँ इस सम्बन्ध में वह ऐसा नहीं है की मात्रा, वह ऐसा है के मुकाबले बहुत ज्यादा थी, तथा यह वास्तविकता है कि मनुष्य विश्वास व प्रकाश से वंचित हो तो उसके लिए नकारना मानने से अधिक सरल होता है। इसीलिए यूनानी दर्शनशास्त्र में खुदा से सम्बन्धित अध्याय में शोध के परिणाम अधिकांश नकारात्मक हैं, और कोई धर्म (दीन) कोई जीवन व्यवस्था भी नकारने पर स्थापित नहीं होती।

यहाँ कुर्आन का एक विचित्र रोचक बिंदू है जिसकी ओर सर्वप्रथम महान इस्लामी विद्वान हाफिज पुत्र तौमिया रहमतुल्लाहि अलैहि के एक वाक्य से ध्यान गया, वह कहते हैं "यूनान के दार्शनिक जब अल्लाह के गुणों का उल्लेख करते तो वे गुणों के अधिक विस्तार व गहराई में जाते थे जो उनकी दृष्टि से अल्लाह के लिए उपयुक्त नहीं हैं। अर्थात "नकारात्मक गुण" (वह ऐसा नहीं है तथा इस बात से अछूता है) और जब सकारात्मक गुणों का उल्लेख होता (अल्लाह ऐसा है और उसका यह गुण है) तो इसमें संक्षेप से काम लेते। इस प्रकार दर्शन शास्त्र में नकारात्मक व्याख्यान विस्तार पूर्वक है और सकारात्मक व्याख्यान संक्षेप में मिलता है, इसके विरूद्ध पवित्र कुर्आन में अल्लाह के गुणों में सकारात्मक पक्षों का विस्तृत वर्णन किया गया है और नकारात्मक व्याख्यान का संक्षिप्त में उल्लेख किया गया है। दूसरे आकाशीय धर्मों और नबियों की शिक्षाओं में समान गुण मिलेगा कि ऐसा

है विस्तृत व ऐसा नहीं है संक्षिप्त।

अल्लाह तआला के गुणों की सकारात्मक व्याख्या पवित्र कुर्आन की निम्न आयतों में पढ़िये।

अनुवाद– *वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं, छिपी व खुली हर बात का जानने वाला, वह बड़ा दयालू तथा असीम कृपालू है। वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई उपासना (इबादत) के पात्र नहीं, वास्तविक राजा, पवित्र, अम्न व सलामती देने वाला, निगहबानी करने वाला, वर्चस्व वाला, जबरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह उन लोगों के साझी बनाने से पवित्र है। रचयिता (ख़ालिक) भी वही, आविष्कार करने वाला व चेहरा मोहरा बनाने वाला भी वही, उसके अच्छे से अच्छे नाम हैं आकाशों व धरती की सारी वस्तुएं उसकी गुणगान (तस्बीह) करती हैं और वही बडा जबरदस्त युक्तिवान है।*

(सूरः अल्हश्र २२–२४)

और नकारात्मक गुण का उल्लेख पढ़िए–

अनुवाद– *उसके समान कोई वस्तु नहीं और वह देखता–सुनता है।*

(सूरः अश्शूरा ११)

इमाम इब्न तैमिया के कथनानुसार नकारात्मक गुण चाहे सैकड़ों की संख्या में हों उनका वह प्रभाव नहीं पड़ सकता जो एक सकारात्मक व्याख्यान का होता है, इमाम इब्न तैमिया ने सर्वथा सत्य बात कही है, वास्तविकता यही है कि हमारा यह जीवन तथा गत वंशों के जीवन साक्षी हैं कि मानव जीवन हाँ पर स्थापित है न कि नहीं पर, न की मात्रा मानव जीवन तथा संस्कृति में बहुत कम है।

www.abulhasanalinadwi.org

तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा शिर्क (बहुदेववाद) की वास्तविकता और अरब के मुश्रिकीन (बहुदेववादी)

इबादत (उपासना) का आधार अक़ीदों (विश्वासों) तथा ईमान (आस्था) के सही रखने पर है जिसके अकीदे व ईमान में गड़बड़ी हो उसकी न कोई इबादत (उपासना) मान्य है और न कोई कर्म ठीक माना जाएगा और जिसका अक़ीदा व ईमान ठीक हो उसका थोड़ा काम भी बहुत है, इसलिए हर व्यक्ति को इसकी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि उसका ईमान व अक़ीदा (विश्वास) ठीक हो, और सही ईमान व अकीदे (विश्वास) की प्राप्ति और उस पर संतुष्टि, उसका कार्य उद्देश्य तथा अंतिम मनोकामना हो, उसको अनिवार्य व अद्वितीय समझे और इसमें क्षणभर भी देर न करे।

स्वच्छ मानसिकता, गहनता व सत्य की खोज की भावना के साथ पवित्र कुर्आन के अध्य्यन से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (संदेष्टा) के युग के काफिर अपने झूठे उपास्यों को अल्लाह का सर्वथा समकक्ष व समान प्रतिष्ठित नहीं समझते थे, वरन् वे यह स्वीकार करते थे कि वे सृष्टि व बन्दे हैं, उनका कभी यह विश्वास न था कि उनके उपास्य क्षमता व शक्ति में किसी प्रकार कम नहीं और वे अल्लाह के साथ एक ही पड़ले में हैं पवित्र कुर्आन में जगह–जगह इसकी गवाहियां मौजूद हैं, इस अवसर पर सूरः अल्मूमिनून की निम्न लिखित आयतें पर्याप्त होंगी।

अनुवाद– *ऐ नबी आप पूछिये। धरती और उसकी सारी वस्तुएं किसकी हैं। यदि तुम जानते हो तो बताओ! शीघ्र ही उत्तर देंगे कि सब कुछ अल्लाह का है, आप कहिए। फिर तुम सोचते नहीं। आप पूछिए सातों आसमानों और महान सिंहासन (अर्श) का मालिक कौन*

www.abulhasanalinadwi.org

है? वे उत्तर देंगे कि अल्लाह। आप कहिए कि तुम डरते नहीं? आप पूछिए हर वस्तु की सत्ता किसके हाथ में है? वही शरण देता है और उसके विरुद्ध कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम्हें ज्ञान है, उत्तर देंगे अल्लाह। आप कहिए कि फिर तुम पर कहाँ से जादू चल गया है? (कि ऐसे अल्लाह को छोड़कर दूसरों की पूजा करते हो)

(सूरः अल्मुअ्मिनून ८४–८६)

उनका कुफ़्र व शिर्क (नास्तिकता व बहुदेववाद) केवल यह था कि वे अपने झूठे पूज्यों को पुकारते तथा उनकी दुहाई देते, उन पर चढ़ावा चढ़ाते तथा उनके नाम पर बली देते व उनको अल्लाह के वहाँ सिफारिशी, संकट मोचन तथा काम बनाने वाले समझते थे, अतः हर वह व्यक्ति जो किसी के साथ वही मामला करे जो काफ़िर लोग अपने झूठे उपास्यों के साथ करते थे तो यद्यपि वह इसको स्वीकार करे कि वह एक सृष्टा तथा अल्लाह का बन्दा (उपासक) है, उसमें तथा जाहिलियत–युग (इस्लाम पूर्व युग) के एक बड़े से बड़े मूर्ति पूजक में मुश्रिक होने के विषय में कोई अन्तर नहीं होगा।

हज़रत शाह वली उल्लाह साहब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं– ज्ञात हो कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के चार दर्जे हैं–

(१) केवल अल्लाह को "वाजिबुल वजूद (जिसका अस्तित्व कभी समाप्त न हो) करार देना अतः कोई और वाजिबुल् वजूद नहीं।

(२) अर्श (सिंहासन) आकाश व धरती और सारी मौजूद वस्तुओं का सृजक अल्लाह को समझना। (इसी को तौहीदे रूबूबियत कहा जाता है)

यह दो दर्जे वे हैं जिनसे आसमानी ग्रंथों ने बहस की आवश्यकता

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं समझी और न अरब के मुश्रिकों (बहुदेववादियों) तथा यहूदियों व ईसाइयों को इस विषय में मतभेद व इनकार था वरन् पवित्र कुर्आन इसका स्पष्टीकरण करता है कि यह दोनों दर्जे उनके वहाँ सर्वमान्य हैं।

(३) आकाश व धरती के और जो कुछ इनके मध्य है उसको केवल अल्लाह के लिए विशेष समझना।

(४) अल्लाह के अलावा किसी को इबादत (उपासना) का पात्र न मानना।

यह दोनों दर्जे स्वाभाविक रूप से परस्पर सम्बन्ध रखते हैं इनका घनिष्ट और निकटतम सम्बन्ध है, इन्हीं दोनों दर्जों से पवित्र कुर्आन ने बहस की है तथा काफिरों के शक संदेहों का पर्याप्त उत्तर दिया है।

(हुज्जतुल्लाहिल बलिग़ा १/५६–६०)

इससे यह ज्ञात हुआ कि शिर्क का अर्थ केवल यह नहीं कि किसी को अल्लाह का समकक्ष व समान क़रार दिया जाए, बल्कि शिर्क की वास्तविकता यह है कि आदमी किसी के साथ वह काम अथवा वह मामला करे जो अल्लाह तआला ने अपनी श्रेष्ठ व उच्च ज़ात (व्यक्तित्व) के साथ खास कर दिया है और जिसको बन्दगी (उपासना) की पहचान बनाया है, जैसे किसी के सामने सजदा करना (माथा टेकना) किसी के नाम की बली देना या मन्नत मानना, विपदा व दुःख में किसी से सहायता माँगना और यह समझना कि वह हर स्थान पर हाजिर व नाजिर (सर्वव्यापी व सर्वदृष्टा) है और उसको ब्रह्माण्ड की व्यवस्था चलाने वाला समझना, यह सारी वह वस्तुएं हैं जिनसे शिर्क (बहुदेववाद) सिद्ध होता है, और मनुष्य इसके करने से

www.abulhasanalinadwi.org

मुश्रिक हो जाता है चाहे उसका विश्वास ही क्यों न हो कि वह इन्सान, फरिश्ता (देवदूत) अथवा जिन्न जिसके सामने वह सजदा कर रहा है (माथा टेक रहा है) या जिसके नाम की बलि दे रहा है या मन्नते मान रहा है और जिससे सहायता माँग रहा है, वे अल्लाह तआला से बहुत कम प्रतिष्ठित तथा छोटी पदवी वाले हैं और चाहे यह मानता हो कि अल्लाह ही सृजक (ख़ालिक) है और यह उसका बन्दा और सृष्टि (मख़लूक़) है, इस विषय में नबी (संदेष्टा) वली (अल्लाह के प्रिय) जिन्न शैतान भूत प्रेत सब बराबर हैं, इनमें से किसी के साथ भी जो व्यवहार व मामला करेगा वह मुश्रिक (बहुदेववादी) क़रार दिया जाएगा और यही कारण है कि अल्लाह तआला उन यहूदियों व ईसाइयों को जिन्होंने अपने राहिबों, पादरियों तथा पुरोहितों के विषय में इस प्रकार अत्यधिक प्रशंसा व बढ़ा–चढ़ा कर व्याख्यान का रास्ता अपनाया जिस प्रकार मुश्रिकों (बहुदेव वादियों) ने अपने झूठे पूज्यों के विषय में उन्हीं लक्षणों व नामों से याद किया है जिन नामों से मूर्ति पूज़कों व मश्रिकों को याद किया है और उन अत्याधिक प्रशंसा करने वालों व सत्य मार्ग से हटने वालों से उसी प्रकार अपना कोप व क्रोध व्यक्त किया है जिस प्रकार अत्यधिक मुश्रिकों पर अल्लाह तआला का कथन है:–

अनुवाद– *अल्लाह के अतिरिक्त अपने अलिमों (ज्ञानियों) और दुरवेशों (संसार त्यागियों) और मरयम अलैहस्सलाम के पुत्र मसीह अलैहिस्सलाम को अपना रब (पालनहार) बना लिया जबकि उनको केवल यह आदेश था कि एक मात्र अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत (उपासना) न करें, उसके अतिरिक्त कोई इबादत (पूजा) के योग्य नहीं अल्लाह उनके शिर्क से पाक है।*

(सूरः अत्तौबा ३१)

www.abulhasanalinadwi.org

शिर्क के रूप व कार्य और जाहिली रीति-रिवाज

इस नियामक तथा साधारण बात के पश्चात आवश्यक है कि उन कमजोरियों, रोग तथा उन भयानक बिगाड़ की जड़ों को चिन्हित कर दिया जाए जो अज्ञानियों, बाहरी प्रभाव तथा जाहिली रीति–रिवाज से प्रभावित संप्रदायों व कौमों और उन लोगों में पाई जाती हैं जिनका पालन–पोषण सही इस्लामी शिक्षाओं, पवित्र कुर्आन व हदीस के ज्ञान तथा शुद्ध दीन की दावत (आवाहन) से दूर तथा सही इस्लामी शिक्षाओं से वंचित परिवेश में हुआ, उन कमजोरियों को चिन्हित करना तथा रोगी शरीर में उन रोगों का सही निर्धारण व चिन्हण आवश्यक है।

सर्वव्यापी ज्ञान, असीमित इच्छा, स्वतंत्र व असीमित अधिकार व पूर्ण शक्ति अल्लाह की विशेषताएं हैं तथा इबादत (उपासना) के कार्य व पहचान जैसे सजदा (विशेष शैली में माथा टेकना) अथवा रूकूअ् (विशेष शैली में सिर नवाना) किसी के सामने करना किसी के नाम पर उसकी प्रसन्नता के लिए रोज़ा (विशेष इस्लामी व्रत) रखना, सुदूर से पूर्ण तैयारी के साथ किसी स्थान के लिए लम्बी यात्राएं करना और उसके साथ वह मामला करना जो कअ्बा के साथ किया जाता है तथा वहाँ कुर्बानी (विशेष इस्लामी बलि) के पशु ले जाना, मन्नत मानना शिर्क के काम तथा शिर्क के स्पष्ट रूप हैं, आदर के वह ढ़ंग और पहचान जिनसे इबादत (उपासना) का रूप बने केवल अल्लाह के लिए विशेष है, गैब का ज्ञान केवल अल्लाह को है तथा मानव शक्ति से बाहर है। हृदयों के भेदों तथा विचारों व नियतों का ज्ञान हर समय किसी के लिए सम्भव नहीं, अल्लाह तआला को सिफ़ारिश स्वीकार करने और प्रभावशाली व सम्मानित तथा सत्ताधारी लोगों को राजी व खुश करने में दुनिया के राजाओं पर कयास नहीं करना

www.abulhasanalinadwi.org

चाहिए। ऐसी हर छोटी बड़ी बात में अल्लाह ही से सम्पर्क साधना चाहिए, सांसारिक राजाओं के समान ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के लिए दरबारियों व मन्त्रियों से मदद लेना ख़ुदा की शान नहीं है। किसी प्रकार का सज्दा (माथा टेकना) ख़ुदा के अतिरिक्त किसी के लिए वैध नहीं। हज की इबादतें अति (आदर) के मज़ाहिर (प्रकट होने वाली चीजें) और प्रेम व तल्लीनता के तमाम पहचान काबा और हरम के साथ ख़ास है। नेक लोगों और औलिया के नाम पर जानवरों को खास करना, उनका आदर करना, उन की चढ़ावा चढ़ाना और उनकी कुर्बानी (ज़बह) के ज़रिये उनकी निकटता प्राप्त करना हराम है। आजिज़ी व विनम्रता के साथ हद दर्जे का आदर केवल ख़ुदा का हक़ है। निकटता व आदर की भावना से कुर्बानी करना केवल अल्लाह का हक है। ब्रह्माण्ड में नक्षत्रों, ग्रहों के प्रभाव में विश्वास करना शिर्क है। जादूगरों, ज्योतिषियों और ग़ैब की बातें बताने वालों पर भरोसा करना कुफ्र है।

नाम रखने में भी मुसलमानों को तौहीद की पहचान का प्रदर्शन करना चाहिए। गलतफहमी पैदा करने और जिससे मुशरिकाना ऐतेकाद (शिर्क वाले विश्वास) का इज़हार होता है, ऐसे शब्दों से परहेज़ करना चाहिए। ख़ुदा के अलावा किसी की क़सम खाना शिर्क है, गैर अल्लाह की मन्नतें मानना हराम है, इसी प्रकार किसी ऐसे मक़ाम पर कुर्बानी करना जहाँ मूर्ति थी अथवा जाहिली युग का कोई उत्सव मनाया जाता था अवैध है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अतिश्योक्ति की नक्ल और औलिया व नेक लोगों के चित्रों और शबीहों की ताजीम (आदर) करने से परहेज़ और पूरा एहतियात करना चाहिए।

www.abulhasanalinadwi.org

नबूवत का मूल उद्देश्य विश्वव्यापी मुशरिकाना जाहिलियत (अज्ञानता) को समाप्त करना है।

अल्लाह के बारे में अक़ीदा और ख़ुदा व बन्दे के बीच सम्बन्ध के सुधार और सिर्फ एक की बन्दगी की दावत, हर ज़माने में नबियों की पहली दावत और उनके आने का प्रथम और अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। हमेशा उनकी शिक्षा यही रही है कि अल्लाह ही लाभ व हानि पहुँचाने की ताकत रखता है और सिर्फ वही इबादत, दुआ, ध्यान और कुर्बानी का पात्र है। उन्होंने हर दौर में अपने ज़माने में जारी मूर्तिपूजा पर करारी चोट लगाई। अज्ञान लोगों का मूर्तियों, पवित्र आत्माओं, जिन्दा व मुर्दा शखसियतों के बारे में विश्वास था कि अल्लाह ने उन्हें मान मर्यादा और सम्मान देकर पूज्य बनाया है, और इन्सानों के बारे में उनकी सिफ़ारिशों को कुबूल करता है, जैसे महान सम्राट हर इलाके के लिए एक हाकिम भेज देता है और कुछ महत्वपूर्ण बातों के अलावा इलाके की व्यवस्था की जिम्मेदारी उन्हीं के सर डाल देता है, इसलिए उन्हीं से कहना और उन्हीं को राज़ी करना लाभदायक और जरूरी है।

जिस व्यक्ति को पवित्र कुर्आन से कुछ भी लगाव है, उसे निश्चित रूप से यह बात मालूम होगी कि शिर्क व मूर्ति पूजा के खिलाफ मोर्चाबंदी उससे लड़ना, उसको दुनिया से मिटाने की कोशिश करना, और लोगों को उसके चँगुल से हमेशा के लिए छुटकारा दिलाना नबियों का बुनियादी मक़सद नबियों के आगमन का मूल कारण, उनकी दावत का आधार तथा उनके संघर्ष का वास्तविक लक्ष्य था, यही उनकी दावती कार्यों का ध्रुव व केन्द्रबिन्दु था। पवित्र कुर्आन कभी तो उनके बारे में संक्षेप में कहता है।

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *और हमने आपसे पहले रसूल भेजे। उनके पास हमने वह्इ (ईशवाणी) भेजी कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तो मेरी ही इबादत करो।*

(सूरः अल् अंबिया २५)

और कभी विस्तार के साथ एक–एक नबी का नाम लेता है और बताता है कि दावत की शुरूआत इसी तौहीद की दावत से हुई थी और पहली बात जो उन्होंने कही वह यही थी।

अनुवाद– ***उन्होंने कहा! ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ्बूद (उपास्य) नहीं।***

(सूरः अल–अअ्राफ़ ५६)

यही बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) और शिर्क विश्वव्यापी, दीर्घकालीन और शक्तिशाली "जाहिलियत" है जो किसी ज़माने के साथ खास नहीं, और यही मानव जाति का प्राचीनतम और घातक रोग है जो मानव इतिहास के सारे युगों, सभ्यता, आर्थिक स्थिति व राजनीति के तमाम परिवर्तनों व क्रान्तियों के बावजूद मानव जाति के पीछे लगा रहता है, अल्लाह की गैरत और उसके कोप को भड़काता है, बन्दों की आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास की राह का रोड़ा बनता है और उनको इन्सानियत के बुलन्द दर्जे से गिराकर गर्त में औंधे मुँह डाल देता है और यही खण्डन क़यामत (महाप्रलय) तक के लिए दीनी दावतों और सुधारात्मक अभियानों का बुनियादी स्तम्भ और नबूवत की सर्वकालिक मीरास है।

अनुवाद– *और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वे उससे सम्पर्क साधे।*

(सूरः अज़्ज़ुख़रूफ़ २८)

www.abulhasanalinadwi.org

यह कदापि जायज़ नहीं कि नई सुधारात्मक व दावती और ज़माने की नई ज़रूरतों के असर से "शिर्क जली" के महत्व को कम कर दिया जाये, और दावत व तबलीग़ के बुनियादी नियमों में इसको गौण (ज़िमनी) हैसियत दी जाये या "राजनीतिक स्वीकारोक्ति" तथा इन्सानों के बनाये हुए किसी क़ानून व्यवस्था के कुबूल करने को और गैर अल्लाह की इबादत को एक दर्जे में रखा जाये। और दोनों पर एक ही हुक्म लगाया जाये, या यह समझ लिया जाये कि शिर्क प्राचीन जाहिलियत की (जब मानव बुद्धि और ज्ञान व सभ्यता शैष्यावस्था में थे) बीमारी और ख़राबी तथा जिहालत की एक भद्दी और भोंडी शक्ल थी, जो इन्सान अविकसित और असभ्य युग ही में इख़्तियार कर सकता है। अब इसका दौर गुज़र गया। इन्सान बहुत तरक्की कर चुका है, अब उसका बौद्धिक भटकाव नये–नये विकसित रूप में प्रकट होता है, यह दावा व वास्तविकता के भी विपरीत है। शिर्क जली (खुला) बल्कि खुली हुई बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) आज भी स्पष्ट रूप में मौजूद है, और क़ौम की क़ौम, पूरे–पूरे मुल्क यहाँ तक कि बहुत से मुसलमान शिर्क जली से ग्रसित हैं और पवित्र क़ुर्आन का यह एलान आज भी सत्य है।

अनुवाद– *उनमें से अधिकतर लोगों का हाल यह है कि अल्लाह को मानते भी है और उसका साझीदार भी ठहराते हैं।*

(सूरः यूसुफ १०६)

सच यह है कि अगर कोई इसका पात्र था कि उसके अक़ीदे की अनदेखी कर ली जाये क्योंकि वह आजीवन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए डटकर मुकाबला और जान व परिवार से कुर्बान रहा तो व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबु

www.abulhasanalinadwi.org

तालिब थे। जीवनी लेखक एक मत होकर उनके बारे में लिखते है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ढाल और घेरा बने हुए थे, और अपनी पूरी क़ौम के विपरीत आपके सहायक और समर्थक थे। लेकिन सही बयानों से साबित है कि जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबु तालिब की मौत के समय, जब कि अबु जहल और अब्दुल्ला बिन अबी उमैया भी वहाँ बैठे हुए थे, उनके पास गये और कहा "ऐ चचा! आप ला–इला–ह इल्लल्लाह कह दीजिए, मैं इस कलिमा की ख़ुदा के यहाँ गवाही दूँगा, तो अबु जहल और इब्ने अबी उमैया कहने लगे, अबुतालिब! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब से मुँह मोड़ोगे तो अबुतालिब ने यह कहते हुए जान दी कि अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब पर हूँ। सही बयानों में आता है कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अंहु ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा! अबुतालिब आपकी रक्षा और मदद करते थे, और आपका बड़ा लेहाज व समर्थन करते थे और लोगों की प्रसन्नता और नाराजगी की कतई परवाह नहीं करते थे, तो क्या इसका फायदा उनको पहुँचेगा? आपने फरमाया "मैंने उनको आग की लपटों में पाया, और मामूली आग तक निकाल लाया।"

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान)

इसी तरह इमाम मुस्लिम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अंहा का बयान लिखा है। वह कहती हैं कि मैंने कहा ऐ! अल्लाह के रसूल इब्ने जंदआन जाहिलियत (इस्लाम पूर्व काल) के ज़माने में बड़ी सिलह रहमी (अपने परिवार वालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना) करते थे, अनाथों और गरीबों को खाना खिलाते थे, तो क्या उनके लिए यह लाभकारी होगा? आपने कहा "नहीं! उनको इससे कोई फायदा हासिल न होगा क्योंकि उन्होंने कभी नहीं कहा"

www.abulhasanalinadwi.org

ऐ मेरे रब! बदले के दिन मेरे गुनाह को बख्श दीजिएगा।[1]

इससे भी अधिक साफ और सुस्पष्ट हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अंहा की एक दूसरी रिवायत (बयान) है जिसमें वह कहती हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बद्र की तरफ़ रवाना हुए और जब मक़ामे हर्रः अलवबरः पर पहुँचे तो एक व्यक्ति आया जिसके साहस की बड़ी चर्चा थी, उसको देखकर सहाबा को बड़ी खुशी हुई (कि इससे इस्लाम के लश्कर में जिनमें ३१३ लोग थे एक वृद्धि होगी जब वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तो उसने कहा कि मैं इसलिए आया हूँ कि आपके साथ चलूँ और माले गनीमत (युद्ध के बाद प्राप्त माल) में शरीक हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हो? उसने कहा नहीं। आपने कहा वापस जाओ इसलिए कि मैं किसी मुशरिक से मदद नहीं ले सकता। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अंहा कहती हैं कि वह कुछ दूर चला, यहाँ तक कि हम लोग जब शजरः नामी स्थान पर थे, वह फिर आया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वही पहली बात कही, आपने वही पहला जवाब दिया, फरमाया जाओ मैं मुशरिक से मदद नहीं लेता। वह चला गया। और बैदा (स्थान) पहुँचने पर फिर आया। आपने फिर पूछा, अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? उसने कहा, हाँ। उस समय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तो चलो।[2]

तौहीद की दावत और उसके तक़ाज़े (आवश्यकताएं)

नबियों और उनके उत्तराधिकारियों का असल क़ाम यह है कि **वह अल्लाह से बन्दों का निकटस्थ सम्बन्ध पैदा करें।**

---

[1] सही मुस्लिम क़िताबुल ईमान [2] सही मुस्लिम किताबुल जिहादिं वस्सियर

www.abulhasanalinadwi.org

***अनुवाद–** और उनको इसके अलावा कोई आदेश नहीं दिया गया था, कि केवल अल्लाह ही की इबादत करें, अपने धर्म को उसके लिए शुद्ध करके एकाग्र होकर।*

(सूरः अल् बयि्यनह ५)

अल्लाह और उसके बन्दों के बीच कोई पर्दा और रोक न रहे। प्रेम व मुहब्बत, लगन व लगाव, इरादा व अमल, कोशिश व प्रयास, हाजिरी व तौबा, आज्ञापालन व इबादत, विनती व गिड़गिड़ाना, सरगोशी व मुनाज़ात (ईश प्रार्थना) भय और लोभ अतः मन–मस्तिष्क सबका किबलः (केन्द्र) वही हो। नबियों और उनके सच्चे उत्तराधिकारियों के तमाम प्रयासों का केन्द्र और सबसे बड़ा मक़सद यही होता है। इसी लिए उनका संघर्ष है, उनकी हिजरत (प्रवास) है, उनकी तब्लीग़ (धर्म प्रचार) है, और इसी राह में उनकी ज़िन्दगी और मौत है।

***अनुवाद–** कह दीजिए निः संदेह मेरी नमाज और मेरी कुर्बानी और मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब (पालनहार) है। जिसका कोई साझीदार नहीं है। मुझे तो इसी का आदेश मिला है और मैं सबसे पहले आज्ञाकारी हूँ।*

(सूरः अल अन्आम १६३)

और इस मक़सद में भी अल्लाह के आदेश से वह अपने क्षेत्र और अनुयायियों में पूरे तौर पर कामयाब होते हैं। वह मन मस्तिष्क को गैर अल्लाह की व्यस्तता और जकड़न से आज़ाद कर देते है। लेकिन अज्ञान का प्रभाव कभी–कभी इसके ख़िलाफ़ बगावत करते रहते हैं, और शिर्क इन्सानों में दब–दब कर उभरता रहता है, यहाँ तक कि खुद उनके नाम लेने वालों और उनकी उम्मत और अनुयायी कहलाने वालों का हाल वह हो जाता है जो कुर्आन ने बयान किया है:–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– उनमें अधिकतर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझीदार भी ठहराते हैं।

(सूरः यूसुफ़ १०६)

धीरे–धीरे अल्लाह से असम्बन्ध और गैर अल्लाह से सम्बन्ध इतना बढ़ जाता है कि व्यवहारिक रूप से वह दशा हो जाती है जो कुर्आन ने बयान की है।

अनुवाद– और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो औरों को अल्लाह के बराबर बना लेते हैं, उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से।

(सूरः अल्बक़र १६५)

अनुवाद– और जब केवल एक अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल कुढ़ने लगते हैं, और जब इसके सिवा दूसरों का जिक्र होता है तो वे खुश हो जाते हैं।

(सूरः अज़् जुमर ४५)

फिर इस अक़ीदे के अन्तर्गत गैर अल्लाह के नाम पर वह सारे काम किए जाते हैं जो अल्लाह के लिए खास हैं। जैसे बलि (जबह), मन्नत सजदा (माथा टेकना) दुआ आदि। गैर अल्लाह से ऐसी रूचि होती है कि धीरे–धीरे ज़िन्दगी का रिशता अल्लाह से टूट कर गैर अल्लाह से बंध जाता है। दिल की दिशा बदल जाती है। नबियों के आने का उद्देश्य समाप्त हो जाता है और इस्लाम पर जाहिलियत की जीत होती है। हर जमाने के दीन के नवीनीकरण करने वालों, सुधारकों तथा उलमा–ए–हक़ (सच्चे इस्लामी पंडित) ने वस्तु स्थिति के विरूद्ध जिहाद (संघर्ष) किया। उलमा–ए–हक़ नबियों के वारिस और उत्तराधिकारी हैं, उनकी विरासत और उत्तराधिकार उसी वक्त सही और मुकम्मल होगा जब उनकी जिन्दगी का मकसद और उनके

www.abulhasanalinadwi.org

प्रयासों का केन्द्र वही होगा जो **नबियों** का था। वह जिन्दगी का मक़सद और वह प्रयासों का केन्द्र **क्या है?** दो शब्दों में "धर्म स्थापना" (इकामते दीन) या एक शब्द में "तौहीद"। **अर्थात इन्सानों को** इख़्तियार से और अमल से इस तरह से अल्लाह का "बन्दा" बनाना जैसा कि वह स्वाभाविक व मजबूर होकर उसके बन्दे हैं। अल्लाह की शरीयत को इन्सानों के जिस्मों और उनकी सम्बन्धित ज़मीन में लागू करने की कोशिश करना जैसा कि वह ज़मीन व आसमान पर क़ायम है।

अनुवाद– *और हमने आपसे पहले कोई ऐसा रसूल नहीं भेजा कि जिसके पास हमने वह्इ (ईश्वाणी) न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई मअबूद (पूज्य) नहीं, तो मेरी ही इबादत करो।*

(सूरः अल् अंबिया २५)

अनुवाद– *वही तो है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और दीने हक़ (सत्य धर्म) देकर भेजा, ताकि उसे और सारे दीनों पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को (कितना ही) नागवारा हो।*

(सूरः अस्सफ़्फ़ ६)

इस दीने हक (सत्य धर्म) के लिए हर ज़माने में कुछ अवरोध व अड़चने होती हैं, जिनमें से अधिकतर को इन चार किस्मों में बांटा जा सकता है:–

शिर्क :अर्थात गैर अल्लाह को इलाह (पूज्य) बनाना। अल्लाह के सिवा किसी हस्ती को अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान और नफा देने वाला बना लेना, उसको ब्रह्माण्ड की व्यवस्था में साझीदार मान लेना।

एहतियाज व इल्तेजा (आवश्यकता होना और शरण ढूंढना) और भय

www.abulhasanalinadwi.org

व आशा इस अकीदे के बिल्कुल स्वभाविक व प्राकृतिक परिणाम है और दुआ व मदद चाहना और झुकना (जो इबादत की हक़ीकत है) इसके आवश्यक मज़ाहिर (प्रकट होने वाली चीजें) हैं।

शिर्क (बहुदेववाद) एक स्थाई धर्म तथा पूर्ण शासन है, उसका और धर्म का किसी एक शरीर या दिल व दिमाग़ पर एक साथ स्थापित होना असंभव है।

अनुवाद– *और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो औरों को अल्लाह के बराबर (समवत पूज्य) बनाते हैं, जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए वैसी मुहब्बत उनसे रखते हैं।*

(सूरः अल् बक़रह् १६५)

अनुवाद– *मुश्रिकों ने कहा अल्लाह की कसम! हम तो खुली हुई गुमराही में थे, जब हम तुम्हें (पूज्यों को) सारे संसार के रब के बराबर कर रहे थे।*

(सूरः अश्शुअरा ९७–९८)

इसलिए जब तक दिल से शिर्क की तमाम जड़ें और उसकी बारीक से बारीक नस भी उखाड़ न दी जाये, उस वक़्त तक अल्लाह के दीन का पौधा लग नहीं सकता, क्योंकि यह पौधा किसी ऐसी जगह पर जड़ नहीं पकड़ता जिसकी मिट्टी में किसी और पेड़ की जड़ हो या बीज हो, इसकी शाखायें उसी वक़्त आसमान से बातें करती हैं और यह पेड़ तभी फलता–फूलता है जब इसकी जड़ गहरी और मज़बूत हो।

अनुवाद– *क्या आपने नहीं देखा! कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पवित्र बात (कलिम–ए–तय्यिबः) की दी? (उसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक*

www.abulhasanalinadwi.org

अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ मजबूत और शाखाएं आसमान में फैली हुई हैं अपने रब के आदेश से वह अपना फल देता है।

(सूरः इब्राहीम २४--२५)

यह पेड़ किसी दूसरे पेड़ की छाया में बढ़ नहीं सकता। यह जहाँ रहेगा अकेला रहेगा, इसकी प्राकृतिक बढ़त के लिए असीम वातावरण चाहिए।

अनुवाद– *याद रखो अल्लाह ही के लिए* ***शुद्ध*** *आज्ञापालन है।*

(सूरः अज़्ज़ुमर ३)

अतः **जो लोग अल्लाह के दीन** की फितरत (प्रवृत्ति) और उसके मिजाज़ से वाकिफ **होते हैं**, वह इसको किसी जगह लागू करने के लिए जमीन को पूरे तौर पर साफ और हमवार करते हैं। वह शिर्क और **जाहिलियत** की जड़ें और रगें चुन–चुन कर निकालते हैं और उनका **एक–एक बीज चुन**--चुन कर फेंकते हैं और मिट्टी को बिल्कुल उलट–**पलट देते हैं**। चाहे उसको इस काम में कितनी ही देर लगे। और कैसा ही कष्ट उठाना पड़े और चाहे उनको इस कोशिश और उम्र भर के इस प्रयास का फल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की तरह कुछ एक लोगों से अधिक न हो, और चाहे कुछ पैगम्बरों की तरह उनकी सारी जिन्दगी की पूँजी मात्र एक व्यक्ति हो। लेकिन वह इस नतीजे पर संतुष्ट और इस कामयाबी पर खुश होते हैं और नतीजा पाने में जल्दी नहीं करते।

कुफ़्र:अर्थात अल्लाह के दीन और उसकी शरीयत (क़ानून) का इन्कार। इसमें वह लोग भी शामिल हैं जो अल्लाह व रसूल के आदेशों में से किसी आदेश को भी यह जान लेने के बाद कि यह अल्लाह और उसके रसूल क़ा हुक्म है, नहीं मानते या जबान से तो इन्कार नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

करते मगर जान–बूझ कर इसकी अवहेलना करते हैं, ऐसे लोग चाहे दूसरे आदेशों का पालन करते हों और पाबन्द हो, इस दायरे से (अर्थात कुफ़्र के दायरे से) ख़ारिज नहीं। अल्लाह तआला यहूदियों को सम्बोधित करके कहता है:–

अनुवाद– *तो क्या तुम किताब (ईशग्रन्थ) के एक भाग को तो मानते हो और दूसरे भाग को नहीं मानते। बस तुममें से जो ऐसा करे उसकी सज़ा क्या है सिवा दुनियावी ज़िन्दगी में रूसवाई के? और क़यामत के दिन यह सख़्त अजाब में डाले जाएंगे और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं, जो कुछ तुम करते हो।* (सूरः अल बकरह् ८५)

लेकिन जो व्यक्ति झूठे ख़ुदाओं की ख़ुदावन्दी का साफ़–साफ़ इन्कार करने के लिए तैयार नहीं होते या दूसरे शब्दों में उन्होंने उस किब्लः की ओर तो मुँह कर लिया है। लेकिन दूसरे क़िब्लों (ध्यान केन्द्रों) की तरफ उनसे पीठ भी नहीं की जाती है। यह वास्तव में इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए। अल्लाह पर ईमान के लिए कुफ़्र बित्तागूत, (तागूत हर वह हस्ती है जिसकी ख़ुदा के मुकाबले में पूरी ताबेदारी की जाये) ज़रूरी है, और अल्लाह ने इसको ईमान से पहले बयान किया है।

अनुवाद– *तो जो सरकश (शैतान) को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाये तो उसने मजबूत सहारा थाम लिया।*

(सूरः अल बकरह् २५६)

इसलिए पवित्र कुर्आन ने ऐसे व्यक्तियों के ईमान का दावा स्वीकार नहीं किया जो तागूत (आसुर) के प्रतिनिधियों तथा उनके केन्द्रों की ओर ध्यान लगाते हैं। और उनको अपना पंच और मध्यस्थ बनाते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो करते हैं कि वे उस पर ईमान रखते हैं जो सत्य तुम पर उतारा गया और जो तुमसे पहले उतारा गया। और चाहते हैं कि अपना मामला तागूत (सरकश) के पास ले जाकर फैसला कराएं जबकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे उसका इन्कार करें? लेकिन शैतान तो उन्हें भटका कर बहुत दूर डाल देना चाहता है।*

(सूरः अं निसा ६०)

इस कुफ़्र की गन्ध उन लोगों से भी नहीं निकली जो मुसलमान की रेखा में आजाने के बाद "जाहिलियत" से मुँह न मोड़ सके और जाहिलियत के अकीदों व रसमों से बेख़बर न हो सके। उनके दिलों से अभी तक उन चीजों की नफ़रत और घृणा नहीं गयी और उन कार्यो की तहकीर (घटिया समझना) नहीं निकली। जिनको जाहिलियत बुरा समझती है, उनसे नफ़रत और तहकीर करती है, चाहे वह अल्लाह के दीन में पसन्दीदः हों और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महबूब सुन्नत हो।

इसी तरह उनके दिलों से अभी तक उन आचरण, रस्मों तथा आदतों के प्रति मोह और इज़्ज़त दूर नहीं हुई, जो जाहिलियत में नज़दीक प्रिय और आदरणीय हैं, चाहे वह अल्लाह की शरीअत में मकरूह बुरे व तुच्छ हों। इसी तरह जिनके दिलों से अभी तक जाहिली समर्थन और पक्षपात (असबीयत) दूर नहीं हुई और उनका अमल अरब की जाहिलियत के उस लोकप्रिय सिद्धान्त पर है कि अपने भाई की हर हाल में मदद करो, चाहे ज़ालिम हो, चाहे मज़लूम। इससे ज्यादा नाजुक बात यह है कि इस्लाम को स्वीकार कर लेने के बाद भी वह मुसलमान कहलाने के बावजूद भी अच्छे और बुरे का

www.abulhasanalinadwi.org

पैमाना (कसौटी) वही है जो जाहिलियत में होता है, चीजों की क़ीमत वही हो जो जाहिलियत ने कायम कर दी है, जीवन के उन्हीं मूल्यों और उन्हीं स्तरों का सम्मान हो जो जाहिलियत (अज्ञानता) तस्लीम करती है। इस्लाम के सही और शुद्ध होने की दलील यह है कि कुफ्र और उसके पूरे वातावरण, उससे जुड़ी तमाम बातों, उसकी तमाम विशेषताओं से नफरत पैदा हो जाये। और उसकी ओर वापसी और इससे ग्रसित हो जाने की कल्पना से आदमी को तकलीफ हो। और ईमान की पुख्तगी (परिपक्वता) यह है कि वह कुफ्र के किसी छोटे से छोटे काम के मुकाबले में मौत को ज़्यादा पसन्द करता है। बुखारी शरीफ की हदीस है।

अनुवाद– *तीन चीजें जिस आदमी में होंगी उसको ईमान की मिठास महसूस होगी। एक यह कि अल्लाह और उसका रसूल सर्वाधिक प्रिय हो, दूसरे यह कि किसी दूसरे इन्सान से सिर्फ अल्लाह ही के लिए मुहब्बत हो, तीसरे यह कि कुफ्र में जाना उसके लिए उतना ही नागवार हो जितना आग में डाला जाना।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

सहाबः (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी) का यही हाल था, उनको अपने पूर्व काल की जाहिलियत से बड़ी नफरत पैदा हो गयी थी। उनके नज़दीक जाहिलियत से बढ़कर कोई तौहीन (अपमान) न थी। वह जब अपने इस्लाम लाने से पहले के जमाने की चर्चा करते तो बड़ी शर्मिन्दगी और नफरत के साथ। उस ज़माने की तमाम बातों, कर्म व कुफ्र और अल्लाह की नाफरमानी से उनको न सिर्फ धार्मिक व बौद्धिक बल्कि स्वाभाविक रूप से घृणा थी। अल्लाह उनका यह गुण इस तरह बयान करता है।

अनुवाद– *लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे दिल में ईमान को महबूब (प्रिय)*

www.abulhasanalinadwi.org

बनाया और उसको तुम्हारे दिलों में सुन्दर बना दिया और कुफ्र और फिस्क (उल्लंघन और अवज्ञा) और नाफरमानी को तुम्हारे लिए नफरत की चीज़ बना दिया।

(सूरः अल हुजुरात ७)

जाहिलियत की एक निशानी यह है कि जब अल्लाह व रसूल का हुक्म सुनाया जाये तो पुराने रस्म व रिवाज और बाप दादा के तौर तरीके का नाम लिया जाये और अल्लाह व रसूल के मुकाबले में बीते ज़माने और पुराने दस्तूर का प्रमाण पेश किया जाये।

अनुवाद– *और जब उनसे कहा जाता है! जो अल्लाह ने उतारा है उस पर चलो तो जवाब में कहते हैं नहीं हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप –दादा को पाया है भला अगर उनके बाप–दादा कुछ समझ न रखते रहे हों और न सच्चे मार्ग पर चलते रहे हों। (तब भी यह उन्हीं की पैरवी करेंगे)*

(सूरः अल बक़रह् १७०)

अनुवाद– *नहीं बल्कि वे कहते हैं– हमने अपने बाप–दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उन्हीं के पग चिन्हों पर चल रहे हैं।*

(सूरः अज़्ज़ुखरूफ २२)

अल्लाह के हुक्म और वह्इ (ईशवाणी) के मुकाबले में अपने बाप–दादा के अमल और अपनी इच्छा व मर्ज़ी की पैरवी करना ख़ास जाहिली दीन है।

अनुवाद– *उन्होंने कहा! ऐ शुएब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप–दादा पूजते आ रहे हैं या हमें अपने माल में मनमानी छोड़ दें।* (सूरः हूद ८७)

www.abulhasanalinadwi.org

अतः ऐसे लोग जाहिलियत (अज्ञानता) से निकलकर इस्लाम में पूरे तौर पर दाख़िल नहीं हुए, जिन्होंने अल्लाह के मुकाबले में हर चीज नहीं छोड़ा और जिन्होंने अपने को पूर्णतः अल्लाह के हवाले नहीं किया। यह पूर्ण समर्पण और तस्लीम वह इस्लाम है जिसका हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ और उन्होंने इसको स्वीकारे किया।

अनुवाद– *जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम से उनके रब ने कहा कि अपने रब के हवाले हो जाओ और उसकी पूरी ताबेदारी करो तो उन्होंने कहा कि मैंने अपने आपको सारे जहान के पालनहार के हवाले कर दिया।*

(सूरः अल बक़रह् १३१)

और जिसका तमाम मुसलमानों को हुक्म है।

अनुवाद– *तुम्हारा पूज्य हाकिम एक ही अकेला है तो उसी के हवाले हो जाओ तथा मुकम्मल फरमांबरदार बन जाओ।*

(सूरः अल हज्ज ३४)

अगर यह नहीं है तो मानो अल्लाह से जंग है। इसलिए इस पूर्ण इस्लाम को एक जगह अल्लाह ने "सिल्म" कहा, है अर्थात यह अल्लाह से सुलह है।

अनुवाद– *ऐ ईमान वालो! इस्लाम और सुलह में पूरे–पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के कदमों पर न चलो! वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।*

(सूरः अल बक़रह २०८)

याद रहे कि जाहिलियत का मतलब सिर्फ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्व की अरब की ज़िन्दगी ही नहीं है, बल्कि हर वह गैर इस्लामी ज़िन्दगी और व्यवस्था है, जिसका स्रोत 'वहइ'

www.abulhasanalinadwi.org

(ईशवाणी) व नबूवत और अल्लाह की किताब व नबियों की सुन्नत (आचरण) न हो, और जो इस्लामी जीवन के आदेशों व मसलों के अनुरूप न हो, चाहे वह अरब की जाहिलियत हो, या ईरान की मुजदक्कियत (एक तरह की व्यक्ति पूजा) या हिन्दुस्तान का ब्राह्मणवाद या मिस्र की फिरऔनियत या तुर्को की तूरानियत या इस युग की पश्चिमी सभ्यता या मुसलमान कौम की शरीअत के विरूद्ध रसमें व आदतें, अखलाक व संस्कार और विचारधारा और भावनायें, चाहे वह पुरानी हों या आधुनिक, भूतकाल हो या वर्तमान काल।

कुफ्र एक नकारात्मक चीज़ ही नहीं है बल्कि एक सकारात्मक चीज़ भी है, वह सिर्फ अल्लाह के दीन के इनकार का नाम नहीं है, बल्कि वह एक मज़हबी और नैतिक व्यवस्था और स्थायी दीन है, जिसमें अपने कर्तव्य भी हैं, और बुरी व अवैध बातें भी, इसलिए यह दोनों एक जगह एकत्र नहीं हो सकते और इन्सान एक समय में इन दोनों का वफादार नहीं हो सकता।

नबी कुफ्र को जड़ से समाप्त करते हैं। वह कुफ्र के साथ किसी रवादारी और समझौता के रवादार नहीं होते। कुफ्र को पहचान लेने में भी उनको बड़ी महारत होती है। और इस बारे में वह बड़ी दूर दृष्टि वाले और सूक्ष्मदर्शी होते हैं। अल्लाह तआला उनको इसके बारे में पूरी हिकमत (युक्ति) प्रदान करता है। उनकी ईश्वर की दी हुई सूझ–बूझ पर भरोसा किये बिना चारा नहीं। दीन की रक्षा इसके बिना सम्भव नहीं कि कुफ्र और इस्लाम की जो सीमाएं उन्होंने निर्धारित की उनकी हिफाजत की जाय। इसमें थोड़ी भी असावधानी दीन को इतना बिगाड़ कर रख देती है कि जितना यहूदी, ईसाई और हिन्दुस्तान के मज़हब बिगड़ चुके हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

नबियों के उत्तराधिकारी भी इस बारे में उन्हीं की सूझ–बूझ और साहस रखते है। वह कुफ़्र या कुफ़्र की मुहब्बत या उसकी मदद, जिस रूप में सामने आये, वह उसको तुरन्त भाँप लेते हैं। उनको इसमें कोई शंका नहीं होती और उसका विरोध करने में उनके लिए कोई मसलहत रूकावट नहीं बनती।

उनके ज़माने के संकीर्ण दृष्टि वाले या हर बात में सुलह के पक्षधर जो दैर व हरम, काबा व बुतखाना में फर्क करना ही कुफ़्र समझते हैं, उनका मजाक़ उड़ाते हैं और निन्दा के साथ उनको ज्ञानी, और ख़ुदाई फौजदार की उपाधि देते हैं। लेकिन वह अपना कार्य पूरे धैर्य के साथ करते रहते हैं। और निःसंदेह पैगम्बरों के दीन की हिफाज़त हर ज़माने में इन्हीं लोगों ने की है।

और आज इस्लाम यहूदियत, ईसाइयत और हिन्दूमत से अलग रूप में जो दिखता है वह इन्हीं के साहस और धैर्य व विनय का नतीजा है।

हिन्दुस्तान में तौहीद की दावत

हिन्दुस्तान में जहाँ विभिन्न ऐतिहासिक कारणों से इस्लाम की बुनियाद हमेशा से कमज़ोर है, और जो दुनिया के कुछ बड़े मुशरिकाना (बहुदेववादी) धर्मों व सम्प्रदायों का केन्द्र और वतन है, इस्लाम का चश्म–ए–साफी (साफ स्वच्छ स्रोत) ज्यादा गन्दा होने लगा था। और आशंका थी कि यह चश्म–ए–हैवान इस अन्धियारी में इस तरह गुम हो जाये कि किसी महापंडित को भी इसका निशान न मिले।

हज़रत मुजद्दिदे अलिफ़े सानी (रहमतुल्लाहि अलैहि)

मुजद्दिदे अलिफ़े सानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने जब अपनी सुधार

www.abulhasanalinadwi.org

यात्रा शुरू की तो नबियों के नबूवत के कार्य के ठीक क्रम के अनुसार पहला कदम यहीं से उठाया। जहाँगीर के सामने सज्दा करने से इन्कार आपके सुधार के इतिहास का उज्जवल अध्याय है। अपने पत्रों में सुस्पष्ट तथा जचे तुले शब्दों में तौहीद की व्याख्या की। अल्लाह की वहदानियत (एक मात्रता) उसके तनहा इबादत के लाएक़ (पूज्य) होने की दलीलें बयान कीं जो आपके ज्ञान के विश्वस्तता का नमूना है। शिर्क के रसमों व मज़ाहिर (रूपों) का खण्डन, जाहिली रसमों, मुश्रिकों वाले कार्यों और काफ़िरों की नक़ल से अपने अनुयाइयों को सख़्ती से मना किया, क्योंकि सुधार का काम इसके बिना शुरू ही नहीं हो सकता, पूरा होना तो दूर रहा।

ख़ास कर तरीक़त व तसव्वुफ (आत्मशुद्धि, अध्यात्म) का खुलासा व उद्देश्य इसके अलावा कुछ नहीं कि अल्लाह से ऐसा लगाव पैदा हो जिसमें कभी कोई न हो, ऐसी अल्लाह की याद जिसमें कभी भूल न हो और ऐसी एकाग्रता जिसमें कोई असमंजस न हो। यह उस समय तक सम्भव नहीं जब तक ब्रह्माण्ड की तमाम चीजों के बारे में लाभ व हानि, शक्ति व अधिकार का विचार समाप्त न हो जाये और मन–मस्तिष्क उनकी मुहब्बत व महानता और उनसे भय व लालसा रखने से पूर्ण रूप से स्वतंत्र न हो जाये, और वह किसी अर्थ में भी उद्देश्य व लक्ष्य और न उनसे प्रेम हो न भय न अति आदरणीय, न प्रिय और संक्षेप में इलाह व माबूद (पूज्य) न रहें। यही इख़लास (निष्ठा) का मक़ाम है जिसकी तरफ नबी और उनके उत्तराधिकारी मार्गदर्शन करते हैं। मुजद्दिद साहब ने इसी की ओर बुलाया तथा विभिन्न स्थानों पर इसको स्पष्ट **किया है** –

मान्यवर! सलूक (ईश्वर की खोज) की मंजिलों को तय करने

www.abulhasanalinadwi.org

और भावना के स्थलों को पार कर लेने के बाद मालूम हुआ कि इस सैर व सलूक का मक़सद मक़ामे (लक्ष्य) इख़लास (निष्ठा) को हासिल करना है, जो जुड़ा है सांसारिक पूज्यों की समाप्ति (फ़ना) के साथ।

एक दूसरे पत्र में लिखते हैंः—

अन्तःकरण की बीमारियों की जड़ और मन के रोगों की असल दिल के अल्लाह के अलावा के साथ व्यस्तता है। जब तक इस गिरफ़्त (लिप्तता) से पूरी आज़ादी हाथ न आये शुद्धता कठिन है। क्योंकि अल्लाह की सेवा में किसी की शिर्कत (सहभागिता) की गुँजाइंश नहीं, कुर्आन की आयत है "ख़ालिस इबादत (शुद्ध उपासना) व इताअत (आज्ञापालन) अल्लाह ही का हक़ है।" यह तो हो ही नहीं सकता कि शरीक को आगे कर दें। बड़ी बेहयाई है कि गैर अल्लाह की मुहब्बत को इस हद तक ग़ालिब बना लिया जाये कि अल्लाह तआला की मुहब्बत इस में समाप्त या दब जाये।

तौहीद के कुछ बुद्धिमता के उदाहरण-

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि (मृत्यु ५६१ हिज्री) ने जिनकी बुजुर्गी पर मुसलमानों के सारे मत सहमत हैं, एक बड़ी बुद्धिमता की मिसाल से तौहीद की व्याख्या की है और जो लोग मुसीबत को दूर करने या किसी तरह का नफा हासिल करने के लिए गैर अल्लाह का सहारा लेते हैं, उनकी मूर्खता का नक्शा खींच दिया है। फरमाते हैंः— "तमाम मखलूक (सृष्टि) को एक ऐसा आदमी समझो जिसके हाथ, एक अत्यन्त विशाल व महान साम्राज्य के बादशाह ने, जिसका शासन महान है, उसका वर्चस्व और ताक़त कल्पना से परे है बाँध दिये हों, फिर उस बादशाह ने उस आदमी के गले में फंदा

www.abulhasanalinadwi.org

ड़ाल दिया है, और उसके पैर भी बाँध दिये, इसके बाद चीड़ के एक ऐसे पेड़ से लटकाया है जो ऐसी नदी के किनारे है जिसकी गहराई बेपनाह और जिसका बहाव तेज़ है, इसके बाद बादशाह खुद एक ऐसी कुर्सी पर बैठ गया जो बड़ी शानदार और बुलन्द है, इतनी कि उस तक पहुँचने का इरादा करना और पहुँचना कठिन है, उस बादशाह ने अपने पहलू में तीरों, भालों, बर्छो और अनेक प्रकार के हथियार तथा औजारों का इतना बड़ा जखीरा रख लिया है कि उसकी मात्रा का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। अब जो व्यक्ति इस दृश्य को देखे क्या उसके लिए मुनासिब है कि बादशाह की तरफ देखने के बजाय, इस सूली पर लटके हुए व्यक्ति से डरे और उससे उम्मीद लगाये, जो व्यक्ति ऐसा करेगा क्या वह हर समझदार के नज़दीक बेअकल, मजनूँ और इन्सान के बजाय जानवर कहलाने का पात्र नहीं"?

1405 / 14804

हज़रत शैख शर्फुद्दीन यह्या मुनेरी रहमतुल्लाहि अलैहि अल्लाह की अज़मत (महानता) और बड़ाई, अपनी मखलूक (सृष्टि) पर पूर्ण अधिकार और स्वतंत्र हस्तक्षेप का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि वह जो चाहता है करता है, उसको किसी की परवाह नहीं होती, अपनी मर्जी पर चलता है, किसी की मजाल नहीं कि कुछ पूछ सके, ज़बाने कटी हुई, मुँह बन्द। एक पत्र में अपने एक शिष्य को लिखते हैं, और इस हकीकत को इस तरह बयान करते हैं कि दिल काँप उठता और बदन के रोंगटे खड़े हो जाते है। फरमाते हैं:—

"वह जो चाहता है करता है, उसे किसी की बर्बादी व मोक्ष की कोई परवाह नहीं होती। **देखो! एक इन्सान** किस तरह प्यास से तड़प कर दम तोड़ता **है और कहता है मेरे** नीचे नहरें जारी हैं और मैं प्यास

से मर रहा हूँ, पानी की एक बूँद नसीब नहीं होती, फरिशता (देवदूत) गैब से उसको आवाज़ देता है और कहता है, मैं हजारों सिद्दीक़ीन (सत्यवादियों) को अन्धेरे व डरावने जंगल और शुष्क व चटियल रेगिस्तान में लाता हूँ और सबको कत्ल कर देता हूँ ताकि उनकी आँखों और गालों को कौओं और गिद्धों का भोजन बनाऊं, जब कोई बोलना चाहता है तो उसकी जबान पर मुहर लगा देता हूँ और कहता हूँ वह जो चाहता है करे, कोई कुछ पूछ नहीं सकता, यह पक्षी भी मेरे हैं और सिद्दीकीन भी मेरे हैं, बीच में बोलने वाला (फुजूली) कौन है? जो हमारे अमल की आलोचना करता है।

हज़रत मीर सैयद अली हमदानी (रहमतुल्लाहि अलैहि)

हज़रत मीर सैयद अली हमदानी को खतलान (एक स्थान) से कौन सी चीज़ खींचकर कश्मीर लाई? क्या इस सुन्दर घाटी की सुन्दरता खींचकर लाई? क्या हिमालय पर्वत की ऊँची–ऊँची चोटियों के सिलसिले और घाटियों की हरियाली खींच कर लाई? वह जिस क्षेत्र से आये थे वह भी सुन्दर इलाक़ा था। फलों और फूलों से भरा हुआ था। फिर क्या चीज़ है जो उनको यहाँ लाई।

मैं आपको बताऊँ कि वह कौन सी चीज़ थी जो उनको खींच कर लाई। वह एक ग़ैरत थी, जिसको अपने महबूब से ज़्यादा मुहब्बत होती है, उसकी ज़ात व सिफात (गुण) की ज़्यादा मारफत (पहचान) होती है और उसके सद्‌गुणों व कमालात पर ज़्यादा यक़ीन होता है, उसमें उतनी ही अपने महबूब के प्रति ग़ैरत होती है। एक नावाक़िफ़ आदमी लाल व जवाहर को ईंट व पत्थर की तरह डाल देता है। क़ीमती हीरे को अज्ञानता से तोड़ देता है। लेकिन जौहरी को देखिये कि वह किस तरह एक–एक फूल पर कुरबान होता है और उसको

www.abulhasanalinadwi.org

पसन्द नहीं करता कि उस पर कोई शिकन आये। बुलबुल से पूछिये फूल के सम्बन्ध में, परवानों से पूछिये शमा के बारे में, आशिक से पूछिये माशूक के बारे में और ख़ुदा के पैगम्बरों और उसके आरिफ़ों (पहचानने वालों) से पूछिये तौहीद के बारे में।

तौहीद का स्रोत

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तौहीद के सबसे बड़े अमीन और उसके सबसे बड़े प्रचारक, उसकी तरफ बुलाने वाले और उसकी हक़ीक़त पहचानने वाले थे। सदियों से उन्हीं की लाई हुई दौलत मौजूद है जो अब तक बट रही है और क़यामत तक बटती रहेगी। हमारे और आपके दामन में भी ख़ुदा के फजल (कृपा) से वह दौलत मौजूद है। हमारे नबी सबसे ज़्यादा अल्लाह को जानने वाले, सबसे ज़्यादा अल्लाह को चाहने वाले, सबसे ज़्यादा अल्लाह पर कुर्बान होने वाले थे। इसलिए आपकी ग़ैरत (लज्जा) का भी यह हाल था कि एक व्यक्ति ने सिर्फ यह कह दिया कि "जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा वह हिदायत पायेगा, और जो इन दोनों की नाफरमानी करेगा वह गुमराह होगा।"

आप इसको सहन नहीं कर सके, और आपसे सुना न गया। फरमाया, तुम्हें बात करने का सलीका नहीं, अलग–अलग यूँ कहो कि जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा वह गुमराह होगा। ऐसे ही एक व्यक्ति ने कहा, अगर अल्लाह और आप चाहें तो यह काम हो जायेगा। आपने फरमाया, तुमने मुझे ख़ुदा का हमसर (समकक्ष) बना दिया? नहीं, जो तनहा ख़ुदा चाहे।

यह है ग़ैरत का आलम। एक सच्चे आशिक को जितनी मुहब्बत

www.abulhasanalinadwi.org

होती है, उतनी ग़ैरत होती है। ग़ैरत अधीन है मुहब्बत के, ग़ैरत मातहत है ज्ञान के, ग़ैरत अधीन है निष्ठा के।

सैयद अली हमदानी की ग़ैरत

हज़रत सैयद मीर अली हमदानी आरिफ बिल्लाह (अल्लाह को पहचानने वाले) थे, वली–ए–कामिल थे, आशिके ख़ुदा (ईशप्रेमी) थे, आशिके रसूल थे। ख़ुदा शनास, दीन के मिजाज आशना (धार्मिक भाव से अवगत) और नब्बाज (सही समझ रखने वाले) थे। इसलिए आपको दीन के बारे में ग़ैरत भी ऐसी थी कि लाखों, करोड़ों आदमियों में ऐसी नहीं होती। उन्होंने सुना कि कश्मीर एक लम्बी चौड़ी घाटी है, वहाँ के लोग ख़ुदा से नाआशना (अनभिज्ञ) हैं, वहाँ ख़ुदा के सिवा, सृष्टा के अलावा, एक ख़ुदा के सिवा बहुत सी चीज़ें पूजी जा रही हैं। बुतों की परस्तिश होती है। कुछ चीजें जमीन के अन्दर हैं, कुछ जमीन के ऊपर हैं, कुछ खड़ी है, कुछ लेटी हैं, लोगों ने जिसमें जरा सी ताक़त देखी, नफा व नुकसान पहुँचाने की योग्यता देखी, कोई विशिष्ट बात देखी, थोड़ी सुन्दरता देखी, उसी के सामने झुक गये। मेरा विचार है कि अगर वह यहाँ न आते तो शायद ख़ुदा और उसका रसूल उनका दामन न पकड़ता, इसलिये कि वह जहाँ रहते थे वहाँ से लेकर इस कश्मीर घाटी तक बड़े–बड़े दीन के सेन्टर्स, रूहानी केन्द्र थे। हिमालय के दामन में पूरा हिन्दुस्तान पड़ा हुआ था जहाँ हजारों आलिम, सैकड़ों मदरसे और ख़ानक़ाहें थीं। लेकिन साहसी यह नहीं देखते कि अकेले हमारा यह कर्तव्य बनता है कि नहीं? वह इसे अपनी ड्यूटी समझ लेते हैं। हज़ार कोई उनको रोके, उनके रास्ते पर हजार रूकावटें खड़ी कर दे, पहाड़ उनके रास्ते में आ जाएं, नदी–नाले पड़ें, वह किसी की भी परवाह नहीं करते। मानो एक आसमानी आवाज़ थी

www.abulhasanalinadwi.org

जो उन्होंने सुनी कि सैयद! कश्मीर जाओ और वहाँ तौहीद फैलाओ।

सैयद अली हमदानी ने साफ महसूस किया कि मैं अल्लाह के सामने उत्तरदायी हूँ। मैदाने इश्र सामने है और अर्शे खुदावन्दी (अल्लाह का सिंहासन) मौजूद है, उसके साये में नबी व अवलिया खड़े हैं और वहाँ से सवाल होता है कि सैयद अली! तुमको मालूम था कि मेरी पैदा की हुई जमीन के एक क्षेत्र में गैर अल्लाह की पूजा व परस्तिश हो रही है, गैर अल्लाह के सामने हाथ फैलाये जा रहे हैं, तुमने इसको कैसे सहन किया? मीर सैयद अली हमदानी के सामने तो यह दृश्य था। अगर सारी दुनिया के बड़े-बड़े विद्वान एकत्र होकर समझाते कि हज़रत! आपसे सवाल नहीं होगा। लेकिन वह कहते कि नहीं। मुझ ही से यह सवाल होगा। मेरी गैरत और लज्जा यह सहन नहीं कर सकती कि अल्लाह की विशाल धरती के एक छोटे से हिस्से में भी गैर अल्लाह की परस्तिश हो गैर अल्लाह से भय और आशा का मामला हो, इन्सानों को (चाहे ज़िन्दा हों, चाहे मुर्दा) किस्मत को बनाने और बिगाड़ने वाला समझा जाता हो, औलाद और रोजी देने वाला समझा जाता हो, उनको हर जगह हाज़िर व नाज़िर (सर्वव्यापी) जानते हों। अगर मुझे मालूम हो गया कि उत्तरी ध्रुव या दक्षिणी ध्रुव में या हिमालय की उच्च हरी चोटी पर एक जीव भी ऐसा है, जो ग़ैर अल्लाह की परस्तिश कर रहा है, ग़ैर अल्लाह को नफ़ा नुक़सान पहुँचाने वाला समझता है, ग़ैर अल्लाह को सृष्टि पर शासन करने वाला समझता है तो मेरा फर्ज़ है कि मैं वहाँ पहुँचूं और अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाऊँ।

याद रखो! अल्लाह फरमाता है:-

अनुवाद– *"उसी का काम है, पैदा करना, और उसी का काम है हुक्म चलाना"*

(सूरः अल अअ़राफ़ ५४)

www.abulhasanalinadwi.org

ऐसा नहीं कि पैदा तो उसने किया मगर हुक्म किसी और का चल रहा है। उसने अपनी सल्तनत किसी के हवाले कर रखी है, कि हमने पैदा कर दिया, तुम हुकूमत करो ख़ालिक़ (रचयिता) भी वही है; हाकिम और प्रशासक भी वही है, ऐसा नहीं कि जैसे ताजमहल को शाहजहाँ ने बनवाया, तुर्किस्तान आदि से कारीगर बुलाये, कारीगरों ने अपनी कारीगरी दिखाई, वह आये और चले गये, अब ताजमहल पर जिसका दिल चाहे राज करे, हुकूमत करे, तख़्त बिछाए, तोड़े बनाए।

यह दुनिया ताजमहल नहीं है, यह दुनिया कुतुब मीनार नहीं है। यह दुनिया कोई पुरातत्व विभाग का अजायबघर नहीं है। यह ख़ुदा की पैदा की हुई दुनिया है,, सारी व्यवस्था उसकी मुट्ठी में है, यह छोटा सा कारख़ाना भी यहाँ का उसने दूसरे के हवाले नहीं किया है। उसकी बादशाही आसमान व जमीन सब पर हावी है। उसका सिंहासन पूरी सृष्टि पर हावी है। यह पृथ्वी का ग्रह क्या है, सारे ग्रहों, सारी आकाशगंगा, सारा सौर मण्डल, यह सब उसी के क़ब्ज़े में हैं।

इस ग़ैरत का एक नमूना यह है कि जब हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का अन्तिम समय करीब आया तो आपने खानदान के सब लोगों, बेटों, पोतों, नवासों को एकत्र किया और कहा प्रियजनो! मेरी पीठ कब्र से नहीं लगेगी, जब तक मुझे तुम यह संतुष्टि न दिलादोगे कि मेरे दुनिया से चले जाने के बाद किसकी इबादत और परिस्तिश करोगे? उन लोगों ने सीना ठोक कर कहा कि आप आशंका न करें, हम आप ही के माबूदे बरहक़ (सच्चे उपास्य) और आपके बाप–दादा इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ अलैहिमुस्सलाम के माबूद वहदहू लाशरीक की इबादत करेंगे।

अनुवाद– *तो उन्होंने कहा! हम आपके मअ़बूद (उपास्य) और आपके*

पूर्वज (बाप–दादा) यांनी इब्राहीम, इस्माइंल और इस्हाक़ के मअ़बूद की इबादत करेंगे– जो अकेला मअ़बूद (उपास्य) है और हम तो उसी के फ़रमाँबरदार हैं:

(सूरः अल बक़रह १३३)

अब्बा जी! दादा जी! नाना जी! आप क्यों हमसे यह सवाल कर रहे है? आपको किस बात का खटका है? आप संतोष रखिये, आपने बचपन से जिस तरह हमें दीक्षा दी है और तौहीद का पावन बीज दिल की नर्म ज़मीन में बोया है, उससे हम हट नहीं सकते। हम आपके मअ़बूदे बरहक़, एक अल्लाह ही की परस्तिश करेंगे जिसकी इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ परस्तिश करते थे। उस वक्त उनको इतमीनान हुआ और दुनिया से खुश खुश विदा हुए। यह औलिया (अल्लाह के मित्र) महान इस्लाम प्रचारक, बुज़ुर्ग हज़रात उन्हीं पैग़म्बरों के वारिस और उत्तराधिकारी हैं। याकूब अलैहिस्सलाम को खटका इसी बात का था कि मेरी औलाद शिर्क के जंजाल में उसी तरह न फंस जाए, जैसे हज़ारों ख़ानदान और सैकड़ों क़ौमें (अपने संस्थापकों और धर्म प्रचारकों के बाद) फंस गयीं। यह पैग़ाम है ख़ुदा का जो हर पैग़म्बर लेकर आया। ख़ुदा के वलियों ने दुनिया को सुनाया और सुधारकों ने हर युग के लोगों तक पहुँचाया। फ़तेह (कामयाबी) की शर्त यही है, इज़्ज़त व ताक़त की शर्त यही है, उसी के सामने हाथ फैलाएं, उसी से दिल लगाएं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:–

अनुवाद– *जिन लोगों ने बछड़े को अपना मअ़बूद (उपास्य) बनाया, वे अपने रब की ओर से ग़ज़ब (कोप) और दुनियावी ज़िन्दगी में ज़िल्लत में फंस कर रहेंगे। और झूठ गढ़ने वालों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं।*

(सूरः अल अअ़राफ़ १५२)

www.abulhasanalinadwi.org

मुमकिन है, लोग यह कहते हैं कि हमने गोसाला परस्ती कब की? इससे हज़ार बार तौबा, ऐसी मूर्खता हम कब कर सकते थे? तो अल्लाह ने अपनी इस आख़िरी किताब में इसका जवाब दिया, और यह कहकर कि हम इसी तरह बुहतान (मिथ्यारोप) बाँधने वालों को सज़ा देते हैं। तमाम मुशरिकाना अक़ायद व आमाल (विश्वास और कर्म) को शामिल फ़रमा लिया कि मुश्रिक की बुनियाद हमेशा मनगढ़न्त किस्से कहानियों और निराधार बातों पर होती है और वह दोनों जुड़वा बच्चे की तरह होते हैं इसी लिए अल्लाह तआला शिर्क का ज़िक्र करते हुए फरमाता हैः—

अनुवाद— *तो मूर्तियों की गन्दगी से बचो, और झूठी बात से बचो।*

(सूरः अल हज ३०)

शिर्क को अल्लाह ने साफ़—साफ़ 'महान बुहतान' की संज्ञा दी हैः—

अनुवाद— *और जिसने अल्लाह का साझीदार बनाया तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ गढ़ लिया।* (सूरः अं—निसा ४८)

तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा मुसलमानों की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान

तौहीद मुसलमानों की संस्कृति की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान और अलामत है जो अक़ायद (विश्वासों) से लेकर आमाल (कर्मों) तक और इबादत से लेकर तक़रीबात (कार्यक्रमों) तक हर जगह दिखेगा। उनकी मस्जिदों के मीनार पाँच बार एलान करते हैं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत और बन्दगी का पात्र नहीं। उनके मकान व ड्राइंगरूम को भी इस्लामी उसूल के अनुसार बुतपरस्ती और शिर्क की

www.abulhasanalinadwi.org

पहचानों से सुरक्षित होना चाहिए। तस्वीर, स्टैच्यू, मूर्तियाँ उनके लिए अवैध हैं। यहाँ तक कि बच्चों के खिलौनों में भी इसका लेहाज़ ज़रूरी है। धार्मिक समारोह हों या देश के महोत्सव राजनीतिक नेताओं का जन्म दिन हो या धार्मिक पेशवाओं का जन्म दिन या ध्वजारोहण समारोह, तस्वीरों और प्रति मूर्तियों के सामने झुकना और उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़े होना या उनको हार फूल पहनाना मुसलमान के लिए मना और उसकी एकेश्वरवादी तहज़ीब के ख़िलाफ़ है। जहाँ कहीं मुसलमान अपनी इस्लामी तहजीब पर अमल करेंगे वह इन कृत्यों से अलग होंगे। नामों में, आयोजनों में, कसम में, बुजुर्गों के आदर एहतराम व नियाज मन्दी में, हिजाज़ी तौहीद की सीमाओं से आगे निकलना और किसी कौम का अनुसरण करना, इस्लाम से फिर जाने के प्रयाय है।

तौहीद ताक़त का स्रोत

जिसका दिल तौहीद से अवगत होगा वह अल्लाह तआला ही की ज़ात पर भरोसा करेगा। मुसीबत में उसी को पुकारेगा और खुशहाली में उसी को शुक्र भेजेगा और हाजत व आजिज़ी (विवशता), बन्दगी का तअल्लुक अल्लाह के अलावा और किसी से न रखेगा। इसमें अगर कमी होती है तो अल्लाह की नुसरत (मदद) में कमी होती है। कुर्आन मजीद में साफ़–साफ़ इशारे हैं कि जिस उम्मत की तौहीद में फर्क आया उसकी ताकत में अन्तर आ गया। ताक़त का सबसे बड़ा स्रोत तौहीद का अकीदा है।

अल्लाह तआला कहता है:–

अनुवाद– *हम बहुत जल्द काफ़िरों (इन्कारियों) के दिलों में रोअ़ब*

www.abulhasanalinadwi.org

बिठा देंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया जिसके लिए उसने कोई दलील (प्रमाण) नहीं उतारी और उनका ठिकाना जहन्नम (नर्क) है, और वह कैसी बुरी जगह है जालिमों (अत्याचारियों) के लिए। (सूरः आले इम्रान १५१)

अनुवाद– *बेशक जिन्होंने बछड़े को उपास्य बनाया उन्हें उनके पालनहार की ओर से गुस्सा और संसारिक जीवन में ज़िल्लत पहुंचेगी और हम मिथ्यारोप करने वालों का यही दण्ड देते हैं।*

(सूरः अल् अअ्राफ़ १५२)

शिर्क कमजोरी का कारण है, हमेशा रहा है और हमेशा रहेगा, अल्लाह ने चीज़ों में ख़ासियतें (गुण) पैदा की हैं। ज़हर में एक ख़ासियत है, तिरयाक़ (विषहर) में एक ख़ासियत है, पानी में एक ख़ासियत है, आग में एक ख़ासियत है, इसी तरह शिर्क में कमज़ोरी की एक ख़ासियत है, और तौहीद में ताक़त और निर्भयता और रोब में न आने की ख़ासियत है। इसीलिये सबसे बड़ी ज़रूरत इसकी है कि अक़ायद को सही किया जाये, ख़ुदा के साथ इब्राहीमी मुहम्मदी, कुर्आनी तालीम के अनुसार तौहीद का रिश्ता मज़बूत हो। इस रिश्ते को फिर मज़बूती की ज़रूरत है। इसलिए कि शैतान हमेशा ताक में रहता है। वह हमेशा छापा मारता रहता है और चोर वहीं जाता हैं जहाँ दौलत होती है। जिसके पास तौहीद और ईमान की दौलत है उसके लिए ख़तरा है, उनके लिए ख़तरा भी नहीं बनता जिनके पास यह नेमत है ही नहीं। इन्सान पर अक़ीद–ए–तौहीद का जो अक़्ली असर पड़ता है उसकी बदौलत वह सारे आलम को एक केन्द्र और एक व्यवस्था के अधीन समझने लगता है, और उसके बिखरे हुये अंशों में एक खुला हुआ सम्पर्क और वहदत नज़र आने लगती है। और इस

www.abulhasanalinadwi.org

तरह इन्सान ज़िन्दगी की पूरी व्याख्या कर सकता है और उसके चिन्तन व कर्म की इमारत हिकमत व सूझ–बूझ, अच्छाई व खौफ़े खुदा (तक़वा) पर सहयोग, इन्सानियत की भलाई, समाज के संगठन, सभ्यता के मार्गदर्शन, दीन व दुनिया के जोड़ और सहयोगी व संघर्षरत तब्क़ों की एकता व भाईचारा की बुनियादों पर क़ायम हो सकती है।

शुद्ध तौहीद का अकीदा

इस कुदरत के कारख़ाने का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वह तमाम खूबियों, तारीफ़ों की बातों और कमालात (सम्पूर्णताओं) का हामिल, सर्वगुण सम्पन्न और हर तरह के ऐब (अवगुण) तथा कमज़ोरियों से पाक है। वह सर्वव्याप्त है और सर्वज्ञान सम्पन्न है। यह पूरी सृष्टि उसी के इरादे से है, सुनने वाला है, देखने वाला है, न कोई उसकी तरह है, न उसका कोई मुकाबला और बराबरी वाला है, वह बेमिसाल है, वह किसी मदद का मोहताज नहीं, सृष्टि के चलाने और उसकी व्यवस्था करने में उसका कोई शरीक, साथी और मददगार नहीं, इबादत का सिर्फ वही पात्र है। वही है जो मरीज़ को शिफ़ा देता है मख़लूक को रोज़ी देता, और उनकी तकलीफ़ों को दूर करता है। ख़ुदा के अलावा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाना, उनके सामने गिड़गिड़ाना, उनको सज्दा करना, उनसे दुआ और ऐसी चीज़ों में मदद माँगना जो इन्सानी ताक़त से बाहर और सिर्फ ख़ुदा की कुदरत से तअल्लुक़ रखती है। (जैसे औलाद देना, किस्मत अच्छी बुरी करना, हर जगह मदद के लिए पहुँच जाना, हर दूरी की बात सुन लेना, दिल की बातों और छुपी हुई चीजों को जान लेना) इस्लाम की शब्दावली में शिर्क है, और वह सबसे बड़ा गुनाह है

www.abulhasanalinadwi.org

जो बगैर तौबा के माफ नहीं होता।

कुर्आन मजीद में कहा गया है "उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज का इरादा करता है तो उससे कह देता है कि "हो जा" तो वह हो जाती है।"

अल्लाह न किसी के शरीर में उतरता है, न रूप धारता है, न उसका कोई अवतार होता है, वह किसी जगह या दिशा में सीमित नहीं है, जो वह चाहता है वही होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता, वह ग़नी (धनी) व बेनियाज़ (जिसको किसी वस्तु की आवश्यकता न हो) है, वह किसी का मोहताज नहीं, उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता, उससे पूछा नहीं जा सकता कि वह क्या कर रहा है, हिक्मत उसी की सिफ़त है, उसका हर काम जतनपूर्ण है और अच्छाई लिए हुए है, उसके अलावा कोई (वास्तविक) हाकिम नहीं। भाग्य अच्छा हो या बुरा अल्लाह की तरफ से है, वह पेश आने वाली चीजों को पेश आने से पहले जानता और उनको वजूद (अस्तित्व) प्रदान करता है।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय दो

रिसालत (दूतता)

मानव-प्रवृत्ति के प्रश्न

मनुष्य की प्रवृत्ति के कुछ प्रश्न हैं जो रह–रह कर उसकी गहराइयों से उठते हैं। इन प्रश्नों को न हीलों बहानों से टाला जा सकता है न उनके उत्तर की अनदेखी की जा सकती है। इस संसार को कौन चला रहा है? उसके क्या–क्या गुण हैं? उसका हमसे और हमारा उससे क्या सम्बन्ध है? उसको क्या पसन्द है और क्या नापसन्द? और यह कि इस जीवन का अन्त और इस लोक की अन्तिम सीमा क्या है? यह वह प्रश्न हैं जो बिल्कुल स्वाभाविक हैं और मनुष्य की शुद्ध प्रवृत्ति को पूरा हक़ है कि वह इन्सान से पूछे कि वह जिस दुनिया में बसता है उसको किसने बनाया और कौन उसको चला रहा है? फिर जब तक उसको चलाने वाले की सिफ़ात मालूम न हों उसको उससे कोई हार्दिक लगाव और मानसिक सम्बन्ध नहीं पैदा हो सकता। दुनिया का भी यही हाल है कि जब तक किसी व्यक्ति का जीवन चरित्र, आचरण और गुणों की हमें जानकारी नहीं होती, हमें मात्र उसके नाम से सम्बन्ध पैदा नही होता। फिर यदि हम ब्रह्माण्ड के सृजक के बारे में इसके अलावा कि वह मौजूद है, कुछ न जानते हों, उसकी रुबूबियत (पालनहार होना) व रहमत (कृपा), प्रेम व लगाव और उसके शौर्य के अन्य गुण, उसका हमसे निकटतम सम्बन्ध और हमारी उससे अति आवश्यकता और उसके सहारे हमारे ठहराव व अस्तित्व का हाल मालूम न हो तो उससे हमें वह सम्बन्ध पैदा नहीं हो सकता जो ऐसी ज़ात से पैदा होना चाहिए।

www.abulhasanalinadwi.org

इसी प्रकार वह अपने इस सवाल में बिल्कुल हक़ पर है कि इस धरती पर बसने वालों से दुनिया के बादशाह की क्या अपेक्षाएं हैं? ताकि उसकी सलतनत का निज़ाम व क़ानून मालूम करें।

इसी प्रकार यह भी स्वाभाविक बात है कि वह इस ज़िन्दगी के बारे में जानना चाहे कि इसका अंत व परिणाम क्या है, लौट के जाना कहाँ है और इसके बाद क्या होगा? क्योंकि यह सवाल उसके भविष्य और वर्तमान दोनों से सम्बन्धित है। जिस व्यक्ति को यह मालूम हो जाए कि इस ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी भी है, जिसमें पहली ज़िन्दगी का हिसाब किताब होगा, और इस पहली ज़िन्दगी के कर्मो का फल मिलेगा, उस व्यक्ति की कार्य पद्धति मौजूदा ज़िन्दगी में उस व्यक्ति से बिल्कुल भिन्न होगी, जो मौजूदा ज़िन्दगी के अलावा किसी दूसरी ज़िन्दगी की कोई कल्पना नहीं करता। इसलिए यह सवाल उसकी इस ज़िन्दगी में बड़ा महत्व रखता है, और जवाब में देर करने की गुंजाइश नहीं क्योंकि इस समस्या के समाधान के बिना इस जीवन की सही संरचना नहीं हो सकती।

हमारे जीवन के यह बुनियादी प्रश्न हैं जिन पर मोक्ष व निजात का दारोमदार और हमारे भाग्य का फैसला निर्भर है जिसके जवाब में जरा सी गलती हमारी बर्बादी का कारण बन सकती है। यह जीवन हमको सिर्फ एक बार के लिए मिला है और यह हमारी सबसे कीमती पूँजी है वह सिर्फ क़यास, अनुमान व तजर्बः में नहीं गुज़ारी जा सकती।

इन प्रश्नों के अलावा कुछ प्रश्न और उनका सम्बन्ध भी हमारे दैनिक जीवन से है। हमारा अपने आस–पास की दुनिया से और उसका हमसे क्या नाता है? इस संघर्षपूर्ण जीवन में हमारी हैसियत

www.abulhasanalinadwi.org

और हमारे वजूद का मक़सद क्या है? हम मातहत हैं या स्वतंत्र या गैर ज़िम्मेदार? यदि ज़िम्मेदार हैं तो किसके सामने और हमारी ज़िम्मेदारी किस हद तक है? हमारी क्षमताएं और योग्यताएं हमारी अपनी हैं या किसी दूसरे की सम्पत्ति? इनकी प्रयोग विधि क्या है? इस जीवन का लक्ष्य क्या है? और ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो हमारे लिए स्वाभाविक रूप से उत्तर चाहते हैं।

प्रश्नों के उत्तर की दो राहें

इन प्रश्नों के उत्तर की दो ही राहें हो सकती हैं

(१) एक यह कि इनका उत्तर हम अपने ज्ञान व समझ और सोच विचार के आधार पर स्वयं दें। लेकिन इस विधि से हम ज़्यादा से ज़्यादा जिस नतीजे पर पहुँच सकते हैं वह यह होगा कि इस संसार का कोई बनाने वाला जरूर है, रहा यह सवाल कि उसकी सिफ़ात क्या हैं? तो इसका उत्तर हम अपने स्वयं की सोच के आधार पर नहीं दे सकते। हमारा दिमाग अपनी चरम सीमा को उड़ान में भी क़यास व अनुमान की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सकता, और यह मामला ऐसा है कि इसमें अनुमान की गुंजाइश नहीं इसलिए कि ख़ालिक व मख़लूक (रचयिता व रचित) के बीच कोई अनुरूपता (मुशाबेहत) ही नहीं कि ख़ल्क़ (सृष्टि) की दिखाई पड़ने वाली तथा महसूस की जाने वाली चीज़ों को देख कर ख़ालिक़ (रचयिता) की सिफतों (गुणों) की कल्पना की जा सके।

इसके बाद दूसरा कठिन प्रश्न इसको निश्चित करना है कि वह हमसे क्या चाहता है? क्या उसको पसन्द है और क्या नापसन्द हम देखते हैं कि मित्रों और प्रियजनों और ख़ास साथियों की खुशी

www.abulhasanalinadwi.org

पसन्दीदगी और रजामन्दी के बारे में भी कतई राय क़ायम़ करना मुश्किल है और इसमें कभी कभी बड़ी–बड़ी गलतियाँ हो जाती हैं, फिर एक अगोचर ज़ात और अगम हस्ती की पसन्द और नापसन्द का सुनिश्चित करना मात्र कयास व अनुमान से किस प्रकार सम्भव है?

फिर इस ज्ञान, सूझ–बूझ तथा चिन्तन–मनन का नतीजा एक नहीं है, नतीजों में घोर विरोधाभाष है। किसी ने अपने सोच-विचार के आधार पर यह नतीजा निकाला है कि यह कारख़ाना बिना किसी बनाने वाले के बन गया और बिना किसी चलाने वाले के चल रहा है और खुद ही ख़त्म हो जायेगा। किसी के नज़दीक अगर इसका कोई निर्माता है तो उसका अब बनाई हुई चीजों से कोई तआल्लुक नहीं रहा। किसी के नज़दीक इसका बनाने वाला ही इसका वास्तविक मालिक था मगर अब वह दूसरों के हक़ में अपने मालिकाना अधिकारों को छोड़ चुका है और उसके साम्राज्य में अब वह बादशाही कर रहे हैं। किसी ने इस दुनिया की हर चीज़ को जिससे उसको देखने में नफा–नुकसान पहुँचता है या पहुँच सकता है अपना इलाह (पूज्य) और हर शक्तिमान को अपना हाकिम बना लिया, और उसके बाहरी इन्द्रियों, दिन प्रतिदिन के अनुभव और बुद्धि व समझ ने उसको इसी नतीजे पर पहुँचाया, किसी के नज़दीक मनुष्य एक विकसित हैवान है जो कुछ ज़रूरतें और कुछ इच्छायें रखता है, वह आज़ाद व स्वतंत्र है और उससे कोई पूछ नहीं सकता, उसकी शक्ति असीमित और उसका अधिकार असीम है, उसके कानून का न कोई इलाही (ईश्वरीय) स्रोत है न उसके ज्ञान का कोई ग़ैबी सरचश्मा (स्रोत)। दुनिया एक रणक्षेत्र है जिसमें असल क़ानून ताक़त है। अख़लाक़ (आचरण) अच्छा, बुरा, सुन्दर व भद्दा यह सब अर्थहीन शब्द हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

खुदा की हस्ती को तस्लीम करने के बाद उसके. सिफात (गुणों) के बारे में मीमांसकों व फलसफियों ने जो अनुमान व अन्दाजे लगाये हैं और बाल की खाल निकाली है और जिस तरह उन्होंने खुदा से उन अवगुणों को जोड़ा है जिनको वे स्वयं से जोड़ना भी पसन्द नहीं करते, वह मन व बुद्धि के अजूबों में से हैं।

बाद के प्रश्न अर्थात इस संसार में इन्सान का असली स्थान व प्रतिष्ठा क्या है? उसकी हैसियत व मक़सद का निर्धारण दूसरी मख़लूक़ात और अपने सजातीय से उसकी कार्य विधि का निर्धारण, मातहती और स्वतंत्रता जिम्मेदारी और आज़ादी की बहस, अपनी शक्तियों और ज़ाहिरी मिलकियतों के बारे में उसका ख्याल? यह सब वास्तव में पहले प्रश्नों की परिशिष्टि हैं। और उनके सही हल से यह स्वतः हल हो जाते हैं। जिन लोगों ने प्रारम्भिक प्रश्नों को हल करने में गलती की और अनुमान से काम लिया, उन प्रश्नों के उत्तर में गलती करना और उनके अन्दाजों में विरोधाभाष और संदेह उत्पन्न होना अनिवार्य है।

(२) जवाब की दूसरी राह यह है कि हम इस बारे में किसी दूसरी जमाअत (समूह) पर भरोसा करें। लेकिन सवाल यह है कि वह जमाअत (समूह) कौन सी है? अगर वह मीमांसकों की टोली है तो पूछा जा सकता है कि इन समस्याओं में उनको हमारे मुक़ाबले में कौन सी विशेषता हासिल है और इन मेटाफिजिकल समस्याओं के हल के उनके पास ज्ञान के कौन से साधन हैं? वह मानते हैं कि इन मसले में न हवास (ज्ञानेन्द्रियाँ) काम करते हैं? न बुद्धि का कुछ दख्ल है उनको इस ज्ञान की शुरूआती बातें भी हासिल नहीं हैं, फिर उनको इस बारे में हमारी रहनुमाई करने का क्या हक है और हम उन पर

www.abulhasanalinadwi.org

किस तरह भरोसा कर सकते हैं? उनसे यह कहना ठीक ही होगा।

अनुवाद– *हाँ, तुम लोग वही तो हो, जो उस विषय में तो बहस कर चुके हो, जिसका तुम्हें कुछ तो ज्ञान था, तो अब ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान ही नहीं? और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।*

(सूरः आले इम्रान ६६)

अब केवल यही एक रास्ता बाक़ी रह जाता है कि इन समस्याओं में हम कुछ ऐसे इन्सानों पर भरोसा करें जिनका ज्ञान इस बारे में अनुमान वाला न हो बल्कि निश्चित और निर्णायक हो, पक्का हो जिन्होंने इन ज्ञान व वास्तविकताओं को अपने निरीक्षण से इस प्रकार प्राप्त किया हो जिस प्रकार हमको इस संसार की दिखने व सुनने वाली चीजों का ज्ञान होता है, जिनके लिए यह चीजें ऐसे ही बिना दलील व तर्क के स्पष्ट हों जैसे हमारे लिये दुनिया की बहुत सी चीजें होती हैं, जिनमें किसी दलील की ज़रूरत नहीं, स्वतः सिद्ध जिनको संयुक्त इन्सानी ज्ञानेन्द्रियों के अलावा एक ज्ञानेन्द्रीय अधिक मिली हो जिसे हम "हास्स–ए–ग़ैबी" (वह ज्ञानेन्द्रीय जिससे ओट की चीज़ों का ज्ञान होता है) कह सकते हैं, जो ख़ुदा से प्रत्यक्ष रूप से उसकी मर्जीयात पसंद और आदेश मालूम कर सकें और दूसरे इन्सानों तक पहुँचा सके। यह सिर्फ पैगम्बरों की जमाअत (समूह) है। उनकी बेदाग सीरत (जीवन–चरित्र), उनकी बेलाग सदाकत (सच्चाई), उनकी असामान्य व असाधारण (फौकुलबशरी) युक्ति व न्याय उनकी चमत्कारी शिक्षा इस बात का यक़ीन पैदा कर देती है कि यह एक अलग किस्म के लोग हैं और इनका ज्ञान व सूचना के उस स्रोत से ज़रूर जोड़ है जो इन्सानों की पहुँच से बाहर है। इनके चमत्कारिक गुण व ज्ञान की

www.abulhasanalinadwi.org

दलील इसके सिवा नहीं हो सकती कि उनका नबी होना और उनके पास वह्इ (ईशवाणी) का आना तस्लीम किया जाए।

पूर्व वर्णित जमाअतें (हाकिम व फिलास्फर) अपने ज्ञान के यक़ीनी और कतई होने का खुद भी दावा नहीं करतीं, न उनको इस बारे में किसी निरीक्षण का दावा है, उनके कथन व दावों का हासिल बस यह है कि ऐसा होगा, या ऐसा होना चाहिए, या हमारे क़ायम किये हुए मुकदमात (जो यक़ीनी और कतई सबूत वाले नहीं हैं) हमको इस नतीजे पर पहुँचाते हैं, और वह इसके सिवा कह भी क्या सकते हैं?

लेकिन पैग़म्बरों को अपने इल्म व ज्ञान के निश्चित व निर्णायक होने का दावा है। वह सिर्फ यही नहीं कहते कि ख़ुदा है या उसकी यह सिफात (गुण) है, बल्कि वह इसके साथ यह भी कहते हैं कि हम उसकी बातें सुनते हैं। हम उससे बात करते हैं। हमारे पास उसके पैग़ाम (संदेश) पहुँचते हैं। हमारे पास उसके फरिश्ते आते हैं। उनके लिए कोई चीज़ उतनी निश्चित नहीं जितनी ख़ुदा की सिफात, उसके आदेश व संदेश और अपनी नबूव्वत व रिसालत। इसलिए उनको एक पल के लिए भी इन सच्चाइयों में कोई संदेह नहीं और किसी के कहने–सुनने से उन पर कोई असर नहीं होता।

पैग़म्बर नबूव्वत व रिसालत (दूतता) के उस बुलन्द मक़ाम पर खड़ा होता है, जहाँ से वह आलमे ग़ैब (ग़ैबी दुनिया) को भी इसी तरह देखता है जिस तरह सामने की चीजों को आलमे आख़िरत (परलोक) भी उसके सामने इसी तरह होता है जिस तरह यह दुनिया। जो लोग इस बुलन्दी पर नहीं हैं और ज़मीन की पस्ती से उसके मुशाहदात (दिखने वाली चीज़े) के बारे में उनसे बहस व हुज्जत करते हैं, वह लोगों से इसके सिवा क्या कह सकता है कि मेरी आँखें वह देखती हैं

www.abulhasanalinadwi.org

जो तुम नहीं देख सकते, मेरे कानों में वह आवाजें आती हैं जो तुम नहीं सुन सकते, तुम्हारे लिये इसके सिवा चारा नहीं कि मैं अपनी आँखों से देखकर और कानों से सुनकर जो कुछ कहूँ तुम उसका यक़ीन करो, तुम्हारी निजात इसी में है।[१]

एक पैग़म्बर से जब उसकी क़ौम ने ख़ुदा और उसकी सिफात (गुण) के बारे में हुज्जत की तो उसने बड़ी सादगी के साथ अपना और बेदलील बहस करने वालों का फर्क बयान कियाः—

अनुवाद— *और उनकी कौम उनसे झगड़ने लगी, तो उन्होंने कहा "क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ते हो? जबकि उसने मेरी रहनुमाई (मार्गदर्शन) की है।*

(सूरः अल् अन्आम ८०)

एक दूसरे पैगम्बर ने यही फर्क़ इस तरह बयान कियाः—

(१) सफा पर्वत के सम्बन्ध में हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी महत्वपूर्ण बिन्दु को जो पैग़म्बर और गैर पैग़म्बर के अन्तर को स्पष्ट करता है, अत्यन्त दिलनशीं अन्दाज में बयान फ़रमाया। आपने पहाड़ पर खड़े होकर क़ौम से पूछा कि तुमने आज तक मुझे कैसा पाया? सबने एकमत होकर कहा कि हमने आपको हमेशा सच्चा और अमानतदार पाया। फिर आपने कहा कि अच्छा अगर मैं तुमसे यह कहूँ कि इस पहाड़ी के पीछे एक लश्कर पड़ा हुआ है जो ग़फ़लत की हालत में तुम पर हमला करना चाहता है, तो तुम इसका विश्वास करोगे? लोगों ने कहा कि इसका विश्वास न करने की हमारे पास कोई वजह नहीं (इसलिए कि आपकी सत्यता का तजर्बः है और आप ऐसे ऊँचे स्थान पर खड़े हैं जहाँ से आपको वह नज़र आ सकता है जो हमको नज़र नहीं आ सकता) इस इकरार के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूँ कि अल्लाह का अज़ाब आने वाला है। इस यथार्थवादी पैगम्बराना तक़रीर में आपने पैगम्बर की इन्हीं दो विशेषताओं की विवेचना की एक उसकी आला सत्यता और पाकीजः सीरत, खुदा की दी हुई पैगम्बराना सूझ–बूझ और गैब का मुशाहदा, जो दूसरे इन्सानों को हासिल नहीं और जिसके बिना पर दूसरे इन्सानों के लिए इसकी तकलीद (किसी की पैरवी करना बिना दरयाफ़्त उसकी हकीकत) के सिवा चारा नहीं।

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम यह तो बताओ, कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक (रौशन) दलील पर हूँ, और उसने अपनी विशेष कृपा से मुझे सम्मानित किया हो, मगर वह तुम्हें दिखाई न दे रही हो, तो क्या यह जबर्दस्ती तुम्हारे सर चिपका दे और जबकि वह तुम्हें अप्रिय है। (सूरः हूद २०)

एक तीसरे पैग़म्बर के सम्बन्ध में यूँ कहा गयाः–

अनुवाद– और न वह अपनी इच्छा से बोलते हैं। यह तो बस एक वह्इ (ईशवाणी) है, जो वह्इ की जा रही है।

(सूरः अंनज्म ३–४)

इसी निरीक्षण के बारे में कहा गया हैः–

अनुवाद– न उसकी निगाह बहकी और न हद से आगे बढ़ी, उन्होंने अपने रब की बड़ी–बड़ी निशानियां देखीं। रसूल के दिल ने झूठ नही कहा जो कुछ कि देखा, क्या तुम इसमें झगड़ते हो उस सम्बन्ध में जो कुछ वह देखता है। **(सूरः अंनज्म १७–१८)**

इस यकीन और निरीक्षण के मुकाबले में जो कुछ है उसकी हक़ीक़त सुन लीजियेः–

अनुवाद– वे लोग तो केवल गुमान और मन की इच्छा के पीछे चल रहे हैं। हालाँकि उनके पास उनके 'रब' की ओर से हिदायत (सत्य मार्गदर्शन) आ चुकी है। (सूरः अंनज्म २३)

अनुवाद– और उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल अटकल के पीछे चल रहे हैं और कयास वास्तविकता का स्थान नहीं ले सकता।

(सूरः अंनज्म २८)

www.abulhasanalinadwi.org

ज़िन्दगी की पूरी तौजीह (विवेचना) वह्इ और पैग़म्बरों की बसीरत (बुद्धिमता) के बिना सम्भव नहीं।

उन मेटाफिजिकल प्रश्नों के अलावा जिनका जवाब दिये बिना हमारी जिन्दगी हैवानी ज़िन्दगी से विशिष्ट नहीं हो सकती, हम यूँ भी वह्इ की रौशनी और पैग़म्बरों के नूरे बसीरत (बुद्धिमता की ज्योति) के बिना अपने जीवन की पूरी विवेचना नहीं कर सकते और उस सर्वव्यापी तथा हकीमाना क़ानून की खोज नहीं कर सकते जो इस आलम में चल रहा है। अपनी स्वयं की सूझ–बूझ व समझ से हमको यह ज़िन्दगी एक वहदत (एकता) के तौर पर नज़र न आयेगी। बल्कि एक बिखरा हुआ क्रम मिलेगा। जिसके पन्ने बिखरे हुए हैं, इसकी कुछ सतरें और इसके कुछ शीर्षक हम ग़ौर करके पढ़ सकते हैं, मगर इस सृष्टि की किताब का विषय इस किताब का खुलासा इसके लेखक की मंशा, हमको पैग़म्बरों की बसीरत (बुद्धिमता) के बिना मालूम नहीं हो सकती।

मीमांसकों तथा भौतिक शास्त्र विशेषज्ञों ने ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में जो खोज की है, जीवन के बारे में जो यथार्थ खोज निकाले हैं, प्राकृतिक शक्तियों को अपने (ज्ञान) और प्रयोग से मनुष्य के लिए जिस तरह मातहत बनाया है और जिस तरह ब्रह्माण्ड के एक–एक संकाय और जीवन के एक–एक पहलू के लिए ज्ञान–विज्ञान की शाखें निकालीं और पुस्तकालय उपलब्ध कर दिये वह निःसंदेह इन्सानी ज्ञान का एक कारनामा है। लेकिन यह जो कुछ भी है यह जिन्दगी और कायनात के असल संग्रह के हिस्से हैं जिनमें आपस में कोई जोड़ नहीं, मेल नहीं, न उनका कोई केन्द्र मालूम है। यह सब किस व्यवस्था

www.abulhasanalinadwi.org

के अधीन है? किस मक़सद के मातहत है? किस महत्वपूर्ण लक्ष्य के सेवक हैं? इन प्रश्नों का कोई उत्तर वैज्ञानिकों के पास नहीं है। हालाँकि ज्ञान की हैसियत से हमारे लिये यही प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि आचरण व व्यवहार और जीवन के बुनियादी दृष्टिकोण की निर्भरता इन्हीं प्रश्नों पर है। वैज्ञानिकों ने अपनी यात्रा असली शुरूआती बिन्दु (खुदा की पहचान) से शुरू नहीं किया इसलिए वह हमेशा आफाक (क्षितिज) में गुम रहेंगे और जीवन की गुत्थी को कभी सुलझा न सकेंगे।

लेकिन ठीक इसके विपरीत जब हम वह्इ (ईशवाणी) की रौशनी और पैग़म्बर की बसीरत (बुद्धिमता) से इस संसार पर नज़र डालते हैं तो वह एक एकाई नज़र आता है और एक आला एकीकृत व्यवस्था मालूम होता है जिसके हिस्सों में पारस्परिक पूरा सम्पर्क व सम्बन्ध है, सब एक केन्द्र के अधीन हैं। इनकी हर हरकत और कार्य एक मक़सद के अन्तर्गत है, इनमें न आपसी टकराव है, न स्वार्थ। दुनिया एक सुगठित संतुलित मशीन है जिसका हर पुर्जा अपनी जगह पर उपयोगी है और दूसरे पुर्जे की सहायता कर रहा है, या एक बड़ा कारखाना है जिसमें सैकड़ों मशीनें चल रही हैं। हर मशीन को दूसरी मशीन से पूरा संबंध है और यह पूरी मशीनरी या पूरा कारखाना एक ज्ञानी व साधिकार ताक़त के हाथ में है जो इसको एक कानून और व्यवस्था के अर्न्तगत जो उसी का बनाया हुआ है, चला रहा है।

नबियों और अनुसंधानकर्ताओं के विचार व कार्य-विधि का मतभेद

अंबिया, दार्शनिकों और अनुसंधानकर्ताओं के दृष्टिकोण और कार्य–विधि का इस ब्रह्माण्ड के बारे में जो मतभेद है उसे हम एक

www.abulhasanalinadwi.org

उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। किसी शहर में विद्वानों और शोधकर्ताओं की एक टोली दाख़िल होती है। उनमें से एक गिरोह यह जाँच करता है कि इस नगर की वस्तु स्थिति क्या है? इसका अक्षांश–देशान्तर क्या है? उसके पास कितनी नदियां और कितने पहाड़ है और नदियां कहां से आती है और पहाड़ कहां तक जाते हैं, शहर का क्षेत्रफल क्या है वहाँ क्या चीजें पैदा होती है? यह भुगोल देत्ताओं का गिरोह है। दूसरा गिरोह यह खोज करता है कि यह शहर कब से आबाद है? शहर में कौन–कौन से पुरातत्व पाये जाते हैं? इनका इतिहास क्या है? यह इतिहासकारों और पुरातत्व वेत्ताओं की टोली है।

कुछ लोग इसकी ज़मीन की हैसियत मालूम करते हैं, खुदाइयाँ करते हैं और इसके खनिजों की खोज करते हैं। यह भूगर्भशास्त्र देत्ताओं का गिरोह है। कुछ लोग वहाँ एक वैधशाला कायम करते हैं जहाँ से ग्रहों का अध्ययन करते हैं। यह लोग अन्तरिक्ष–विज्ञानी हैं। कुछ लोग वहाँ प्रयोगशाला कायम कर दवाइयों की विशेषताओं का अनुभव कर नए नए शोध करते हैं। यह रसायन व वनस्पति शास्त्र विशेषज्ञ हैं। कुछ लोग शहर की भाषा के संबंध में शोध करते हैं उसके साहित्य का अध्ययन करते हैं, यह साहित्यकरों का ग्रोह है। कुछ लोग इन शुष्क विषयों से हटकर फूल–पत्तियों और प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेते हैं और उनके संबंध में प्रभावी व आकर्षक शैली में अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं, यह कवियों की टोली है। कुछ लोग वहाँ के रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार, रहन–सहन का अध्ययन करते हैं और उनकी आलोचना करते हैं और यह पता लगाते हैं कि यह रीति रिवाज उन में कहां से दाख़िल हुए। कुछ लोग शहर से सम्बन्धित सुधार के कुछ सुझाव पेश करते हैं। यह सब टोलियाँ अपने–अपने काम में व्यस्त हो जाती हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

अब एक व्यक्ति इस शहर में दाखिल होता है। वह पूरे शहर पर एक गहरी नज़र डालता है। वह देखता और सुनता सब कुछ है मगर व्यस्त किसी चीज़ में नहीं होता। उसके सामने महत्वपूर्ण प्रश्न यह होते हैं कि नगर का क्षेत्रफल क्या है? और वह दूसरी बातें जो पूर्व वर्णित टोलियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। उसके सामने पहला और महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं होता है कि यह शहर इस खूबसूरती व कारीगरी के साथ किसने बनाया और आबाद किया यहाँ किसकी हुकूमत है? नगर वासी किसकी प्रजा हैं? नगर की आबादी और सामान्य जीवन से नगर के मालिक और हाकिम का क्या और कैसा सम्बन्ध है? वह हुकूमत और प्रजा के बीच माध्यम बनता है, हुकूमत की तर्जुमानी करता है। अतएव वह तमाम ज्ञानमयी और टोलियाँ मिलकर भी इस व्यक्ति की जगह नहीं ले सकती, इसके बिना यह पूरा शहर एक अजायबघर और सैरगाह बनकर रह जाता है।

नबियों की सोच वैज्ञानिकों तथा मीमांसकों से बुनियादी रूप से जुदा होती है। उनका काम ब्रह्माण्ड की चीज़ों के भेद और यथार्थ को खोलना व खोज निकालना नहीं। उनका असल विषय व शीर्षक "मौजूद चीज़ों को वजूद में लाने वाली ज़ात (व्यक्तित्व) और सिफात (गुण) और उसके अहकाम (आदेश)" हैं। कायनात की किताब के पन्ने व पृष्ठ उनके सामने भी उसी तरह खुले और फैले हुए होते हैं जिस तरह दूसरे अहले नज़र के सामने मगर उनकी नज़र कहीं अटकती उलझती नहीं उनका इस किताब के लेखक से सीधे सम्बन्ध होता है। वह "आफाक" (क्षितिज) व "अनफुस" (आत्माओं) में उसकी खुली निशानियाँ देखते हैं और उसकी सत्ता को इस तरह देखते हैं कि इस ज़मीन व आसमान में उनको केवल उसी का हुक्म चलता नज़र आता है, और सिर्फ उसी का राज का जल्वा दिखाई देता है। उसका क़ानून

www.abulhasanalinadwi.org

उनको किसी कोने में भी टूटता नज़र नहीं आता। सारी ऊँचाइयाँ उसके सामने शर्मिन्दा दिखाई देती हैं, और तमाम ताक़तें उसके सामने असमर्थ नज़र आती हैं। हर मामले में उसका ग़ैबी (अदृश) हाथ काम करता नज़र आता है, जमीन व आसमान उसी के सहारे थमे हुए मालूम होते हैं। और उसका आसमानों व ज़मीन का क़य्यूम (कायम रखने वाला) होना उनके लिए अतिविश्वस्त बन जाता है।

यही ख़ुदा की वह बादशाही है जो उनको स्पष्ट दिखाई देती है जिसका ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान और सच्चाइयों की सच्चाई है जिससे मीमांसकों के ज्ञानों को कण की भी तुलना नहीं और जिसके मुक़ाबले में इनकी हक़ीक़त बचकाना मालूमात से अधिक नहीं।

अनुवाद– *और इसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और जमीन की सत्ता दिखाते रहे, ताकि उनको ख़ूब विश्वास हो जाय।*

(सूरः अल–अनआम ७)

अम्बिया की प्रवृत्ति उनकी बुद्धि और उनका दिल सलामत और जकावत (बुद्धिमत्ता) का बेहतरीन नमूना होता है। उनके निरोग प्रवृत्ति की खासियत है कि उनको होश संभालते ही इस संसार के ख़ालिक (सृजक) और व्यवस्थापक की सच्ची तलब पैदा होती है। उनकी बेचैन आत्मा को उस समय तक संतोष नहीं होता जब तक कि वह उसको पा नहीं लेते। उनकी निरोग प्रकृति पहले से उनमें इसका यक़ीन व विश्वास पैदा कर देती है कि इस संसार का रचियता और मालिक और उनका मुरब्बी (दीक्षा देने वाला) कोई ज़रूर है वह ढूँढते हैं, और इस तलाश व प्रयास में भी उससे जुदा नहीं होते और कहते हैंः–

अनुवाद– *"अगर मेरे रब ने मुझे राह न दिखाई तो मैं भटके हुए लोगों में हूँगा।*

(सूरः अल–अनआम ७७)

www.abulhasanalinadwi.org

उनकी सही सूझ–बूझ और अक्ले सलीम (शुद्ध बुद्धि) का **खुलासा** यह है कि उनको इस दुनिया की हर नमूद (अस्तित्व) **अस्थायी और** हर बहार फानी (मरण शोल) मालूम होती है। उनको तारे, चाँद, सूरज सब "आफिल" (गायब हो जाने वाले) अस्त हो जाने वाले, पतना–मुख और हारे हुए मालूम होते हैं। उनको किसी के बारे में अमर, अजर होने का धोखा नहीं होता। वह "आफिल" को अपनी मुहब्बत व इश्क के लायक नहीं समझते और इससे दिल लगाना पसन्द नहीं करते, और उनको देखकर बेइख़्तियार पुकार उठते हैं:–

अनुवाद– *मैं गायब हो जाने वालों को पसन्द नहीं करता।*

(सूरः अल–अन्आम ७६)

उनको हमेशा रहने वाली जात की तलाश होती है, फिर जब वह **उनको** मिल जाती है तो वह इस इल्म के बाद सब्र नहीं कर सकते **और** पुकार कर कह देते हैं:–

अनुवाद– *ऐ मेरी क़ौम के लोगो! जिन चीजों को तुम साझीदार बनाते हो मैं उनसे बरी हूँ, मैंने सबसे यक्सू (एकाग्र) होकर अपना चेहरा उसकी ओर कर लिया है। जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं।*

(सूरः अल–अन्आम ७८, ७६)

यही है शुद्ध मन जिसमें अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की गुँजाइश नहीं होती और जो गै़र अल्लाह की बड़ाई के तमाम निशानों से शुद्ध होता है। हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यही निरोग प्रकृति, बुद्धि और यही शुद्ध मन रखते थे।

अनुवाद– *इससे पहले हमने इब्राहीम को हिदायत और समझ दी थी,*

www.abulhasanalinadwi.org

और "हम" उनको खूब जानते थे।

(सूरः अल्–अंबिया ५१)

अनुवाद– *नूह ही के रास्ते पर चलने वालों में इब्राहीम भी थे (याद करो), जबकि वह अपने रब के समक्ष साफ़–सुथरा दिल लेकर आए फिर उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, तुम किस चीज़ की पूजा करते हो? क्या अल्लाह को छोड़कर मनगढ़न्त मअ़बूदों (उपास्यों) को चाह रहे हो? तो तुमने सारे संसार के रब के बारे में क्या गुमान (समझ) कर रखा है।* **(सूरः अस्साफ़फात ८३–८७)**

नबियों की विशिष्टता

नबियों अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का इस जीवन–दायी ज्ञान में कोई शरीक व सझी नहीं जिसके बिना इन्सानों को न सौभाग्य हासिल हो सकता है न निजात (मुक्ति) मिल सकती है। वह इल्म (ज्ञान) जिसकी रौशनी में इन्सान अपने पैदा करने वाले (ख़ालिक) और इस सृष्टि रचियता, उसके उच्च गुणों तथा उसके और बन्दों के आपसी सम्बन्ध को मालूम करता है, इसी के प्रकाश में मानव का आदि–अन्त ज्ञात होता है और इस दुनिया में उसका मुकाम (स्थान) और रब (ईश्वर) के मुकाबले में इन्सान की धारणा सुनिश्चित होती है। इसी ज्ञान द्वारा अल्लाह को प्रसन्न व अप्रसन्न करने वाले कर्मों का निर्धारण होता है। इसी के प्रकाश में यह मालूम किया जाता है कि कौन से कर्म आख़िरत में इन्सान को भाग्यशाली व सफल अथवा असफल बनाने वाले हैं। इसी के अलोक में समझा जा सकता है कि कौन से विश्वास, कर्म, आचरण व व्यहार का क्या पुण्य या पाप मिलेगा और इंसान द्वारा किए हुए कर्मों का क्या प्रभाव व परिणाम होगा। यही वह ज्ञान है जिसको "इल्मुन्नजात" (मोक्ष ज्ञान) कहा जा सकता है।

www.abulhasanalinadwi.org

नबी (संदेष्टा) उच्च योग्यताओं, कोमल अनुभूति तथा प्राकृतिक बुद्धिमत्ता के मालिक होने के बावजूद अपने ज़माने के प्रचलित व सामान्य विज्ञान में हस्तक्षेप नहीं करते, न इस विज्ञान व कला कौशल में अपने कमाल या अपनी महारत का दावा करते हैं, बल्कि वह तमाम चीज़ों से बिल्कुल अलग सिर्फ उस कर्तव्य का निर्वाह तथा उसी सेवा कार्य में लगे रहते हैं जिनके लिये उनका अभ्युदय (बेअसत) हुआ है और जिस काम के लिए वह भेजे गये थे और जिन पर इन्सान के अहोभाग्य का दारोमदार है, वह उसी ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाने की धुन में लगे रहते हैं।

नबियों की शिक्षा से विमुख होने का अंजाम

सभ्य तथा विकसित क़ौमें जो अपने–अपने ज़माने में सभ्यता व संस्कृति, बुद्धिमत्ता तथा ज्ञानमयी खोज में उच्चतम स्तर पर पहुँची हुई थीं वह भी नबियों की शिक्षा तथा उनके विशेष ज्ञान की उतनी ही ज़रूरतमन्द थीं जितना कि नदी में डूबने वाला सहारे के लिए किसी नाव का मुहताज होता है या जीवन से निराश रोगी को इक्सीर दवा की ज़रूरत होती है। इन विकसित क़ौमों के लोग इस विशेष तथा आवश्यक ज्ञान के ऐतबार से (दूसरे ज्ञान, या सभ्यता व कल्चर में जितने भी आगे रहे हों) दूध मुहें बच्चे, अज्ञान और ख़ाली हाथ व बेसरो सामन थे, और उन्होंने अपनी ज्ञानवी सफलताओं और सभ्यता के विकास के बावजूद जब नबियों के ज्ञान को रद्द कर दिया और उसका मज़ाक उड़ाया, तो उन्होंने अपने लिये और अपनी क़ौम व समाज के लिए विनाश मोल लिया। अनेक सभ्य और विकसित क़ौमें जो ज्ञान व साहित्य के बहुमूल्य ख़ज़ानों से मालामाल थीं, और बुद्धिमत्ता में जिनका उदाहरण दिया जाता था, इस इन्कार, अभिमान, स्वार्थ तथा

www.abulhasanalinadwi.org

अपने विज्ञान व कलाकौशल पर गर्व का शिकार हो चुकी हैं। **अपने** ज़माने के नबी की लाई हुई शिक्षाओं को उन्होंने हिकारत, **हीन व** नफरत की नज़र से देखा उससे **विमुख** हुए, उसकी कद्र **नहीं की**, उसको बेकार व बेक़ीमत (बेमूल्य) **समझा**; तो वह इसी घमंड **की नज़र** हो गयीं और वह मूर्खता जो उच्च बुद्धिमत्ता नज़र आती थी, **वह तंग** नज़री (संकीर्णता) जिसको उस समय दूर दृष्टि तथा यथार्थवाद **कहा** जाता था उनको ले डूबी और उन्होंने अपने किये का **मज़ा चख** लिया।

नबियों के ज्ञान और दूसरे ज्ञान व कला कौशल की तुलना।

नबियों के ज्ञान तथा दूसरे विद्वानों व वैज्ञानिकों के **ज्ञान व** कला–कौशल का स्पष्ट अन्तर एक कहानी से सुस्पष्ट हो **जाता है**, पाठकों ने इसे सुना तो ज़रूर होगा, लेकिन शायद इस **प्रकार इस** अन्तर पर सटीक न किया होगा और न इसके जतनपूर्ण **होने को** मालूम किया होगा और माफ़ कीजियेगा, यह कहानी आप **ही लोगों** अर्थात छात्रों से ही सम्बन्धित है" कथाकार सादिकुल बयान **कहता है** कि एक बार कुछ छात्र मनोरंजन के लिए एक नाव पर सवार **हुए।** तबीयत मौज पर थी, समय सुहाना था, मस्त हवा चल रही थी, **और** काम कुछ न था। ये युवा ख़ामोश कैसे बैठ सकते थे। जाहिल केवट मनोरंजन का अच्छा साधन और कटाक्ष व मज़ाक व तफरीह का सामान। अतएव एक तेज व तर्रार छात्र ने मल्लाह को **सम्बोधति** करके कहा:–

"चचा! आपने कौन से विषय पढ़े हैं?"

मल्लाह ने उत्तर दिया, "भैया! मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं।"

www.abulhasanalinadwi.org

छात्र ने ठण्डी सांस भरकर कहा, "अरे आपने साइंस नहीं पढ़ी।"

मल्लाह ने कहा, "मैंने तो इसका नाम भी नहीं सुना।"

दूसरा युवक बोला, "ज्योमिट्री और बीजगणित तो आप ज़रूर जानते होंगे, मल्लाह ने कहा, "भैया! यह नाम मेरे लिए बिल्कुल नये हैं।"

अब तीसरे युवक ने शोशा छोड़ा, 'मगर आपने इतिहास और भूगोल तो पढ़ा होगा।"

मल्लाह ने कहा, "सरकार! यह शहर के नाम हैं या आदमी के?" मल्लाह का यह जवाब सुनकर लड़के हँस पड़े, और कहकहा लगाया फिर लड़कों ने पूछा, "चचा मियाँ! आपकी उम्र क्या होगी?"

मल्लाह : "यही कोई चालीस साल।"

लड़के : "आपने अपनी आधी उम्र बर्बाद की, और क़ुछ पढ़ा लिखा नहीं।" मल्लाह बेचारा शर्मिन्दा होकर रह गया और चुप्पी साध ली।

कुदरत का तमाशा देखिये कि नाव नदी में थोड़ी ही दूर गयी थी कि तूफान आ गया, लहरें मुँह फैलाये हुए बढ़ रही थीं, और नाव हिचकोले ले रही थी कि अब डूबी तब डूबी। नदी में नवकावाहन का लड़कों का पहला अनुभव था। उनके होश उड़ गये, चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। अब जाहिल मल्लाह की बारी आई। उसने गम्भीरता पूर्वक मुँह बना कर पूछा "भैया! आपने कौन–कौन से विषय पढ़े हैं?"

लड़के उस भोले भाले जाहिल मल्लाह का मक़सद नहीं समझ सके। और कालेज या स्कूल में पढ़े हुए विषयों की लम्बी सूची गिनानी

www.abulhasanalinadwi.org

शुरू कर दी और जब भारी भरकम और रौब में लाने वाले नाम गिना चुके तो उसने मुस्कराते हुए पूछा, "ठीक है, यह सब तो पढ़ा लेकिन क्या तैराकी भी सीखी है? अगर अल्लाह (ईश्वर) न करे, नाव उल्ट जाये तो किनारे तक कैसे पहुँच सकोगे?"

लड़कों में कोई भी तैरना नहीं जानता था। उन्होंने दुःख के साथ उत्तर दिया, "चाचा जी! यही एक विषय हमसे रह गया है हम नहीं सीख सके।" लड़कों का जवाब सुनकर मल्लाह जोर से हँसा और कहा, "मियाँ! मैंने तो अपनी आधी उम्र खोई, मगर तुमने तो पूरी उम्र डुबोई, इसलिये कि इस तूफान में तुम्हारा पढ़ा लिखा कुछ काम न आयेगा, आज तैराकी ही तुम्हारी जान बचा सकती है, और वह तुम जानते ही नहीं।"

विकास के उच्च सोपान तय करने और सभ्यता व संस्कृति के उच्च स्तर पर पहुंचने वाली तमाम क़ौमों की यही हालत है, चाहे वह ज्ञान व विज्ञान के इन्साइक्लोपीडिया ही क्यों न रही हों। यह इन्सानों के तमाम ज्ञान, विज्ञान, आविष्कार तथा इस विशाल संसार में निहित सम्पत्तियों के खोज निकालने में पूरी दुनिया की चौधरी ही क्यों न रही हों, लेकिन वह उस ज्ञान से अनभिज्ञ थीं जिससे अल्लाह की मारफ़त (पहचान) हासिल होती है, जिसके जरिये, ख़ालिक (सृजनहार) तक पहुँचा जा सकता है, जिसके सहारे लक्ष्य को पाया जा सकता है, जो कर्म और सोच को दुरूस्त रखता, काम और कामनाओं को काबू में करता है। आचरण को सद् तथा मन को सभ्य बनाता है, बुराइयों से रोकता और भलाइयों पर उभारता है। दिल में अल्लाह का भय उत्पन्न करता है। जिसके बिना न समाज का सुधार हो सकता है न सभ्यता व संस्कृति की हिफाजत (सुरक्षा)। जो इन्सान को परलोक की तैयारी

www.abulhasanalinadwi.org

के लिए आमादा करता है, घमंड व स्वार्थ की भावना को दबाता और ख़त्म करता है, दुनिया की तुच्छ वस्तुओं की लालच से आज़ादी दिलाता है, एहतियात और सन्तुलन का रास्ता दिखाता है और बे नतीजा व अलाभकारी प्रयासों से दूर रखता है।

मीमांसकों और विशेषज्ञों, ज्ञानियों के दामन और उनके बड़े–बड़े पुस्तकालय उन जानकारियों से एकदम ख़ाली होते हैं जो नबियों को खुदा की तरफ से मिलती हैं। उनको आख़िरत की उन मन्ज़िलों की हवा भी नहीं लगी होती है जिनकी अंबिया अपनी बसीरत की वजह से ख़बर देते हैं और जिनके सम्बन्ध में विस्तार से बताते हैं, उनकी दौड़ भाग दुनिया की हद तक है। मौत की सरहद के पार वह झांक कर देख नहीं सकते।

अनुवाद– *वह तो दुनिया की ज़िन्दगी के बाहरी रूप को जानते हैं, और आख़िरत से ग़ाफ़िल (बेपरवाह) हैं।*

(सूरः अरूम ७)

अनुवाद– *आख़िरत के बारे में उन लोगों की जानकारी ख़त्म हो गई है, बल्कि वे उसकी ओर से शक में हैं, बल्कि यह उससे अंधे हो रहे हैं।*

(सूरः अं–नमल ६६)

वैज्ञानिकों और विषय विशेषज्ञों की हक़ीक़त मानवजाति के बेड़ों के इन खेवनहारों के मुकाबले में वही होती है जो एक अनुभवी जहाज़राँ के सामने समुद्र तट पर सुन्दर सीपियों के साथ खेलने वाले बच्चों की। इन विद्वानों के लिए ज़रूरी है कि नबियों के सामने शिष्य बन कर बैठें और उनसे अपनी निजात व सौभाग्य का वह ज्ञान प्राप्त करें जो उनके बिना किसी से नहीं मिल सकता, जिसके बिना उनके

www.abulhasanalinadwi.org

सारे ज्ञान, कला–कौशल, उनकी सारी खोज बेकार बल्कि उनके लिए बवाल है। अपने ज्ञान पर गर्व, अपनी खोज पर संतोष और नबियों के ज्ञान से पल्लू झाड़ लेना उनके लिए और उन तमाम आबादियों और मुल्कों के लिए जो उनका नेतृत्व स्वीकार करें और अपनी किस्मत उनके सुपुर्द करें, मौत का पैग़ाम है। जिन व्यक्तियों या कौमों ने अपने ज़माने के प्रचलित ज्ञान–विज्ञान पर भरोसा करके नबियों की शिक्षा व निर्देश की अनदेखी की वह बर्बाद हो गयीं।

अनुवाद– *जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो जो (थोड़ा बहुत) ज्ञान उनके पास था वे उसी पर खुश होते रहे, और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिनका वे मज़ाक़ उड़ाते थे।*

(सूरः अल्–मोमिन ८३)

रसूल के आ जाने के बाद इन्कार की गुंजाइश नहीं

अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आ जाने के बाद भी हर उस कौम की यही हालत है जो ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल के उच्च स्तर तय कर चुकी और उसके अभिमान व घमण्ड और अपने ज्ञान–विज्ञान, विकास तथा विशेषज्ञों पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसे ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके अपनाने और आपके पगचिन्हों पर चलने की इजाजत न दी।

हमारे ज़माने की विकसित क़ौमों का उदाहरण भी यही है, जो क़यामत तक बाक़ी रहने वाले इस दीन से फायदा उठा सकती हैं और इस ज्योति पुँज से रौशनी की किरनें अपने दामन में समेट सकती हैं। जल्द ही इन कौमों के इन्कार, घमण्ड और अपने को

www.abulhasanalinadwi.org

सर्वमान्य समझने का नतीजा ज़ाहिर हो जायेगा और इनकी सभ्यता की इमारत ज़मीन पर आ रहेगी।

नबियों का आवाहन

नबियों को जब खुली आँखों यह हक़ीक़त दिख जाती है, कि यह संसार ख़ुदा का बनाया हुआ है, उसी का साम्राज्य है और उसी के हुक्म से यह पूरी व्यवस्था चल रही है। तो फिर वह इन्सानों की तरफ ध्यान देते हैं और आश्चर्य से देखते हैं कि सृष्टि और उसके तमाम अंग बेबस जिसके सामने सर झुकाये हुए हैं और चाहते हुए या न चाहते हुए जिस की फरमांबरदारी कर रहे हैं, इन्सान इस सृष्टि के कुल का एक हिस्सा होने के बावजूद उसके सामने अपनी चाहत और इच्छा से झुकने में आना कानी कर रहा है। यद्यपि यह बिना इरादे उसके सामने झुका हुआ है, उसके आदेशों व क़ानून के अधीन है, उसी के हुक्म से पैदा होता है, उसी के हुक्म से पलता पढ़ता है, बच्चा से जवान होता है और जवान से बूढ़ा। उसी की पैदा की हुई चीजों को खाता है, उसी के हुक्म से बीमार होता है, उसी के हुक्म से सेहत (स्वास्थलाभ) पाता है। जीवन की तमाम आवश्यकताओं में और अपने तमाम शारीरिक हालात में ख़ुदा के बनाये हुए कानून और व्यवस्था के उसी प्रकार अधीन है जिस प्रकार पत्थर, जीव–जन्तु। लेकिन जब इससे कहा जाता है कि जिस शक्ति के सामने तू बिना इरादा झुका हुआ है, उसी के सामने अपने इरादे से झुक जाए तो उसको इसमें बहाना होता है। नबियों ने जब पहली हक़ीक़त के विपरीत यह घटना देखी और उन्होंने देखा कि उनकी इन्सानी बिरादरी के बहुत से लोगों ने निर्माता के बजाय उसकी **कुछ मख़लूक़ात (सृष्टियों) के आगे सर झुकाया है और उनकी इबादत और इताअत (आज्ञापालन)** अपना

लिया है तो उनकी ज़बान से अनायास निकला:-

अनुवाद– *क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवा (किसी और तरीके को) तलाश रहे हैं, हालाँकि आसमान व ज़मीन में जो कुछ भी है, इच्छा से हो या मजबूरी से उसी के अधीन है, और 'उसी' की ओर सबको लौटना है।*

(सूरः आलि–इम्रान ८३)

कुर्आन में अल्लाह का कहना है:-

अनुवाद– *और आसमानों और ज़मीन में जितने भी जानदार हैं वे सब अल्लाह ही को सज्दा (विशेष शैली से माथा टेकना) करते हैं, और फ़रिश्ते भी और ये घमण्ड बिल्कुल नहीं करते।*

अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं, और यह वही करते हैं, जिसका उन्हें हुक्म मिलता रहता है।

(सूरः अंनह्ल ४९–५०)

अतएव नबियों का आवाहन यह होता है कि इन्सान भी उसी शक्ति के सामने सर झुका दे जिसके सामने सारी सृष्टि सर झुकाये है। सृष्टि का ऐसा अंग होकर जीवन यापन करे जो अपनी हरकत और अमल में उसी संकलित हरकत व रफ्तार से मेल खाती हो और सृष्टि के सृजनहार तथा ज़मीन व आसमानों के मालिक के आदेशों व कानून को माने। अपनी तमाम ग़लत इच्छाओं से, इख़्तियार व मनमानी से, आज़ादी व खुदमुख़्तारी (स्वतंत्रता) के दावा से और अपने हुकूके मालिकाना (स्वत्वाधिकार) के गर्व से दस्तबरदार होकर और छुट्टी करके अपने को बिल्कुल उसके हवाले कर दे, इसी का नाम "इस्लाम" है जिसकी दावत लेकर तमाम नबी आये।

www.abulhasanalinadwi.org

ज़ाहिर है कि इस "दीन" और "इस्लाम" (पूरी इताअत और पूरी सुपुर्दगी) के बाद और इस विचार के साथ कि अन्ततः फिर वास्ता उसी से पड़ने वाला है, और उसके सामने इस ज़िन्दगी का हिसाब–किताब पेश करना है। इन्सान में मनमानी और खुदमुख़्तारी की भावना किसी तरह पैदा नहीं हो सकती, उसकी ज़िन्दगी का नक्शा उसके दिमाग के साँचे से ढल कर नहीं निकलेगा, बल्कि उसी का प्रस्तावित किया हुआ होगा जिसने सृष्टि का पूरा नक्शा बनाया है और जो खुद इन्सान का भी ख़ालिक़ है, विधाता है। उसका आचरण, उसके क्रिया–कलाप, सियासत व आदेश तथा क़ानून उसके अपने बनाये हुए न होंगे बल्कि उसको सब ख़ुदा की तरफ से मिलेगा।

वह्इ (ईशवाणी) व रिसालत (दूतता) के इस रास्ते के विपरीत दूसरा रास्ता यह है कि इन्सान अपने को इस संसार में एक ऐसा स्थायी अस्तित्व मान ले जिसके जीवन की दिशा सृष्टि की अन्य वस्तुओं से बिल्कुल जुदा है, और इसमें वह किसी ऊपर वाली ताक़त के अधीनस्थ, किसी आसमानी व्यवस्था का मातहत और किसी गैर इन्सानी अदालत के सामने–उत्तरदायी नहीं है, यह जाहिलियत का रास्ता है। यह वास्तव में ख़ुदा की इस सल्तनत में छोटी–छोटी अनेक आजाद सल्तनतें क़ायम करने की बगावत वाली कोशिश है।

वह्इ (ईश्वाणी) व रिसालत (दूतता) सभ्यता की बुनियाद है

नबी अलैहिमुस्सलाम इन्सान को वह अमर ज्ञान व यथार्थ, जीवन के वह परिपूर्ण सिद्धान्त और समाज व समूह के वह त्रुटिहीन नियम क़ानून प्रदान करते हैं जिनकी पाबन्दी से सही इन्सानी तहजीब (शुद्ध मानव सभ्यता) अस्तित्व में आती है और जिनकी बुनियाद पर न्यायप्रिय

www.abulhasanalinadwi.org

तथा सही सभ्यता का विकास होता है।

संस्कृति ईंट और चूने, कागज और कपड़ों की किस्मों का नाम नहीं, न हैवानी तक़ाज़ों को इन्सानी हुनरमन्दी से पूरा करने और इसके लिए एक दूसरे से सहयोग करने का नाम है। संस्कृति उस सामूहिक जीवन का नाम है जिसमें कुदरत के क़ायम किये हुए नियम सीमाएं क़ायम रहें। समूह के प्रत्येक व्यक्ति को उसका वाजिबी हक मिले, और आस्था व आचरण तथा क़ानून व हुकूमत के सहयोग से एक ऐसा माहौल पैदा हो जिसमें इन्सान को प्रकृति की मँशा पूरा करने और अपने ईष्ट लक्ष्य पर पहुँचने में सहायता मिले।

अब हम देखते हैं कि वह्इ (ईश्वाणी) व रिसालत (दूतता) की रौशनी और नबियों के मार्गदर्शन के बिना इन्सान ने जब सामूहिक जीवन का कोई नक्शा बनाया तो कभी वह इसको पूरा न कर सका और उसमें संतुलन न पैदा कर सका जो एक सुधरी इन्सानी सभ्यता की उन्नति के लिए जरूरी है।

असल यह है कि खुदा के भेजे हुए पैग़म्बर खुदा की बनाई हुई इस दुनिया के बाग़बान हैं जो इस दुनिया की चमनबन्दी करते रहते हैं और इसके पत्तों व टहनियों को छाँटते रहते हैं। जो सभ्यतायें उनकी मदद के बिन उग आईं और उनकी सिंचाई और निगरानी के बिना उग आईं, वह स्वतः उग आये जँगली पेड़ की तरह हैं, इसमें वह तमाम खराबियाँ होंगी जो जंगल के स्वतः उग आने वाले पेड़ों और झाड़ियों में पाई जाती हैं, सम्भावना यह है कि वह मीठे फल देने वाले छायादार पेड़ के बजाय कड़वे या कसैले फल देने वाला काँटेदार पेड़ ही होगा।

www.abulhasanalinadwi.org

नबी प्रकृति के नबज़ देखने वाले और इन्सानियात के प्रवृत्ति को जानने वाले डाक्टर हैं जिस सभ्यता का ख़मीर अंबिया की तरकीब और उनकी सलाह के बिना तैयार हो उसमें कभी संतुलन नहीं हो सकता। उसके मिजाज़ का असंतुलन कभी न जायेगा। ऐसी सभ्यता जितनी उन्नति करेगी उसकी छिपी हुई खराबियाँ जो उसकी फितरत में दाख़िल हैं उतनी ही उभरती जायेंगी। इसलिए हम देखते हैं कि दुनिया की तमाम विख्यात ऐतिहासिक सभ्यताओं के उत्थान का ज़माना सबसे ज़्यादा सामूहिक और चरित्रक ख़राबियों का ज़माना रहा है जिसमें सामूहिक व्यवस्था के आन्तरिक अवगुण और असमानता धरातल पर उभर आती हैं। तमाम मानव सभ्यताओं के उत्थान के इसी दौर में पति–पत्नी के सम्बन्धों की ख़राबी, घरेलू जीवन की ख़राबी, वर्ग–भेद, नैतिक बीमारियाँ तथा सामूहिक अव्यवस्था सबसे अधिक बढ़ जाती हैं और उस सभ्यता की समाप्ति का समय करीब हो जाता है, मानो उसके उत्थान और उसकी बर्बादी का ज़माना एक ही होता है।

बहुत से लोग इस हकीकत से वाकिफ़ नहीं हैं कि अक़ायद (विश्वास) सभ्यता की मज़बूत बुनियाद हैं। जिस सभ्यता की बुनियाद ऐसी बातों पर न हो जो सर्वमान्य हों और यथार्थ हों, वह सभ्यता बेबुनियाद और बच्चों का खिलौना है। वह्इ (ईश्वाणी) और रिसालत (दूतता) ही सही आस्था प्रदान करते हैं। फिर उसको स्थिरता व मजबूती देते हैं इन्हीं के द्वारा इन्सान को आचरण और सम्मेलन के लिए ऐसी आधारभूत सर्वमान्य बातें प्राप्त होती हैं जो आसमान व ज़मीन की तरह पायदार और पहाड़ों की तरह स्थिर होती हैं। उन्हीं की बुनियाद पर सभ्यता व संस्कृति की पूरी इमारत खड़ी होती है। आचरण व समूह व समाज में वही बुनियाद का काम देते हैं। जब किसी क़ौम के हाथ से वह्इ व रिसालत का रिश्ता छूट जाता है, या

www.abulhasanalinadwi.org

शुरू से ही अंबियां का दामन उसके हाथ नहीं आता तो फिर उसके नज़दीक हक़ीक़त, हक़ीक़त नहीं रहती। स्वतः स्पष्ट बातें, दृष्टिकोण (नज़रियात) बन जाते हैं, उसकी सामूहिक आइडियोलोजी, दिन–रात, सुबह–शाम बदलती रहती है। ज्ञानमयी यथार्थ बदलते रहते हैं। नैतिक शब्दावलियों में परिवर्तन होता रहता है और नैतिक दर्शनशास्त्र निरस्त होते रहते हैं। अच्छाई–बुराई, नेकी व फसाद का कोई स्तर बाक़ी नहीं रहता। कल जो चीज़ शिष्टाचार थी आज वह अशिष्टता गिनी जाती है। आज जिस का नाम अत्याचार है कल न्याय बन जाता है। चीज़ों की हक़ीक़त के फर्क से जेहन अपरिचित हो जाते हैं। उस समय उस कौम का मूल बिगड़ जाता है। उसकी नैतिक अनुभूति झूठ हो जाती है। आज़ादी के पर्दे में विचारों का घोर बिखराव और कर्म का विरोध पैदा होता है। अन्ततः उसमें वह अनारकी (अराजकता) और नैतिक इन्कार की प्रवृत्ति जन्म लेती है जो उस क़ौम का जीना दूभर कर देती है और स्वयं उसकी बनाई हुई धरती की जन्नत को उसके लिए जहन्नम (नर्क) और उसको दुनिया की दूसरी क़ौमों और सभ्यताओं के लिए प्लेग की महामारी बना देती है।

तमाम मानव संस्कृतियों और सभ्यताओं का इतिहास पढ़ जाइये। उनके सामूहिक और नैतिक रोगों और अन्ततः उसकी तबाही का असल कारण धार्मिक व नैतिक विश्वास व नजरियात की यही अस्थिरता, सर्वमान्य बातों की यही कमी और अच्छे–बुरे के स्टैंडर्ड्स का यही परिवर्तन पाया जायेगा। शुद्ध प्रवृत्ति, राष्ट्रीय चलन व परम्परायें नयी पुरानी दीक्षा कुछ दिनों ज़रूर इसकी हिफाजत करती है, मगर यह बहुत कमजोर किस्म की चीजें हैं यह नेशन के संकट तथा अनैतिकताओं और अव्यवस्थाओं का मुकाबला नहीं कर सकतीं। अनैतिकताओं और अव्यवस्थाओं के पीछे उनको जायज तथा बेहतर

www.abulhasanalinadwi.org

करार देने के लिए अनेक प्रकार के नैतिक व सामूहिक फलस्फे होते हैं जिनकी ताक़त फितरत की आवाज़ को दबा देती है और राष्ट्रीय परम्पराओं और तहजीब के तिलिस्म (जादू) को भी तोड़ देती है और धीरे–धीरे उस क़ौम का दामन हर प्रकार की सर्वमान्य बातों और हर ऐसी चीज़ से खाली हो जाता है जो अच्छे–बुरे और नैतिक व अनैतिक की जाँच के लिए तराजू का काम दे सके।

इसी प्रकार वह्इ व रिसालत की शिक्षाअें से मुँह फेरना या विमुख हो जाना अथवा उनसे अनभिज्ञता का लाजिमी नतीज़ा यह है कि इस जीवन की परिकल्पना शुद्ध भौतिकवादी और इन्सान के अपने बारे में दृष्टिकोण सर्वथा हैवानी होकर रह जाये। क्योंकि इन्सान के पास अपने तौर पर जितने मालूमात के साधन हैं वह इसके अलावा और कोई सूचना नहीं देते। इनसे इस ज़िन्दगी के अलावा इन्सान की किसी और ज़िन्दगी का पता चलता, और कोई हक़ीकत इसके अलावा समझ में नहीं आती कि वह एक "बोलने वाला जानवर" (हैवाने नातिक) है। यह अक़ीदा और स्वीकारोक्ति स्वभाविक रूप से इन्सान को हैवानियत के उस मक़ाम पर पहुँचा देता है, जहाँ शारीरिक स्वाद व दुख के एहसास के अलावा तथा कोई नैतिक सूझ और स्वार्थ व लाभ की पूजा के अलावा कोई मज़हब व दर्शनशास्त्र नही रहता।

नबूवत (दूतकर्म) ही इन्सान को अपनी बरतरी व शराफ़त और इन्सानियत का शऊर प्रदान करती है और इसके साथ यह समझ भी पैदा करती है कि वह एक महाशक्ति के अधीन है, उसके सामने अपने तमाम कर्मो व आचरण के लिए उत्तरदायी है। यह संसार उसी की सल्तनत और इस दुनिया के रहने वाले उसी के बन्दे हैं। वह इस सल्तनत में दखल देने (तसर्रुफ) और इस दुनिया में रहने वालों के

www.abulhasanalinadwi.org

साथ मामला करने में आज़ाद नहीं हैं।

फिर नबूवत (दूत कर्म) सिर्फ नैतिक अनुभूत को जगाने पर बस नहीं करती बल्कि इन्सान को एक व्यवस्था पत्र तथा पूर्ण नैतिक नियमावली देती है। अच्छे आचरण पर उससे ख़ुदा की प्रसंनता और उसकी ख़ुशनूदी के महल व मक़ाम का वायदा करती है जिससे बेहतर कर्म के लिए कोई उत्प्रेरक (मोटीवेटर) साबित नहीं हुआ। अनाचार तथा कानून तोड़ने पर उसके अज़ाब (दण्ड) और कहर से डराती है जिससे अधिक कामयाब रोक दुनिया में मौजूद नहीं। ख़ुदा के हाजिर (सर्वव्यापी) व नाजिर, (सर्वदृष्टा) सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला, गैब की ख़बर रखने वाला होने का यक़ीन उसके मन–मस्तिष्क में बिठा देती है। जिससे बढ़कर इन्सान को कन्ट्रोल में रखने वाली कोई नैतिक शक्ति आज तक खोजी नहीं जा सकी। यह ताक़त है जो इन्सान को अकेले व दुकेले, बस्ती और वीराने में क़ानून का पाबन्द बनाती है जो पुलिस और फौज की ताक़त के बिना बड़े–बड़े जुर्म और सदियों की बुरी आदतों को जड़ से उखाड़ देती है जो ज़बान के एक इशारे से पूरी–पूरी क़ौम से मुँह लगी शराब छुड़ा देती है जो अपराधियों को बस्ती और वीरानों से खींच कर अदालत में हाजिर करती है और उनकी ज़बान से अपने जुर्म को इकबाल कराती है।

जिस नैतिक व्यवस्था के पीछे नबूवत की यह ताक़त न हो वह सिर्फ किताबी फलस्फा (पुस्तकीय दर्शन) है जो एक मामूली से जुर्म को भी नहीं रोक सकता[१] और अत्यन्त सीमित क्षेत्रफल में भी कोई

(१) इसकी बेहतरीन मिसाल अमेरीका की शराब पर रोक की नाकामी और शराब को अवैध करार देने वाले कानून का निरस्तीकरण है। इस अभियान और कानून पर महाशक्ति यू०एस०ए० ने बेहद दौलत व सरमाया लगाया।..........

www.abulhasanalinadwi.org

पवित्र नैतिक माहौल नहीं पैदा कर सकता।

जो सभ्यता इस आसमानी आचार संहिता से वंचित हो, और जिस कौम की कोख इस धार्मिक आत्मा से ख़ाली हो, वह दुनिया ही में जहन्नम (नर्क) के गढ़े के किनारे खड़ी है। उसका भौतिक व ज्ञानमयी विकास, कला कौशल व राजनीति पर उसकी विजय, सृष्टि पर उसकी जीत, उसका बाह्य शिष्टाचार, उसके कला कौशल कोई चीज़ उसको इस गढ्ढ़े में गिरने से रोक नहीं सकती, बल्कि यह सब चीजें मिलकर उसके गिरने की रफ्तार को और तेज कर देंगी। जो क़ौम वह्इ (ईशवाणी) की रक्षा और नबियों की सुरक्षा से वंचित हो उसके यही ज्ञान व शिष्टाचार (जो नबियों के मार्गदर्शन के बगैर जन्म लेते हैं, और जिनकी ख़मीर (माटी) ख़ुदा को पहचानने वाला और पवित्र नहीं है) उसके नैतिक पतन में सहायक तथा उसके सक्रिय कार्यकर्ता बन जाते हैं और अभद्रता के प्रचार–प्रसार में, बेहयाई और अनाचार व दुर्व्यवहार को फैलाने में, सभ्यता व लज्जा के पुराने दृष्टिकोण को बदलने और उनको दोषमुक्त करार देने तथा अपराध व अभद्रताओं को आकर्षक करने में, शैतान के एजेन्ट की हैसियत से

..........अनुमान है कि शराब के खिलाफ प्रचार व प्रसार में सिर्फ छः वर्षों के भीतर साढ़े छः करोड़ डालर खर्च हुए और जो साहित्य तैयार किया गया उस पर नौ अरब पेज छापे गये। क़ानून को लागू करने के सिलसिले में दो सौ आदमी मारे गये ५३४३३५ कैद किये गये। एक करोड़ साठ लाख पौंड के जुर्माने लगाये गये, चालीस करोड चालीस लाख पौंड मालियत की जायदाद ज़ब्त की गयी। लेकिन इसके बावजूद अमेरीका की हुकूमत व क़ानून और उसकी समाज सुधारक संस्थायें और संसाधन देशवासियों को क़ानून की पाबन्दी और शराब पीने से परहेज पर आमादा न कर सकीं। बल्कि इसके विपरीत उसमें शराब पीने का जुनून और अधिक पैदा कर दिया और अन्ततः चौदह वर्षों के बाद सन् १६३३ में अमेरीकी लोकतंत्र को बाध्य होकर इस क़ानून को निरस्त और शराब पीने को वैध करार देना पड़ा। (विस्तार के लिए देखें "तनकीहात" किताब का लेख "इन्सानी क़ानून और इलाही क़ानून")।

www.abulhasanalinadwi.org

काम करते हैं, यूनान व रोम तथा आधुनिक योरोप का सामूहिक नैतिक व साहित्यिक इतिहास इसका गवाह है।

इन्सान की आज़ादी की इस राह में क़ानून भारी पत्थर साबित हो सकता था मगर उसको इन्सान ने अपने रास्ते से इस तरह हटा दिया कि वह खुद कानून बनाने वाला बन गया। जब क़ानून का स्रोत आसमानी किताब व वह्इ (ईशवाणी) के बजाय इन्सानी ज्ञान व अनुभव करार पाया और क़ानून बनाने वाला बजाय ख़ुदा के इन्सान की बहुसंख्यक राय या ताक़त को माना गया तो रास्ते की सारी रूकावटें दूर हो गयीं। मानव रचना में काम और क्रोध तथा जानवरपन दाख़िल है, वह स्वभावतः बन्धनों से आज़ाद रहना चाहता है, वह प्रवृत्ति से भोगी और आराम तलब है जब उसके साथ ख़ुदा का भय और अपनी जिम्मेदारी का एहसास भी न हो तो उसको कौन सा उत्प्रेरक ऐसा क़ानून बनाने पर आमादा कर सकता है जो खुद उस पर बन्धन और व्यवस्था लागू करे, उसकी आज़ादी ले ले और उसके ऐश को ऐसा कर दे कि तबीयत उधर झुके नहीं, फिर जब यह क़ानून बनाने वाले इन्सान हों जिनकी परवरिश उन अस्थिर अक़ीदों (विश्वासों) उन उल्टे दृष्टिकोणों, उस विकारयुक्त मान्सिकता और उन व्यभिचारों में हुई हो जिनका ऊपर उल्लेख हुआ, तो उनसे ऐसे कानून बनाने की आशा करना कहाँ तक उचित है? जो अपराधों को रोके और जिसमें बुराइयों तथा दुराचारों के घुसने के लिए कोई रूकावट न हो, उनसे यह आशा रखनी चाहिए कि वह अपनी क़ानून बनाने की ताक़त और अपनी सत्ता से अनाचार को क़ानूनी हैसियत देंगे, उनके दौर में अनाचार क़ानून बन जायेंगे[१] और आचरण क़ानून के खिलाफ करार

(१) आधुनिक इतिहास में भी इसकी मिसालें मिलती हैं। नाजी दौर से पहले की बात है कि जर्मन में छः साल तक लड़कों के साथ दुष्कर्म का........

www.abulhasanalinadwi.org

पायेंगे। विकृत और **अर्ध** विकृत क़ौमों **के इतिहास** में यह घटना अकेली नहीं है कि बड़े–बड़े अपराध जनमत **की** ताक़त से वैद्य, **बेहतर और** लोकप्रिय बन गये। पवित्रता सोसाइटी का जुर्म बन गयी। **पवित्र लोगों के लिए इस मुजरिम** सोसाइटी में रहने की गुँजाइश न **रही और जनमत ने यही इलजाम देकर** उनके निकाले जाने की मांग **की:–**

अनुवाद– *लूत के मानने वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो यह लोग बड़े पवित्र रहना चाहते हैं।*

(सूरः अं–नमल ५६)

नबी दुनिया में जो सभ्यता क़ायम करते हैं उसकी यह विशेषता **है** कि वह क़ानून बनाने का हक इन्सान को नहीं देती उसकी सभ्यता **में** इन्सान गुनहगार तो हो सकता है और खिलाफे क़ानून भी कर **सकता** है, उसको उसकी सभ्यता में इसकी **सज़ा झेलनी** पड़ेगी, **लेकिन** वह अल्लाह के क़ानून में लेश मात्र संशोधन के लिए भी सक्षम **नहीं**। उसके हलाल व हराम ज़मीन व आसमान और सूरज और चाँद **की** तरह पायदार और प्रकृति के कायदा की तरह अपरिवर्तनशील हैं, **बल्कि** वह शुद्ध **प्रकृति** है जिसमें परिवर्तन नहीं।

अनुवाद– *अल्लाह की बनाई हुई प्रकृति जिस पर उसने इन्सानों को* ***पैदा*** *किया, अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती,* ***यही*** *दीन सीधा है।* (सूरः अर्रूम ३०)

.........प्रोपैगन्डा किया गया। और यह महान सुधारात्मक कार्य उन सज्जन ने किया **जो दुनिया** की लिंगीय **सुधार** कार्यकारिणी के **अध्यक्ष रह चुके थे**, अन्ततः देश की **विधायिका** ने **बहुमत से यह बिल** पास **कर** दिया कि **यह कर्म कानूनी जुर्म नहीं है, सिर्फ शर्त यह है कि दोनों राजी हों। मौलाना अबुल आला मौदूदी के रिसाला "पर्दा" में इसकी और भी मिसालें मिलेगीं।**

www.abulhasanalinadwi.org

इसलिए इस सभ्यता में अभद्रता, गुनाह, भोग–विलास के साधन व उत्प्रेरक, खेल तमाशे और ग़फ़लत के साधन और तमाम नैतिक अपराध तथा जुर्म को हवा देने वाले कर्म व व्यस्ततायें हमेशा वर्जित रहेंगे। और जब तक इनकी प्रकृति न बदले (और इनमें से कोई चीज बदलने वाली नहीं) उनका हुक्म भी न बदलेगा।

मानवीय क़ानून का मक़सद केवल किसी ख़ास व्यवस्था की स्थापना लोक शान्ति की रक्षा और देश वासियों में व्यवस्था कायम करना होता है, इसलिए वह इन्सान के उन कर्म व आचरण से बहस करते हैं जो सोसाइटी और सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करें, उनको वैक्तिक आचरण तथा आंतरिक खराबियों से बहस नहीं होती। इन क़ानूनों की हैसियत नैतिकता के एक शिक्षक और सुधारक की नहीं होती बल्कि पुलिस और मजिस्ट्रेट की होती है।

लेकिन आसमानी क़ानून का उद्देश्य मात्र व्यवस्था क़ायम करना नहीं है, बल्कि इन्सानों को पवित्रताप्रिय और संयमी बनाना है। इसलिए इनकी नियमावली में कुछ ऐसी चीजें, ऐसे आचरण ऐसे कार्य वर्जित होंगे जिनकी तरफ दुनियावी क़ानून बनाने वालों का ध्यान ही नहीं जायेगा। इनमें ऐसे तमाम अवरोध बन्द होंगे जिनसे बुराई और अनैतिकता सोसाइटी में दाख़िल होती है। जिनसे प्रवृत्ति में आराम तलीबी आती है, क़ौम में शारीरिक विश्राम और विलास पैदा होती है, आचरण हीनता और आपराधिक प्रवृत्तियां पैदा होती हैं जिनसे सोसाइटी को वह घुन लगता है जो अन्दर ही अन्दर उसकी जड़ों को खोखला कर देता है, ऐसी सब चीज़ें वर्जित होंगी जो उसके नैतिक स्तर के अनुरूप नहीं हों या उसके धार्मिक सिद्धान्त के अनुकूल नहीं हों। उसकी सभ्यता संगीत को बढ़ावा नहीं देगा, मौज मस्ती और तफरीह

www.abulhasanalinadwi.org

में लीनता को पसन्द न करेगा। श्रृंगार तथा गर्व और धन–दौलत की होड़ को अच्छी नज़र से न देखेगा, यहाँ तक कि बेफायदा और अनावश्यक निर्माण जिनका मक़सद शान व शौकत के प्रदर्शन और आनन्द व मनोरंजन के अलावा कुछ न हो, इस सभ्यता में वर्जित होंगे। सोने चाँदी के बर्तनों का इस्तेमाल पूर्णरूप से और इनके आभूषण और रेशम का इस्तेमाल मर्दों के लिए वर्जित होगा। तस्वीरें और पत्थर के बुत और इन्सानी मूर्तियाँ सर्वथा हराम और वर्जित होंगी।

मानवीय कानून में केवल शाब्दिक प्रतिबन्ध ज़रूरी होती है और अपराधों से रोकने वाला सिर्फ सज़ा या पुलिस से भयभीत होता है, जहाँ यह रूकावटें मौजूद न हों वहाँ अपराध करने में कोई चीज़ रूकावट नहीं बनती। दिलों में कानून की गरिमा और सम्मान नहीं होता। इसलिए कि वह अपने जैसे इन्सानों का बनाया हुआ होता है जिनकी पवित्रता की कोई कल्पना लोगों के मन में नहीं होती। प्रायः कानून बनाने वाले सत्ता और क़ानून साज़ी के पद पर अपनी जुगाड़ या दौलत या ताक़त अथवा चुनावी प्रयासों की वजह से क़ाबिज हो जाते हैं और नैतिक रूप से उनका स्तर सैद्धान्तिक तौर से उनकी सीरत (चरित्र) आम लोगों के मुक़ाबले में कुछ बुलन्द नहीं होती, बल्कि कभी–कभी वह घोर कदाचारी, सिद्धान्तविहीन, लालची, रिश्वतखोर और कमीने होते हैं। इसलिए कभी तो वह अपने उद्देश्यों और फायदों के लिए अपनी कमजोरियों तथा दुराचरणों को क़ानूनी सनद देने के लिए और कभी जनता और वोटरों की तुष्टिकरण के लिए नियम विरूद्ध क़ानून बनाते हैं और इसमें समय की मांग व इच्छाओं के अनुकूल संशोधन करते रहते हैं। जनता उनके क़ानून को दबाव में स्वीकार करती है और उनमें एक बड़ा वर्ग इनसे छुटकारा हासिल

www.abulhasanalinadwi.org

करने की कोशिश करता है और अपनी अकलमन्दी और बहानों से इनको असमर्थ करने की कोशिश करता है। और कानून तथा देशवासियों के बीच खींचतान जारी रहती है।

इसके विपरीत वह्ई (ईश्वाणी) व रिसालत (दूतता) का लाया हुआ क़ानून ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों के लिए उतना ही पवित्र और माननीय होता है जितनी उनकी मज़हबी (धार्मिक) किताब और खुद उनका पैग़म्बर। वहाँ इसको अपनी होशियारी से हराने, विवश करने और इसको तंग और दिक करने का कोई सवाल ही नहीं होता. है कि ऐसा करना सर्वथा कुफ्र व बग़ावत है।

अनुवाद– *और निःसंदेह जिन लोगों ने हमारी आयतों को हराने की कोशिश की उनके लिए सख़्त दुःख देने वाले अज़ाब (दण्ड) है।*

(सूरः सबा ५)

वहाँ सिर्फ क़ानून की लफ़ज़ी पाबन्दी और बाहरी व शारीरिक रूप पर्याप्त नहीं बल्कि क़ानून की पाबन्दी की आत्मा भी ज़रूरी है क्योंकि क़ानूनसाज़ और हाकिम (अल्लाह) ग़ैब (प्रोक्ष) से वाक़िफ़ है, अन्दर बाहर से आगाह है और उसको ज़ाहिरी क़ानूनी पाबन्दी से दुनिया के हाकिमों की तरह धोखा नहीं दिया जा सकता।

अनुवाद– *उन कुर्बानियों के गोश्त और खून अल्लाह तक नहीं पहुँचते बल्कि तुम्हारा तक़्वा (परहेजगारी) पहुँचता है।*

(सूरः अल्–हज्ज ३७)

जिस क़ानून में यह विशेषताएं पायी जायेंगी उसका सभ्यता व समाज पर क्या असर होगा? सोसाइटी में किस दर्जे की पवित्रता व लज्जा, अमानत व दियानत, तहजीब व हया पैदा करेगा? और जब

www.abulhasanalinadwi.org

उन लोगों के हाथों में हुकूमत आयेगी और उनको धरती के किसी भाग में सत्ता प्राप्त होगी जो धर्म व समाज आचरण व रहन–सहन तथा सभ्यता के बारे में ऐसे सिद्ध किये हुए यथार्थ अडिग अक़ायद (विश्वास) रखते हैं जो उनको ज्ञान और जानकारी के अमर और स्थायी, साफ और सुरक्षित स्रोत से हासिल हुए हैं और जो प्रकृति के अटल कानून की तरह अपरिर्वतित व अनिरस्त हैं, जिनकी ट्रेनिंग उन आचरण में हुई जो इन्सानी लालच से पाक और ख़ुदा के गुणों की छाया है, जिनका क़ानून अल्लाह की शरीयत का दूसरा नाम है जो न्याय व इन्साफ के जिम्मेदार और अल्लाह के गवाह हैं तो उनकी हुकूमत और सत्ता के परिणाम क्या उससे भिन्न होंगे? जिसकी कुर्आन ने भविष्यवाणी की है:–

***अनुवाद–** यह वे लोग हैं कि अगर धरती पर हम इन्हें सत्ता दें, तो वे नमाज़ कायम करेंगे, और ज़कात देंगे, और भली बात का हुक्म करेंगे और बुराइयों से रोकेंगे।*

(सूरः अल्–हज्ज ४१)

इनसे स्वाभाविक रूप से जो सभ्यता और जीवन–शैली वजूद में आयेगी, क्या उसकी पवित्रता और बुलन्दी में किसी को शक हो सकता है? इसके विपरीत जो सभ्यता उन लोगों के हाथों क़ायम हो, और जो सोसाइटी उनके द्वारा अस्तित्व में आये, जो मज़हब, आचरण व समाज और मानव–सभ्यता के या तो सिरे से कुछ तथ्य और सर्वमान्य बातें न रखते हों या उनके पास कुछ खोज हों जिनका कलैन्डर सूरज के चक्कर के साथ बदलता रहता हो, जिनके पास अच्छे बुरे की परख के लिए कोई स्थायी पैमाना और नैतिक मूल्यों के वज़न के लिए कोई न्यायसंगत तराजू न हो, जिनके यहाँ नैतिकता

www.abulhasanalinadwi.org

स्वार्थ व हित का नाम हो और जिनका क़ानून स्वयं उन्हीं का बनाया हुआ हो और उनके ज्ञान व अनुभव और ज़रूरत व हित के अधीन हो, जिनकी हुकूमत वैयक्तिक या नसली या क़ौमी सत्ता का साधन और उसका सेवक हो और उसका दुनिया में कोई सुधारक मिशन न हो, जिसकी बुनियाद किसी सिद्धान्त और नैतिक दर्शनशास्त्र पर न हो, तो इस सभ्यता और इस सोसाइटी में क्या इन्सान को अपनी प्रवृत्ति की मंशा पूरी करने और अपने इच्छित कमाल तक पहुँचने में सहायता मिल सकती है? और अगर उसने कुछ उम्र पायी और उसकी जड़े ज़मीन में गहरी चली गयीं तो क्या इन्सान अपनी असली फितरत पर क़ायम भी रह सकेगा? और उसको अपना इच्छित कमाल याद भी रहेगा? इस सभ्यता को मानव सभ्यता कहने की वजह इसके अलावा क्या हो सकती है कि वह सूरत में इन्सान हैं यद्यपि वह अपनी जीवन शैली में बेजान मशीनें, अपनी सोच और ट्रेनिंग के लेहाज से बेशऊर जानवर और अपने कार्य के लेहाज से खूँख्वार दरिन्दे हैं।

इन्सानियत की ख़ैर व बरकत (भलाई व बढ़ोत्तरी) और सभ्यता के विकास का बुनियादी कारण

नबी केवल अल्लाह की सही पहचान और इल्मुलयक़ीन (विश्वासात्मक ज्ञान) ही के केन्द्र व स्रोत नहीं हैं बल्कि इसके साथ ही वह मानव समाज को एक और बहुमूल्य दौलत भी प्रदान करते हैं जिस पर इन्सानियत की ख़ैर व बरकत और सभ्यता का निर्माण व विकास का पूरा–पूरा दारोमदार है और वह बहुमूल्य दौलत है, भलाई से मुहब्बत और बुराई से नफरत की पवित्रतम भावना और शिर्क की शक्तियों और उसके केन्द्र को टुकड़े–टुकड़े करने और भलाई विस्तार व विकास के लिए त्याग की भावना और इन्सान की तमाम तरक़्क़ियों,

www.abulhasanalinadwi.org

مكتبة العلامة عبد الحي الحسني

सरबुलन्दियों और न भुलाये जाने वाले कीर्तिमानों का असल और मूल साधन यही पवित्र भावना और संकल्प ही है क्योंकि तमाम कारक व संसाधन, साज व सामान, प्रयोग और खोज की संस्थायें मनुष्य के संकल्प और इरादे के अधीन हैं। सारे कारनामों की बुनियाद यह है कि इन्सान इरादा करे। इस भलाई का असल उद्‌गम हमेशा नबियों की शिक्षायें रही हैं। उन्होंने अपने अभ्युदयकाल में अपनी क़ौम व उम्मत (समुदाय) और अपने पूरे समाज में भलाई की मुहब्बत और बुराई से नफ़रत की भावना को बढ़ावा दिया। सत्य का समर्थन और और असत्य का विरोध उनकी तबीयत और फितरत में दाख़िल करने की कोशिश की और लम्बे इन्सानी इतिहास में जब भी यह भावना कमज़ोर पड़ी इन्सानी प्रकृति में परिवर्तन आया। उनमें असभ्यता के आसार ज़ाहिर हुए जैसा कि हम कुर्आन में बयान किये हुए अनेक क़ौमों के हालात में देखते हैं। नबियों ने तुरन्त इसका इलाज किया और संगदिली व दरिन्दगी को रहमत और शराफ़त व इन्सानियत में बदल दिया, उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा का प्रसार किया, इसके लिए लगातार प्रयास किया, अपने आराम की परवाह न की, मान सम्मान का ख़्याल नहीं किया। इसी निरन्तर व हृदय विदारक मेहनत व मशक्कत के नतीजे में इन्सानियत से खाली हैवानों और फाड़ खाने वाले दरिन्दों में ऐसे नेक दिल लोग पैदा हुए जिनके अस्तित्व से और जिनके व्यवहार से दुनिया महक उठी, मानवता का इतिहास गौरवान्वित हो उठा, जो प्रतिष्ठा व पराकाष्ठा में फरिश्तों (देवदूतों) से भी आगे निकल गये। इन्हीं मिसाली आत्माओं की बरकत से तबाह व बर्बाद होने वाली इन्सानियत को नया जीवन मिल गया, न्याय व इन्साफ का दौर हो गया। कमजोरों में ताकत वालों से अपना अपना हक वसूल करने की हिम्मत व ताकत पैदा हुई, भेड़ियों ने बकरियों की रखवाली की,

1405
14804
www.abulhasanalinadwi.org

फिज़ाओं में करूणा व दया की खुनकी छा गयी, प्रेम व मुहब्बत की खुश्बू फैल गयी, विनम्रता का बाज़ार गरम हो गया, दुनिया में जन्नत की दुकानें सज गयीं, ईमान व यक़ीन (आस्था व विश्वास) की सुगन्धित हवाएं चलने लगीं, मानव आत्मायें ईर्ष्या व द्वेष की जकड़न से आज़ाद हो गई। दिल भलाइयों की तरफ एसे खिंचने लगे जैसे चुम्बक की तरफ लोहे के टुकड़े।

मानव सभ्यता और उसके विकास पर इस पवित्र और पावन वर्ग के जितने एहसान हैं किसी और वर्ग के नहीं। सहृदयता और इनायतों की खुनुक व मन्द छाया इन्सानों की इज़्ज़त उनकी शराफत, उनकी संयमता उनके सन्तुलन और पूरे जीवन पर छाया हुआ है। इन्हीं इनायतों की छाया में मानव–जीवन के अस्तित्व की सम्भावना है। अगर अंबिया न होते तो मानवता की नवका अपने ज्ञान, हिकमत और सभ्यता समेत तूफान की भेंट चढ़ जाती और भू–तल पर इन्सानों के बजाय जँगली जानवरों और दरिन्दों के रेवड़ कुलेलें भरते नज़र आते, जो न अपने ख़ालिक़ और रब (सृजक व पालनहार) को पहचानते, न दीन व नैतिकता से अवगत होते, न रहमत व मुहब्बत का एहसास रखते और न खाना–पानी या घास–चारा से ऊपर कोई बात उनके जेहन में आती।

आज दुनिया में जितने भी उच्च मानव मूल्य, नर्म एहसास, उत्तम व उच्च नैतिक शिक्षायें, सही व लाभदायक ज्ञान या असत्य से टकराने के संकल्प पाये जाते हैं, इन तमाम के इतिहास का सिलसिला वह्इ (ईशवाणी), नबियों की शिक्षाओं, उनका प्रचार–प्रसार, उनके प्रयास और उनके सच्चे साथियों व उनके बाद के बुजुर्गों ही पर ख़त्म होता है। दुनिया (आदि काल अन्त तक) उन्हीं से लाभ उठाने पर

www.abulhasanalinadwi.org

मजबूर रही है। उन्हीं की फैलाई हुई रौशनी में क़दम बढ़ाती रही है। उन्हीं की बनाई हुई मजबूत इमारत में सर छुपाती और जीवन व्यतीत करती रही है, और रहेगी। इन पवित्र आत्माओं पर हजार बार सलामती होः–

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है,
यह सब पौध उन्हीं की लगाई हुई है।

दीन व शरीअत के बारे में नबियों की ग़ैरत व अडिगता

नबी उन अक़ाएद (विश्वासों), दअ्वत व संदेश और शरीअत के बारे में जिनको वह लेकर आते हैं बड़े ग़ैरतमन्द और प्रवर सूझ–बूझ वाले होते हैं। वह किसी हालत में भी (चाहे उनकी कामयाबी और लोकप्रियता की ही मसलहत का तकाजा क्यों न हो) इसके लिए तैयार नहीं होते कि अपनी दावत व शरीअत (आवाहन व कानून) में कोई संशोधन या परिवर्तन सहन कर लें। उनके यहाँ जो दिल में हो उसके विपरीत ज़ाहिर करने और अपने सोच को बदल देने की गुँजाइश नहीं होती। कुर्आन अपने अन्तिम सन्देष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके कहता हैः–

अनुवाद– *अतः आपको जिस काम का हुक्म दिया गया है उसे साफ सुना दीजिए, और मुश्रिकों की परवाह न कीजिए।*

(सूरः अल्हिज्र ६४)

अनुवाद– *ऐ रसूल! आपके रब की ओर से आप पर जो कुछ उतारा गया है, उसे पहुँचा दीजिए, और अगर ऐसा न किया तो आपने उसका पैग़ाम नहीं पहुँचाया और अल्लाह आपको लोगों की बुराइयों से*

www.abulhasanalinadwi.org

बचाए रखेगा।

(सूरः अल–माईदः ६७)

अनुवाद– *ये लोग चाहते हैं कि आप नर्म पड़ जाएं, तो ये भी नर्म हो जाएं।*

(सूरः अल–क़लम ६)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीद की सोच बल्कि इस्लाम के तमाम बुनियादी अक़ायद यहाँ तक कि दीन के अरकान व फरायज़ (स्तम्भ व कर्तव्य– कलमा, नमाज, रोजा आदि) के बारे में भी लचकदार और सुलह वाला रवैया न था जो राजनेताओं का (जो स्वतः अपने को यथार्थवादी और व्यावहारिक इन्सान समझते हैं) हर ज़माने में विशिष्टता रही है। शहर तायफ की विजय के बाद, कुरैश के बाद, अरब के दूसरे ज़बरदस्त कबीला सक़ीफ़ का शिष्ट मण्डल इस्लाम कुबूल करने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होता है और प्रार्थना करता है कि लात नामी मूर्ति को (जिसकी वजह से तायफ़ को मक्का के बाद केन्द्रत्व और पवित्रता हासिल थी) तीन साल तक अपने हाल पर रहने दिया जाये और दूसरी मूर्तियों की तरह इसके साथ व्यवहार न किया जाये। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साफ इन्कार फरमा देते हैं। शिष्ट मण्डल के लोग दो साल, फिर एक साल की मुहलत माँगते हैं, आप बराबर इनकार करते हैं, यहां तक कि वह इसपर उतर आते हैं कि हमारे ताएफ़ वापस जाने के बाद सिर्फ एक महीने की मोहलत दे दी जाए लेकिन आप उनकी अंतिम प्रार्थना स्वीकार करने के बजाय अबू सुफियान पुत्र हर्ब (जिनकी तायफ़ में रिश्तेदारी थी) और सक़ीफ़ क़बीला ही के एक व्यक्ति मुगीरः पुत्र शोअ्बा को आदेश देते हैं कि वह जायें और लात को ढा दें। शिष्टमण्डल के लोग एक प्रार्थना यह भी

www.abulhasanalinadwi.org

करते हैं कि उन्हें नमाज़ से माफ़ रखा जाये। आप कहते हैं उस दीन में कोई भलाई नहीं जिसमें नमाज़ नहीं। इस वार्ता के बाद वह अपने वतन वापस लौटते हैं और उनके साथ अबूसुफियान और मुगीरः भी जाते हैं और लात को ढा देते हैं और पूरे सकीफ कबीला में इस्लाम फैल जाता है, यहाँ तक कि पूरा तायफ मुसलमान हो जाता है।

(ज़ादुलमआद खण्ड एक पेज ४५८, ४५६)

नबियों की विशेषता यह भी है कि वह अपने प्रचार प्रसार में और समझाने–बुझाने में वही शैली अपनाते हैं जो उनके आवाहन की आत्मा और नबूवत के स्वभाव से मेल खाती है। वह खुलकर और पूरी स्पष्टता के साथ आख़िरत की दावत देते हैं, जन्नत (स्वर्ग) और उसकी नेमतों और लज़्ज़तों का शौक दिलाते हैं। दोज़ख़ (नर्क) और उसके भयावह दृश्यों से डराते हैं। मानो वह निगाहों के सामने हैं। वह बौद्धिक दलीलों व तर्क के बजाय ग़ैब (अदृश्य) पर ईमान की मांग करते हैं।

उनका ज़माना भी भौतिक दर्शनशास्त्रों और दृष्टिकोणों से (जो उनके युग की सतह और हालात के अनुरूप होते हैं) एकदम ख़ाली नहीं होता, उस युग में भी कुछ (वर्गों) की विशेष शब्दावली होती है, वह उनसे अनभिज्ञ नहीं होते, वह यह भी खूब समझते हैं कि यह दर्शन शास्त्र और परिभाषिक शब्द सिक्का रायजुलवक्त (व्यवहृत सिक्के) हैं और इनका इस दौर में चलन है, लेकिन लोगों को करीब लाने और अपनी तरफ दावत देने के लिए वह इनसे काम नहीं लेते। वह अल्लाह पर उसकी सिफ़ात (गुण) व अफ़आल (कर्म) के साथ फ़रिश्तों पर, भाग्य पर (अच्छी हो या बुरी), मौत के बाद उठाये जाने पर ईमान लाने की दावत देते हैं। वह निःसंकोच यह ऐलान करते हैं

www.abulhasanalinadwi.org

कि उनकी दावत कबूल करने और उन पर **ईमान** लाने का इनाम जन्नत (स्वर्ग) और ख़ुदा की प्रसन्नता है।

दावत के सिलसिले में नबवी मिजाज व कार्यशैली का उत्तम उदाहरण उक़ब–ए–सानिया के बैअत (संकल्प) की घटना है। जब मदीना वासियों की एक संख्या जिनमें ७३ पुरूष और दो स्त्रियाँ थीं हज के लिए मक्का आये और उक़बः के पास घाटी में इक्ट्ठा हुए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के साथ (जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे, पधारे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्आन की आयत का सस्वर पाठ (तिलावत) किया, एक ईश्वर की ओर दावत और इस्लाम की तरफ शौक दिलाया और फ़रमाया कि तुमसे मैं यह बैअत (संकल्प) लेता हूँ कि तुम मेरे साथ हिफ़ाज़त और ख़्याल रखने का वही मामला करोगे जो अपने घर वालों के साथ करते हो। अन्सार ने बअ़ेत की और आपसे यह वायदा लिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको छोड़कर फिर अपनी क़ौम में वापस न जायेंगे वह समझदार थे और इस संकल्प के दूरगामी और ख़तरनाक नतीजों से भली प्रकार वाक़िफ़ थे। वह समझते थे कि वह तमाम करीबी कबीलों, बल्कि पूरे मुल्क अरब से दुश्मनी मोल ले रहे हैं। उनके एक अनुभवी साथी (अब्बास बिन इबादः अन्सारी) ने भी उनको आगाह और होशियार किया लेकिन उन्होंने जवाब में एक स्वर होकर कहा कि हम माल व जागीरें के नुकसान और अपने खानदान के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के कत्ल हो जाने का खतरा मोल लेते हुए आपको ले जा रहे हैं। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभोर होकर उन्होंने निवेदन किया, ऐ! अल्लाह के रसूल अगर हमने वादा वफा कर दिखलाया तो हमें क्या मिलेगा।

www.abulhasanalinadwi.org

ऐसे नाजुक मौक़े पर अगर ख़ुदा के पैग़म्बर की जगह कोई सियासी लीडर, कोई नेशनल लीडर या केवल सियासी सूझ–बूझ का कोई इन्सान होता तो उसका जवाब यह होता कि बिखराव के बाद अब तुम्हारा गठजोड़ होगा, एक क़बीले की मामूली हैसियत के बाद अब पूरे अरब में तुम्हारे अस्तित्व को स्वीकार किया जायेगा और तुम एक ताक़त बनकर उभरोगे। यह कोई काल्पनिक बात न थी, स्वयं इन मदीना वासियों में से एक कहने वाले ने इससे पूर्व कहा था कि:–

"हम अपनी क़ौम को इस हाल में छोड़ कर आये हैं कि शायद ही किसी क़ौम में ऐसी दुश्मनी और फूट हो जैसा हमारी क़ौम में है, हमें उम्मीद है कि ख़ुदा आपके द्वारा इनको जोड़ दे। अब हम उनके पास जायेंगे और आपकी यह दावत उनके सामने पेश करेंगे, और जिस दीन को हमने क़बूल किया है उनको भी इसकी दावत देंगे। अगर ख़ुदा आपकी ज़ात पर उनको जोड़ दे तो आपसे बढ़कर कोई सत्ताधारी और प्रतिष्ठित व्यक्ति न होगा।"

(सीरत इब्ने हिशाम पेज ४२६)

लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके इस सवाल के जवाब में कि "ऐ अल्लाह के रसूल फिर हमें क्या मिलेगा?" सिर्फ इतना कहा कि "जन्नत"। उस समय उन्होंने निवेदन किया कि हुज़ूर हाथ बढ़ाइये। आपने अपना मुबारक हाथ बढ़ाया और उन्होंने बैअत कर ली।

(सीरत इब्ने हिशाम पेज ४४६)

इसी ग़ैरत और नबियों वाले काम के पूरा होने का असर है कि पैग़म्बर किसी शरई हुक्म (धार्मिक आदेश) में किसी तब्दीली के न रवादार होते हैं और न किसी हुक्म पर अमल किसी की सिफारिश और

www.abulhasanalinadwi.org

असर से टाल देते हैं। वह निकट व दूर अपने पराये सब पर समान रूप से अल्लाह के हुदूद (सीमाओं) व आदेशों को लागू करते हैं। बनी मख़ज़ूम (क़बीले का नाम) की एक महिला के बारे में जिसने चोरी का अपराध किया था, उसामा पुत्र जैद (जिन पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ास मेहरबानी थी) सिफारिश करने के लिए उपस्थित हुए तो आपने क्रोधित होकर कहा कि क्या अल्लाह की निर्धारित सीमाओं के बारे में सिफ़ारिश करते हो? फिर आपने सम्बोधित क्या कि "ऐ लोगो! तुमसे पहले उम्मतें इसलिए ख़त्म हुई कि जब उनमें कोई प्रभावशाली व्यक्ति और खानदानी आदमी चोरी करता है तो उसको छोड़ देते और कोई कमज़ोर और मामूली आदमी चोरी करता तो उसे सज़ा देते। कसम है ख़ुदा–ए–पाक की अगर मुहम्मद की बेटी फातिमा भी चोरी करेगी तो मैं उसका हाथ काटने से संकोच न करूँगा।"

यही वह गैरत है जो नबियों के सत्संगियों (सहाबा) व उत्तराधिकारियों में ट्राँस्फर हुई। उन्होंने भी कामयाबी व नाकामी और नफा व नुक़सान से आँखें बन्द करके कुर्आनी शिक्षा, शरअई अहकाम (आदेशों) और इस्लाम के नियम–क़ानून की रक्षा की। इतिहास में इसकी शानदार मिसाल फारूक आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की वह घटना है जो जबलः पुत्र ऐहम ग़स्सानी के साथ पेश आयी। वह कबीला अक्क व ग़स्सान के पाँच सौ लोगों के साथ मदीना आया। जब वह मदीना में प्रवेश किया तो कोई जवान व पर्दानशीन औरत ऐसी न थी जो उसको और उसके ज़र्क़ बर्क़ लिबास को देखने के लिए न निकल आई हो। और जब हज़रत उमर फारूक़ हज के लिए गये तो जब्लः भी साथ गया। वह काबा का तवाफ कर ही रहा था कि बनी फिजारः के एक व्यक्ति का पैर उसके लटकते हुए तहबन्द की कोर पर पड़

www.abulhasanalinadwi.org

गया और वह खुल गया. जब्लः ने हाथ उठाया और फिज़ारी की नाक पर जोर का थप्पड़ मारा। फिज़ारी न हज़रत उमर के यहाँ शिकायत की फारूक़–ए–आज़म ने जब्लः को बुला भेजा। वह जब आया तो उसने पूंछा कि तुमने यह क्या किया? उसने कहा कि हाँ, अमीरूल मोमिनीन! इसने मेरा तहबन्द खोलना चाहा था, अगर काबा का सम्मान रूकावट न डालता तो मैं इसके माथे पर तलवार का वार करता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया, तुमने इकरार कर लिया अब या तो तुम उस व्यक्ति को राज़ी कर लो वरना मैं किसास (बदला) लूँगा। जब्लः ने कहा कि आप मेरे साथ क्या करेंगे? हज़रत उमर ने फ़रमाया कि उससे कहूंगा कि तुम्हारी नाक पर वह वैसे ही चोट लगाए जैसी तुमने उसकी नाक पर लगाई, जब्ल ने हैरत से कहा कि अमीरूल मोमिनीन! यह कैसे हो सकता है? वह एक आम आदमी है, और मैं अपने इलाके और क़ौम का ताजदार (शासक) हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि इस्लाम ने तुमको और उसको बराबर कर दिया, अब सिवाय तकवा (परहेज़गारी) और आफियत के किसी और चीज़ की बुनयाद पर तुम उससे अफ़ज़ल नहीं हो सकते। जब्लः ने कहा कि मेरा ख़्याल था कि मैं इस्लाम क़बूल करके जाहिलियत के मुकाबले में ज़्यादा इज़्ज़त व एतबार वाला हो जाऊँगा। हज़रत उमर ने फरमाया, यह बातें छोड़ो। या तो इस व्यक्ति को राज़ी करो वरना किसास (बदला) के लिए तैयार हो जाओ।

जब्ला ने जब हज़रत उमर के यह तेवर देखे तो कहा कि मुझे आज रात ग़ौर करने का मौक़ा दिया जाये। हज़रत उमर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। रात के सन्नाटे और लोगों की लाइल्मी (नजानना) में जब्ला अपने घोड़ों और ऊँटों को लेकर सीरिया की तरफ रवाना हो गया। सुबह मक्का में उसका पता निशान न था। एक ज़माना के बाद

जब जुसामा पुत्र मसाहिक कनानी से जो उसके दरबार में **शरीक हुए** थे हजतर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके शाहाना ठाठ–बाट के **हालात** सुने तो सिर्फ यह फरमाया, "वह महरूम रहा। आख़िरत के **बदले में** दुनिया ख़रीद ली। उसकी तिजारत खोटी रही।"

(फुतूहुल **बुल्दान पेज १४२)**

दावत की हिकमत (युक्ति)

इसका मतलब यह नहीं कि नबी दावत व तबलीग़ के **सिलसिले** में हिकमत से काम नहीं लेते। और लोगों से उनकी **समझ के अनुसार** बात नहीं करते। ऐसा नहीं है। **यह तो कुर्आन की आयतों और पाक** सीरत की बीसियों घटनाओं के विपरीत है।

अनुवाद– *और हमने जो भी रसूल भेजे, उनकी अपनी क़ौम **की भाषा** के साथ भेजा, ताकि उन्हें स्पष्ट तरीके से (अल्लाह के आदेशों **को)** बयान करें।*

(सूरः **इब्राहीम ४)**

भाषा का भावार्थ यहाँ कुछ वाक्यों और शब्दों में सीमित **नहीं।** वह शैली और समझाने के ढँग सब पर हावी है। इसका **आकर्षक** नमूना हज़रत यूसुफ के जेल में अपने दोनों साथियों से **नसीहत** (उपादेश) हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अपनी–**अपनी** कौम और अपने–अपने दौर के बादशाहों से संवाद में नज़र आता **है।** अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में यह हिदायत दी है।

अनुवाद– *ऐ पैग़म्बर लोगों को हिकमत से और अच्छी नसीहत **से** अपने 'रब' की राह की ओर बुलाइए और उनके साथ तर्क–**वितर्क अच्छे** तरीक़े से कीजिए।* (सूरः अं–नहल १२५)

www.abulhasanalinadwi.org

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहाब (मित्रों) को जब इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए रवाना करते तो नर्मी, स्नेह और आसानी पैदा करने और खुशख़बरी देने का निर्देश देते। आपने हज़रत मआज पुत्र जबल और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यमन भेजते हुए वसीयत की "आसानी पैदा करना सख़्ती न करना, खुशख़बरी देना, वहशत इख़्तियार करने वाला न बनना और खुद अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा–

अनुवाद– *ऐ मुहम्मद अल्लाह की रहमत से आपका स्वभाव उन लोगों के लिए नर्म है, और अगर आप तेज मिज़ाज (क्रूर स्वभाव), सख़्त दिल होते, तो यह आपके पास से भाग जाते।*

(सूरः आलि अिम्रान १५६)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से सामान्यतः कहा 'तुम्हें आसानी पैदा करने के लिए उठाया गया है, कठिनाई पैदा करने के लिए नहीं उठाया गया है।

(बुख़ारी शरीफ़)

पवित्र कुर्आन अनेक नबियों का उल्लेख करते हुए कहता हैः–

अनुवाद– *यह ऐसे लोग थे जिनको 'हमने' किताब और हुक्म (निर्णायक राय स्थापित करने की योग्यता) और नबूवत दी थी।*

(सूरः अल्–अन्आम ८६)

लेकिन इस आसानी, दर्जा बदर्जा और आसान करने का सम्बन्ध शिक्षा–दीक्षा और आंशिक समस्याओं से था जिनका अकायद (विश्वासों) और दीन के आधारभूत सिद्धान्तों से सम्बन्ध नहीं। जिन बातों का सम्बन्ध सामूहिक और अल्लाह के आदेशों से है, उनमें हर

www.abulhasanalinadwi.org

दौर के अंबिया फौलाद से अधिक बेलचक और पहाड़ से ज़्यादा मज़बूत होते हैं।

नबियों की इताअत (आज्ञा पालन) और तक्लीद (अनुकरण) पर कुर्आन का जोर

पवित्र कुर्आन जगह–जगह नबियों का अनुसरण, उनकी सीरत (चरित्र) को अपनाने और उनके तर्ज पर ज़िन्दगी गुजारने और यथासम्भव उनकी मुशाबहत (सदृश्यता) अपनाने पर ज़ोर देता और कहता है:–

अनुवाद– निःसंदेह, तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मीदवार हो और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे।

(सूरः अल्–अह्ज़ाब २१)

वह मुसलमानों को हिदायत करता है कि वे बराबर यह दुआ माँगते रहें कि:–

अनुवाद– हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों का रास्ता जिनको तूने पुरस्कृत किया, उन लोगों का रास्ता नहीं जिन पर तेरा गज़ब (प्रकोप) हुआ, और न भटके हुओं के (रास्ते पर चला)

(सूरः अल्–फ़ातिहा ५–७)

इसमें कोई शक नहीं कि खुदा के इनाम से सम्मानित बन्दों के सरदार नबी और रसूल ही हैं। इस दुआ को नमाज़ में भी शामिल कर दिया गया। जब भी इन्सान इस दुआ के क़ानून की पैरवी और इन पुरस्कृत बन्दों की सीरत (चरित्र) और सूरत में मुशाबहत (सदृश्यता) करेगा तो खुदा से करीब और उसके नज़दीक सम्मानित होगा।

www.abulhasanalinadwi.org

नबियों का सम्मान और उनसे प्रेम

पवित्र कुर्आन नबियों के लिए उस सम्मान और प्रतिष्ठा की मांग करता है जो दिल की गहराइयों से पैदा हो और उनसे भावनात्मक लगाव तथा प्रेम पैदा करना चाहता है। और केवल उनकी उस इताअत (आज्ञापालन) पर राज़ी नहीं जो भावना, मुहब्बत और आदर से ख़ाली हो, जैसे कि प्रजा का बादशाह के साथ, और दूसरे फौजी व सियासी लीडरों के साथ जनता का एक औपचारिक संबंध होता है। कुर्आन मोमिन से ज़कात व सदक़ात (इस्लामी दान) के केवल कर्तव्यों का निर्वाह और आदेशों के नियम क़ानून की तालीम को काफ़ी नहीं समझता बल्कि उसकी मांग यह भी है:–

अनुवाद– *ताकि तुम लोग अल्लाह और 'उनके रसूल पर ईमान लाओ, और उनकी मदद करे। और उनका आदर करो।*

(सूरः अल्–फ़तह ९)

अनुवाद– *जो उस रसूल पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी मदद की।* (सूरः अल्–अअ़राफ १५७)

इसलिए उसने हर उस चीज का हुक्म दिया जिसमें उनकी इज़्ज़त व सम्मान की रक्षा होती हो, और हर उस चीज़ से मना किया जिससे उनकी अनादरता होती हो और जिससे उनकी इज़्ज़त पर आँच आती हो, उनकी शान घटती हो और उनकी बड़ाई कम होती हो।

अनुवाद– *ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न उससे इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में बोलते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म बर्बाद हो जाएं और तुम्हें*

www.abulhasanalinadwi.org

ख़बर भी न हो, जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को नीची करते हैं, वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है, उसके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है।

(सूरः अल्–हुजुरात २–३)

अनुवाद– *(मोमिनो!) रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक–दूसरे को बुलाने की तरह न बनाओ।* (सूरः अं–नूर ६३)

इसीलिए नबी के निधन के बाद उम्मत पर उनकी बीबियाँ हराम कर दी गयीं।

अनुवाद– *तुम्हे इसकी इज़ाजत नहीं कि तुम रसूल को तकलीफ पहुँचाओ और न यह जायज़ है कि उनके बाद भी कभी तुम उनकी पत्नियों से निकाह करो, बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी गम्भीर बात है।* (सूरः अल्–अहजाब ५३)

इसके अलावा बहुत से साफ़ आदेशों में रसूल की मुहब्बत, और अपनी जान, माल आल–औलाद के मुकाबले पर वरीयता की माँग की गयी है। बुख़ारी व मुस्लिम में है।

"तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके लिए उसके बाप, उसके लड़के और तमाम लोगों की तुलना में अधिक प्रिय न हो जाऊँ।"

तिबरानी मोजम कबीर (किताब का नाम) और औसत (किताब का नाम) में 'मिन नफ़्सिहि' भी है, अर्थात अपनी जान से भी अधिक प्रिय हों।

और इसी प्रकार कहाः–

www.abulhasanalinadwi.org

जिसमें तीन बातें हों उसने ईमान की मिठास पाली, एक वह जिसके लिए अल्लाह तथा उसका रसूल दूसरे से बढ़कर प्रिय हो!

यहाँ इस बात को स्पष्ट कर देना जरूरी है कि नबी जिनके सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, का मख़लूक़ से और उन क़ौमों से जिनकी तरफ वह भेजे जाते हैं पोस्टमैन और डाकियों जैसा तअल्लुक़ नहीं होता, जिसकी ज़िम्मेदारी सिर्फ यह है कि वह डाक जिसकी हो उस तक पहुँचा दे, फिर उसे उन लोगों से कोई सरोकार नहीं। और इन लोगों को उस मध्यस्त और डाकिये से कोई मतलब नहीं वह अपने कामों और अधिकारों में बिल्कुल आज़ाद है। और उन क़ौमों का तअल्लुक़ जिनके बीच नबी आये, अपने नबी से महज सामाजिक व क़ानूनी होता है, उनको उनकी सीरत, तौर तरीका पसन्द नापसन्द और उनकी वैयक्तिक ज़िन्दगी और व्यक्तिगत ज़िन्दगी से कोई दिलचस्पी नहीं, यह वह गलत व आधारहीन और अधूरी कल्पना है जो उन क्षेत्रों में प्रचलित था जो नबूवत के बुलन्द मक़ाम से नावकिफ थे, और हमारे इस दौर में उन हल्कों में फैला हुआ है जो सुन्नत के मक़ाम से नावाकिफ़ और हदीस और उसकी हुज्जत (दलील) होने को नहीं मानते हैं और जिन पर मज़हब की ईसाइयों वाली सोच का असर और पश्चिमी चिन्तन शैली का वर्चस्व है।

इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि नबी पूरी इन्सानियत के लिए परिपूर्ण पेशवा, उच्च अनुकरणीय नमूना, आचरण, अभिरूचि स्वीकारने व रद्द करने और निकटता व अलगाव के बारे में परिपूर्ण और अन्तिम नमूना होते हैं। उनके आचार–व्यवहार उनका रहन सहन सब खुदा की नज़र में प्रिय है। रहन–सहन में उनका ढँग, इन्सानों के आचरण में उनके आचरण, लोगों की आदतों में उनकी आदतें अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

के नज़दीक प्रिय बन जाती हैं। नबी जिस रास्ते को अपनाते हैं वह रास्ता ख़ुदा के यहाँ प्रिय बन जाता है और उसको दूसरे रास्तों पर प्राथमिकता हासिल होती है, सिर्फ इस वजह से कि नबियों के कदम उस रास्ते पर पड़े हैं। उनकी तमाम पसन्दीदा चीज़ों, तौर तरीकों, और उनसे सम्बन्ध रखने वाले कार्यो से अल्लाह की मुहब्बत और पसन्दीदगी जुड़ जाती है। उनको अपनाना और उनके आचरण की झलक पैदा करना अल्लाह को राज़ी करने का निकट और अति सरल रास्ता हो जाता है, इसलिये कि दोस्त का दोस्त, दोस्त, और दुश्मन का दोस्त, दुश्मन समझा जाता है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से कहलवाया गयाः–

***अनुवाद*– *कह दीजिए, "अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो, तो मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, अल्लाह भी तुमको चाहने लगेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, कृपा वाला है।*

(सूरः आलि–अिम्रान ३१)

इसके विपरीत जो जुल्म पर कमर बाँधे हुए और कुफ्र की राह अपनाए हुए हैं उनकी तरफ दिल का झुकाव उनके रहन–सहन के ढंग की वरीयता और उन जैसा बनने की कोशिश, अल्लाह की गैरत को हरकत में लाने वाली और अल्लाह से बन्दे को दूर करने वाली बताई गयी है। फरमाया गयाः–

***अनुवाद*– *और उनकी ओर मत झुकना, जिन्होंने जुल्म किया, वरना आग तुम्हें आ लिपटेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई न दोस्त होगा और न तुम्हारी मदद ही की जायेगी।*

(सूरः हूद ११३)

www.abulhasanalinadwi.org

पैग़म्बरों की इन विशेष आदतों और रहन–सहन का नाम शरीअत की ज़बान में "खेसाले फितरत" और "सुननुलहुदा" है जिसकी तरफ शरीअत प्रेरित करती है। इन आचरणों और व्यवहारों को अपनाना लोगों को नबियों के रंग में रंग देता है और यह वह रंग है जिसके बारे में पवित्र कुर्आन कहता है:–

अनुवाद– *(कह दो कि हमने) "अल्लाह का रंग अपना लिया है और अल्लाह से बेहतर रंग किसका हो सकता है?" और हम तो 'उसी' की इबादत करने वाले हैं।*

(सूरः अल्–बक़रह् १३८)

एक आदत की दूसरी आदत, एक आचरण के दूसरे आचरण, एक तौर तरीक़ा के दूसरे तौर तरीक़े पर दीन व शरीअत (धर्म व इस्लामी क़ानून) में प्राथमिकता का यही रहस्य है। इसी कारण से इसको इस्लामी शरीअत, ईमान वालों की पहचान, प्रकृति की माँग की पूर्ति, और इसके ख़िलाफ़ तरीक़ों को शुद्ध प्रवृति से विचलन और अज्ञान लोगों की पहचान करार देती हैं और इन दोनों तरीक़ों और रास्तों में मात्र इस बात का अन्तर है कि एक ख़ुदा के पैग़म्बरों और उसके प्रिय भक्तों का अपनाया हुआ है, दूसरा उन लोगों और क़ौमों का जिनके पास हिदायत (सत्यमार्ग) की रौशनी और आसमानी शिक्षायें नहीं हैं। इन उसूल के तहत खाने–पीने, कामों में दायें–बायें हाथ का फर्क, पहनाव व श्रृंगार, रहन सहन व सभ्यता के बहुत से नियम आ जाते हैं। और यह सुन्नत, सुन्ने नबवी और इस्लामी विधि शास्त्र का एक विस्तृत अध्याय है। (विस्तार के लिए लेखक की किताब मंसबे नबूवत पढ़ें)

जहाँ तक अल्लाह के रसूल **मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का**

www.abulhasanalinadwi.org

संबंध है, वहाँ इस पहलू पर और अधिक बल देने की ज़रूरत है। आपके व्यक्तित्व के साथ केवल नियम और क़ानून का संबंध काफी नहीं, भावनात्मक सम्बन्ध और ऐसा गहरा प्रेम वांछित है जो जान व माल, परिवार के प्रेम पर हावी हो। सही हदीस में आया है– "तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको अपनी संतान, मां बाप तथा तमाम लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊं" (बुख़ारी व मुस्लिम)। दूसरी सही हदीस में है, 'तुम में से कोई उस समय तक मोमिन न होगा, जब तक मैं उसे अपने आपसे अधिक प्रिय न हूँ।'

इस सिलसिले में उन सारे विरोधी कारणों व उत्प्रेरकों से बचने व एहतियात बरतने की ज़रूरत है, जो इस मुहब्बत के स्रोतों को शुष्क या उसको कमजोर करते हैं। भावनायें और अनुभूतियाँ मुहब्बत में उदासीनता, सुन्नत पर अमल करने की ललक में कमज़ोरी और आपको "दाना–ए–सुबुल (रास्तों को अच्छी तरह जानने वाला), ख़त्मुर्रसुल (अंतिम संदेष्टा) मौला–ए–कुल" (सबके सरदार) समझने में हिचक और सीरत व हदीस के अध्ययन से मुँह फेरने तथा असावधानी का कारण बनते हैं। कुर्आन की सूरः हुजरात, फ़तह आदि के गहन अध्ययन और नमाज़ व नमाज़ जनाज़ा में दुरूद व सलात को शामिल किये जाने पर विचार–विमर्श करने में दुरूद की फज़ीलत (महत्व) में आई अनेक आयतों और हदीसों का रहस्य समझने का यह आवश्यक नतीजा निकलता है कि रसूल के बारे में एक मुस्लिम से उससे कुछ अधिक वांछित है जिसको केवल कानूनी और वैधानिक सम्बन्ध कहा जाता है और जो केवल बाहरी इताअत से पूरा हो जाता है, बल्कि वह लेहाज व अदब, मुहब्बत व कृतज्ञता की भावना भी वांछित है जिसके सोते दिल की गहराइयों से निकलते हों, और जो नस–नस में रच बस

www.abulhasanalinadwi.org

गयी हो, इसी भावना को कुर्आन ने "ताज़ीर" (मदद) व "तौकीर" (आदर) कहा है:–

अनुवाद– उसकी मदद (सहायता) करो और उसे बुज़ुर्ग (बड़ा) समझो।

इसकी ज्वलन्त मिसाले गज़व–ए–रजी (रजी नामी युद्ध) के मौके पर हज़रत खुबैब पुत्र अदी और जैद बिन दुसुन्नह के वाक़िए, ग़ज़व–ए–उहद (उहद नामी युद्ध) के मौके पर अबूदुजानह और हज़रत तल्हा के व्यवहार, गज़व–ए–उहद में बनी दीनार की मुसलमान महिला के जवाब, सुल्हे हुदैबिया के मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सहाबा का घनिष्ठ प्रेम और मान–सम्मान में देखी जा सकती हैं। जिस कारण अबू सुफ़ियान (जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे) की जबान से बेझिझक निकला कि "मैने किसी को किसी से इस तरह मुहब्बत करते हुए नहीं देखा, जिस तरह मुहम्मद के साथी, मुहम्मद से मुहब्बत करते हैं।" और कुरैश के सन्देश वाहक उर्वः पुत्र मसऊद सक़फ़ी ने कहा है, मैंने किसी बादशाह की ऐसी इज़्ज़त होते हुए नहीं देखी, जिस तरह मुहम्मद के साथी मुहम्मद की इज़्ज़त करते हैं।"[१]

---

(१) पूरी घटनायें सीरत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जीवन चरित्र) की किताबों में पढ़ी जायें। जैद बिन दुसुंनः को जब कत्लगाह में ले जाया जा रहा था तो अबू सुफियान ने उनसे कहा कि "क्या तुम यह पसन्द करोगे कि मुहम्मद तुम्हारी जगह पर हों, और तुम अपने घर में सुरक्षित हो?" हज़रत जैद ने कहा, "खुदा की कसम मुझे तो यह भी मँजूर नहीं कि मुहम्मद जहाँ हैं वहाँ उनके कोई काँटा भी चुभे। और मैं अपने घर में आराम से बैठा रहूँ। दीनार कबीला की एक मुसलमान महिला के पति, भाई और बाप गज़व–ए–ओहद में शहीद हुए जब उनको इस घटना की सूचना दी गयी, तो उनकी ज़बान से बेइख़्तियार निकला कि यह बताओ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कैसे हैं? लोगों ने कहा कि अल्हमदुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) आप सकुशल हैं। उन्होंने कहा.....

www.abulhasanalinadwi.org

इस रसूल प्रेम से महान इस्लामी पंडितों, सुधारकों, नवीनीकरण करने वाले नेताओं को बड़ा भाग प्राप्त हुआ, जिन्होंने दीन के वास्तविक आत्मा (रूह) को अपने भीतर उतार लिया था और जिनके भाग्य में दीन मिल्लत (धर्म व सम्प्रदाय) के पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण किर्तिमान अंजाम देना था। सच यह है कि इस पाक मुहब्बत के बिना रसूल के तरीके **की पूरी** पैरवी और ख़ुदा व रसूल का आज्ञापालन मुमकिन नहीं! **मुहब्बत** की एक लहर कूड़े करकट को बहा ले जाती और तन–मन में इस तरह दौड़ जाती और रच–बस जाती हैं,

शाखे गुल में जिस तरह बादे सहरगाही का नम।

मुसलमान जो कभी ख़ुदा और रसूल के प्रेम की बदौलत शोलए जव्वालः (आलात–चक्र) थे, उसके बिना सूखी लकड़ी और राख बने हुए हैं:–

बुझी इश्क की आग अन्धेर है,
मुसलमाँ नहीं ख़ाक का ढेर है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व मुहब्बत में क़ौम का कल्याण है।

उम्मतों की तकदीरें, उनमें भेजे गये रसूलों की आज्ञापालन, उनके झण्डे तले जमा होने, उनकी सीरत (आचरण) को अपनाने और मान–अपमान हर हाल में उनसे जुड़े रहने से सम्बन्धित होती है।

........कि मुझे दिखा दो। जब उनकी नज़र पावन चेहरे पर पड़ी तो बोल उठीं, "आपके होते हुए हर मुसीबत हल है।" अबूदुजाना ने अपने को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ढाल बना दिया, और हज़रत अबू तल्हा ने अपने हाथ को ढाल बना दिया यहाँ तक कि वह हरकत व इस्तेमाल के काबिल न रहा (सीरत इब्न हशाम, बुखारी, अलइसाब:)

www.abulhasanalinadwi.org

अतएव कोई उंम्मत तमाम ताक़तों, संसाधनों के साथ युग, संस्कृति, दर्शनशास्त्रों तथा हालात और तरक्कियों के बावजूद कामयाब नहीं हो सकती, जब तक कि वह नबी का अनुसरण, उससे लगाव और उसके बुलावे (दावत) के लिए हर हाल में प्रयास न करे। और जो उम्मत भी इस तरीक़े से हट कर इज़्ज़त ताक़त व प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए अपनी कूटनीति या किसी बड़ी ताक़त की पुश्तपनाही पर भरोसा करती है तो उसका अंजाम अपमान व नाकामी, अन्दरूनी फूट और देर सवेर रूसवाई के अलावा कुछ नहीं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतता) महानता और मानव जाति को इसकी आवश्यकता

छठी सदी ईसवी में विश्वव्यापी स्तरपर यह हालत नज़र आती है कि पूरी मानव जाति आत्म हत्या पर आमादा नहीं कमर कसे हुए है, जैसे खुदकुशी करने की उसने कसम खाई है, सारी दुनिया में आत्म हत्या की तैयारी हो रही है अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में उस दृश्य व स्थिति की जो तस्वीर खींची है उससे बेहतर कोई बड़े से बड़ा चित्रकार, साहित्यकार व इतिहासकार तस्वीर नहीं खींच सकताः–

अनुवाद– *और अल्लाह की उस कृपा को याद करो, कि जब तुम आपस में दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत डाल दी, तो तुम उसकी मेहरबानी से (आपस में) भाई–भाई बन गये, और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुँच चुके थे। तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया।*

(सूरः आलि इम्रान १०३)

हमारे इतिहासकारों और सीरत निगारों (जीवनी लेखकों) से जाहिलियत की. तस्वीर पूरे तौर पर न खिंच सकी। वह न केवल

www.abulhasanalinadwi.org

क्षमादान के योग्य बल्कि हमारे धन्यवाद के पात्र हैं कि साहित्य व **भाषा** का भण्डार साथ नहीं देते। घटना और वस्तु स्थिति इतनी **संगीन**, इतनी नाजुक, इतनी भयावह और इतनी पेचीदा और गम्भीर थी कि लेखनी से उसका चित्रण और भाषा व साहित्स की बड़ी से **बड़ी** कुदरत व सलाहियत (क्षमता) से उसकी व्याख्या सम्भव नहीं। **कोई** इतिहासकार इसका हक कैसे अदा कर सकता है? **जाहिलियत** (अज्ञानता) का दौर जिसमें अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु **अलैहि** वसल्लम का अभ्युदय हुआ, क्या वह एक या दो क़ौमों के पतन **अथवा** नैतिक बिगाड़ की समस्या थी? ख़ाली बुत परस्ती (मूर्ति **पूजन) की** समस्या थी, नैतिक अपराधों की समस्या थी? मदिरा पान, जुआ **बाज़ी**, भोग विलास, अधिकारों के हनन, अनाचार व अत्याचार, **आर्थिक** शोषण, जालिम हुकूमतों, अत्याचारी व्यवस्था और अन्यायपूर्ण क़ानून की समस्या थी? क्या समस्या यह थी कि **किसी** देश में बाप अपनी नवजात बच्ची को **ज़िन्दा** दफ़न कर रहा **था? समस्या** यह थी **कि** मनुष्य मनुष्यता को ख़ाक में **मिला रहा था। समस्या यह** नहीं थी **कि** अरब के कुछ कठोर दिल लोग **अपनी मासूम बच्चियों को** झूठी **शर्म** व लाज से बचने के लिए एक स्वरचित **अत्याचार, परम्परा** के आधार **पर अपने** हाथों ज़िन्दा दफन कर देना चाहते थे। **समस्या यह** थी कि मातृ भूमि अपनी पूरी पीढ़ी को ज़िन्दा दफन करना चाहती थीं। वह युग बीत चुका। अब उसको कैसे लाकर सामने खड़ा कर दिया जायें। वह दौर जिन लोगों ने देखा था, वही इसकी हकीकत (वास्तविकता) को समझते और जानते हैं।

समस्या किसी एक देश व क़ौम की न थी, न किसी एक **भ्रम** की थी। समस्या मानवजाति की किस्मत की थी। समस्या मानव–**जाति** के भविष्य की थी। यदि कोई चित्रकार ऐसा चित्र प्रस्तुत करे **जिसमें**

दिखाया गया हो कि मानव–जाति का प्रतिनिधित्व एक इन्सान कर रहा है, एक सुन्दर मनुष्य, एक मोटा ताजा तन्दुरूस्त इन्सान जो ख़ुदा की कारीगरी का बेहतरीन नमूना है, जिससे आदम का नाम ज़िन्दा और उसका सिलसिला क़ायम है, जिस पर फरिश्ते हसद करते हैं, जो सर्वोत्तम प्राणी है, जिसके सर पर ख़ुदा ने खिलाफत (प्रतिनिधित्व) का ताज रखा है, और जिसकी वजह से यह धरती एक वीराना नहीं, एक आबाद और गुलजार जगह है, इस इन्सान के सामने आग का एक समुद्र है, एक बहुत गहरा गड्ढा है, जिसकी कोई थाह नहीं, वह इन्सान इसमें छलांग लगाने के लिए तैयार खड़ा है, उसके पाँव उठ चुके हैं, ऐसा नज़र आ रहा है कि कुछ ही पलों में वह उसकी अन्धेरों में गायब हो जायेगा। अगर उस दौर की ऐसी तस्वीर खींची जाये तो किसी हद तक उस वस्तु स्थिति का अन्दाज़ा (अनुमान) हो सकता है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय के समय पायी जाती थी। और इसी हक़ीक़त को बयान करने के लिए फरमाया गया है कि:–

अनुवाद– *और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे, ख़ुदा ने तुम्हें उससे बचा लिया।*

(सूरः आलि–इम्रान १०३)

इसी बात को एक हदीस में उदाहरण देकर बयान किया गया है। कहा कि "मेरी उस दावत व हिदायत की मिसाल जिसके साथ मुझे दुनिया में भेजा गया है, ऐसी है जैसे एक व्यक्ति ने आग जलाई, जब उसकी रौशनी आस–पास फैली तो वह परवाने और कीड़े जो आग पर गिरा करते हैं, हर तरफ से उमड़ कर उस में कूदने लगे, इसी तरह से तुम आग में गिरना और कूदना चाहते हो, और मैं तुम्हारी

www.abulhasanalinadwi.org

कमर पकड़ कर तुमको उससे बचाना और अलग करना चाहता हूँ"

(सही बुखारी व मिश्कात भाग–१, पेज–२८)

वास्तव में असल समस्या यही थी कि मानव जाति की नौका को सलामती के साथ, सकुशल पार लगाया जाये। जब इन्सान अपने सही "मूड" में आ जायेगा, जब जीवन में नार्मल (साधारण) हालात पैदा हो जायेंगे, तो उन सब रचनात्मक, कल्याणकारी, ज्ञानमयी साहित्यिक और विकास के प्रयासों और मँसूबों का दौर आयेगा जिनकी योग्यता अनेक इन्सानों और मानवता के शुभ चिन्तकों में पायी जाती है। वास्तव में सारी दुनिया पैग़म्बरों की एहसान मन्द है कि उन्होंने मानव जाति को उन ख़तरों से बचा लिया जो उसके सर पर नंगी तलवार की तरह लटक रहे थे। दुनिया का कोई ज्ञानमयी, रचनात्मक, सुधारात्मक कार्य, कोई दर्शनशास्त्र, कोई विचारधारा उनके एहसान से ख़ाली नहीं। सच पूछिये तो दुनिया अपने अस्तित्व, विकास और जीवन की हक़दारी में पैग़म्बरों ही के प्रति आभारी है। इन्सानों ने अपनी दशा से कई बार यह ऐलान किया कि अब उनकी उपादेयता समाप्त हो गयी और अब वह दुनिया के लिए कोई लाभ बरकत व रहमत और कोई पैगाम और दावत नहीं रखते। उन्होंने अपने खिलाफ खुदा की अदालत में खुद नालिश (शिकायत) की और गवाही दी और वह अपने को बड़ी से बड़ी सज़ा बल्कि मृत्युदण्ड का पात्र साबित कर चुके थे।

जब सभ्यता अपनी सीमाओं से परे निकल जाती है, जब वह नैतिकता को एकदम भुला देती है, जब इन्सान अपनी तुच्छ इच्छाओं और नफ्स (काम) के हैवानी अपेक्षाओं की पूर्ति के अलावा हर मक़सद और हर हकीक़त को भुला देता है, जब उसके पहलू में इन्सान के

www.abulhasanalinadwi.org

दिल के बजाय भेड़िये और चीते का दिल पैदा हो जाता है, जब उसके शरीर में एक फर्जी पेट और एक असीम बुरे काम करने की प्रवृत्ति जन्म लेती है, जब दुनिया पर पागलपन सवार होता है, तो कुदरत उसको सजा देने या उसके पागलपन के नशे को उतारने के लिए नये–नये नश्तर और नये–नये जर्राह पैदा करती है:–

करती है मुलूकियत अन्दाजे जुनूँ पैदा,
अल्लाह के नश्तर हैं तैमूर हो या चँगेज़।

आप मुलूकियत (बादशाहत) के शब्द को सभ्यता से बदल दीजिये कि सभ्यता का बिगाड़ और उसका जुनून, मुलूकियत (बादशाही) के जुनून से ज़्यादा खतरनाक और अधिक व्यापक होता है। एक कमजोर सा मरीज अगर पागल हो जाता है तो मुहल्ले की नींद हराम कर देता है, और पूरा मुहल्ला अज़ाब से ग्रस्त हो जाता है। आप कल्पना कीजिये कि जब मानव–जाति पागल हो जाये, जब इन्सानियत का मिज़ाज ख़राब हो जाये तो इसका क्या इलाज है। जाहिलियत में सभ्यता सिर्फ बिगाड़ी ही नहीं थी उसमें सड़ाहिन्द (तअफ्फुन) पैदा हो गयी थी, उसमें कीड़े पड़ गये। मानव–जाति का शिकारी बन गया था। उसको किसी इन्सान की जाँकनी, किसी घायल की तड़प और किसी पीड़ित की कराह में वह मज़ा आने लगा था जो प्याले व सुराही में, और दुनिया के स्वादिष्ट खाने और सुन्दर दृश्य में नहीं आता था। आप रोम का इतिहास पढ़ें। जिसकी विजय, शान्ति–व्यवस्था और विधि–रचना और सभ्यता के दुनिया में डँके बजे। योरोप के इतिहासकार उसके बारे में लिखते हैं कि "रोम वासियों के लिए सबसे अधिक रोचक और मस्त कर देने वाला दृश्य वह होता था जब आपस में तलवार के वार या खूँख्वार जानवरों की लड़ाई में पराजित और घायल

www.abulhasanalinadwi.org

ग्लैडियेटर जाँकनी की तकलीफ से तड़प रहा होता, उस समय रोम के रईस और ज़िन्दा दिल तमाशाई इस आनन्ददायी दृश्य को देखने के लिए एक दूसरे पर गिरे पड़ते, और पुलिस के लिए भी उनको कन्ट्रोल में रखना सम्भव न होता।"

हिस्ट्री आफ योरोपियन मारल्स–लेकी (तारीखे अख़लाक यूरोप)

रूमी काल की जल्लादी, जिसमें इन्सान को जानवरों से लड़ने पर मजबूर किया जाता था, इन्सान के पत्थर दिल होने की बदतरीन मिसाल पेश करती है। लेकिन, इन खेलों की लोकप्रियता बयान करते हुए लिखता है।

"जल्लादी की यह लोकप्रियता इस लेहाज से कदापि आश्चर्यजनक नहीं कि मनोरंजन के जितने दृश्य इसमें आकर एकत्र हो गये थे उतने किसी दूसरे खेल तमाशे में न थे। लक व दक अखाड़ा, रईस लोगों की जर्क व बर्क अच्छी–अच्छी पोशाकें, तमाशाइयों की भीड़, इतनी बड़ी भीड़ अपेक्षित खामोशी, अस्सी हजार ज़बानों से एक साथ 'शाबाश' का निकलना, जिसकी आवाज़ से शहर गूँज पड़ता, लड़ाई का घड़ी–घड़ी रंग बदलते रहना, अद्वितीय साहस, इनमें से हर चीज़ प्रभावित करने के लिए काफी है।

इन अत्याचारी खेल तमाशों को रोकने के लिए आदेश जारी किये गये, लेकिन यह बाढ़ इतनी जोर पर थी कि कोई बन्धा उसे रोक नहीं सकता था।"[१]

अतएव जाहिलियत (अज्ञानता) की असल समस्या यह थी कि पूरी ज़िन्दगी की चूल अपनी जगह से हट गयी थी, बल्कि टूट गई

[१] हिस्ट्री आफ योरोपियन मारल्स–लेकी (तारीखे अख़लाक यूरोप पृष्ठ २३०, अनुवाद मौनाला अब्दुल माजिद दरयाबादी)

www.abulhasanalinadwi.org

थी, इन्सान, इन्सान नहीं रहा था। इन्सानियत का मुकदमा अपने अंतिम चरण में ख़ुदा की अदालत में पेश था। इन्सान अपने ख़िलाफ गवाही दे चुका था। इस हालत में ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया में भेजा और कहा गया–

***अनुवाद–** और 'हमने' आपको दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है।*
(सूरः अल्–अंबिया १०७)

हक़ीक़त यह है कि हमारा यह दौर बल्कि क़यामत तक पूरा दौर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय, दावत और सदप्रयासों के हिसाब में है। आपका पहला काम यह था कि आपने उस तलवार को जो मानव–जाति के सर पर लटक रही थी और कोई घड़ी थी कि उसके सर पर गिर कर उसका काम तमाम कर दे, उस तलवार को हटा लिया। और उसको वह उपहार दिये जिन्होंने उसको नया जीवन, नया हौसला, नई ताक़त, नई इज़्ज़त और सफलता की नई मँजिल प्रदान की और उनकी बरकत से इन्सानियत, सभ्यता व संस्कृति, कला, कौशल, ज्ञान, आध्यात्म व निष्ठा और इन्सानियत की रचना का एक नया दौर शुरू हुआ। हम यहाँ पर आपके द्वारा दी गई उन चीज़ों का उल्लेख कते हैं, जिन्होंने मानव–जाति के मार्गदर्शन व सुधार तथा मानवता के विकास में बुनियादी किरदार अदा किया और जिनकी बदौलत एक नई दुनिया वजूद में आई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सबसे बड़ा उपकार यह है कि आपने दुनिया को तौहिद (एकेश्वरवाद) के अक़ीदा (विश्वास) का वरदान दिया। इससे अधिक क्रान्तिकारी, जीवनदायी और चमत्कारिक अक़ीदा (विश्वास) दुनिया को न पहले कभी मिला है और न क़यामत तक कभी मिल सकता है, यह इन्सान जिसको शायरी, फलसफः और

www.abulhasanalinadwi.org

सियासत में बड़े—बड़े दावे हैं, और जिसने क़ौमों, मुल्कों को बार—बार गुलाम बनाया, चारों तत्वों पर अपनी हुकूमत चलाई, पत्थर में फूल खिलाये और पहाड़ों का जिगर काट कर दरिया बहाये और जिसने कभी—कभी ख़ुदाई का भी दावा किया, यह अपने से कहीं अधिक विवश व हीन, बेहिस व हरकत, बेजान व मुर्दा और कभी—कभी स्वयं अपनी बनाई हुई चीज़ों के सामने झुकता था। यह पहाड़ों, नदियों, पेड़ों, जानवरों, आत्माओं व शैतानों तथा कुदरत के मज़ाहिर (बाह्य रूपों) ही के सामने नहीं बल्कि कीड़े—मकोड़ों तक के सामने सिर नवाता था और उसकी पूरी ज़िन्दगी उन्ही से भय व आशा और इन्हीं खतरों में बसर होती थी, जिसका नतीजा कायरता, मानसिक तनाव, अंध विश्वास और अविश्वास था। आपने उसको ऐसे विशुद्ध, सहज, जीवनदायी तौहिद के अक़ीदा की शिक्षा दी जिससे वह खुदा के अलावा, जो सृष्टा है, हर एक से आज़ाद निडर और निश्चिन्त हो गया। उसमें एक नई शक्ति, नया हौसला, नया शौर्य और नयी वहदत (एका) पैदा हुई, उसने सिर्फ ख़ुदा को असली मालिक, जरूरतों को पूरा करने वाला और नफा—नुकसान पहुँचाने वाला समझना शुरू किया इस नयी खोज से उसकी दुनिया बदल गयी। वह हर प्रकार के बेजा खौफ और हर तरह के तनाव से सुरक्षित हो गया। वह ख़ुदा के अलावा हर प्रकार की गुलामी से छुट्टी पा गया। उसको अनेकता में एकता दिखने लगी। वह अपने को सारी सृष्टि से उत्तम, सारी दुनिया का सरदार और व्यवस्थापक और सिर्फ ख़ुदा का अधीन और आज्ञापालक समझने लगा। इसके नतीजे में इन्सान की प्रतिष्ठा क़ायम हुई जिससे पूरी दुनिया वंचित हो चुकी थी।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय के बाद हर तरफ से तौहिद के अक़ीदो की गूँज आने लगी। दुनिया के सारे

www.abulhasanalinadwi.org

दर्शनशास्त्रों और विचारधाराओं पर उसका प्रभाव पड़ा कहीं कम कहीं ज़्यादा। वह बड़े–बड़े धर्म जिनकी नसों में शिर्क और अनेक ख़ुदाओं का अक़ीदा (विश्वास) रच बस गया था किसी न किसी लै में ऐलान करने पर मजबूर हुए कि ख़ुदा एक है और वह अपने बहुदेववादी विश्वासों की व्यख्या पर मजबूर हुए और उनकी ऐसी दार्शनिक व्याख्या करने लगे जिससे उन पर शिर्क (बहुदेववाद) का इल्ज़ाम न आये और वह इस्लाम के तौहीद के अक़ीदा (विश्वास) से कुछ न कुछ मिलता हुआ नज़र आये। उनको शिर्क का इकरार करने में शर्म और झिझक महसूस होने लगी। और सारी मुशरिकाना (बहुदेववादी) व्यवस्था, सोच व विश्वास, हीनता की भावना से ग्रसित हुए। उस महान उपकारी का महान उपकार यह है कि उसने तौहिद की नेअमत दुनिया को प्रदान की।

आपका दूसरा महान उपकार मानव–एकता की परिकल्पना है। इन्सान क़ौमों और बिरादरियों ज़ात–पात और ऊँच–नीच के वर्गों में बँटा हुआ था। और उनके बीच इन्सानों और जनवरों, आकाओं और गुलामों और बन्दा व ख़ुदा का फर्क़ था, वहदत व मसावाता (एकता व समरसता) की कोई परिकल्पना न थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सदियों के बाद पहली बार यह क्रान्ति और आश्चर्यजनक ऐलान किया–

अनुवाद– *"लोगो! तुम्हारा पालनहार एक है और तुम्हारा बाप भी एक है, तुम एक आदम की संतान हो और आदम मिट्टी से बने थे। अल्लाह के नज़दीक तुममें से सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। किसी अरबी को अजमी (गैर–अरब) पर फजीलत (उत्कृष्टता) नहीं मगर तकवा (अल्लाह का डर और लेहाज) के बिना पर।"*

(कनजुल–अमाल)

www.abulhasanalinadwi.org

यह वह शब्द है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आख़िरी हज में एक लाख चौबीस हजार लोगों के महासम्मेलन में फरमाये थे। इनमें दो वहदतों (एकताओं) का ऐलान किया गया है, और यही वह दो वास्तविक मजबूत बुनियादें हैं जिन पर मानव जाति की वास्तविक एकता का महल बनाया जा सकता है। और जिसके साया के नीचे इन्सान को अमन चैन हासिल हो सकता है। और वह सहयोग और सहायता के सिद्धान्त मानवता के नव–निर्माण का काम अंजाम दे सकते हैं। यह दो वहदतें क्या हैं– एक मानव–जाति के खालिक़ (सृजक) की वहदत, और एक इन्सानी नस्ल के पितामह की वहदत्। इस तरह हर इन्सान दूसरे इन्सान से दोहरा रिश्ता रखता है, एक आध्यात्मिक और हकीकी तौर पर, वह यह कि सब इन्सानों और जहानों का रब एक है। दूसरा शारीरिक तौर पर, वह यह कि सब इन्सान एक बाप की औलाद हैं।

जिस समय यह ऐलान किया गया था, उस समय दुनिया इसको सुनने के मूड में न थी। यह ऐलान उस समय की दुनिया में एक भूचाल से कम न था। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो सोपानवार सहन योग्य हो जाती हैं, बिजली का यही हाल है कि इसको पर्दो में रखकर छू लेते हैं। लेकिन बिजली के करेन्ट को कोई डायरेक्ट छू ले तो शरीर में उसका करेन्ट दौड़ जाता और उसका काम तमाम कर देता है। आज ज्ञान–विज्ञान और मानव चिन्तन के विकास की उन मंजिलों ने जो इस्लाम की दावत, इस्लामी समाज की स्थापना, सुधारकों की कोशिशों से तय हुई उस क्रान्तिकारी ऐलान को दैनिक जीवन की हक़ीक़त बना दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के स्टेज से लेकर, जिसने मानवाधिकार चार्टर प्रकाशित किया, प्रत्येक लोकतंत्र तथा हर संस्था की तरफ़ से इन्सानी हुकूक और समानता की घोषणा

www.abulhasanalinadwi.org

की जा रही है और कोई इसको सुन कर आश्चर्य चकित नहीं होता। लेकिन एक जमाना था जब अलग–अलग क़ौमों और खानदानों के माफ़ोकल बशर (मनुष्य की शक्ति से बाहर की चीज) होने का अक़ीदा क़ायम था और बहुत सी नस्लों और ख़ानदानों का नसब नामा (शजरा) ख़ुदा से और सूरज चाँद से मिलाया जा रहा था। कुर्आन ने यहूदियों और ईसाइयों का कथन नक़ल किया है कि हम ख़ुदा की लाडली और चहेती औलाद की तरह हैं। मिस्र के फिरऔन अपने को सूरज देवता का अवतार कहते थे। हिन्दुस्तान में सूर्य वँशी और चन्द्रवँशी खानदान मौजूद थे। ईरान के बादशाहों को जिन की उपाधि किस्रा (खुसरो) हुआ करती थी, उसका दावा था कि उनकी नसों में ख़ुदाई ख़ून है। ईरानवासी उन्हें इसी नज़र से देखते थे। उनकी आस्था थी कि इंस पैदाइशी बादशाहों की ख़मीर में कोई पवित्र आसमानी चीज़ शामिल है। कियानी वँशज के अन्तिम ईरानी सम्राट यज़्दगर्द का नाम बताता है कि वह और ईरानी उनको ख़ुदा के कितने करीब समझते थे।

चीनी अपने बादशाह को आसमान का बेटा समझते थे। उनका अक़ीदा (विश्वास) था कि आसमान नर और जमीन मादा है। इन दोनों के मेल से ब्रह्माण्ड की रचना हुई और बादशाह इस जोड़े का पहला बेटा है। अरब अपने अलावा सारी दुनिया को गूँगा और बेज़बान (अजम) कहते थे उनका सबसे विशिष्ट क़बीला क़ुरैश आम अरबों से भी अपने को उत्कृष्ट समझता था और इसी एहसासबरतरी में हज के ऐसे सार्वजनिक सम्मेलन में भी अपनी विशिष्टता को क़ायम रखता था। कुर्आन ने इस माहौल में ऐलान किया:–

*अनुवाद– ऐ लोगो! **हमने तुमको एक ही मर्द** और एक ही औरत से **पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और कबीलों** का रूप दिया, ताकि तुम*

www.abulhasanalinadwi.org

एक–दूसरे को पहचानों, अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे इज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (परहेज़गार) है।

(सूरः अल्–हुजुरात १३)

आपका तीसरा महान उपकार मानव सम्मान की वह इस्लामी परिकल्पना है जो इस्लाम की भेंट है। इस्लाम के उदयकाल में इन्सान से अधिक अपमानित कोई नहीं था। उसका अस्तित्व बे क़ीमत होकर रह गया था। कभी–कभी तो पालतू जानवर, कुछ "पवित्र" हैवानों, कुछ वृक्ष, इन्सान से कहीं अधिक क़ीमती और माननीय थे। उनके लिए निःसंकोच इन्सानों की जानें ली ज़ा सकती थीं, और इन्सानों के ख़ून और गोश्त के चढ़ावे चढ़ाये जा सकते थे। आज भी कुछ बड़े–बड़े विकसित देशों में इसके नमूने देखे जा सकते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्सानों के मन–मस्तिष्क में यह छाप बैठा दी कि इन्सान इस सृष्टि का सबसे अधिक क़ीमती, माननीय प्रेम और हिफाजत का पात्र है। आपने मनुष्य को ऐसी प्रतिष्ठा दी कि उससे ऊपर सिर्फ सृष्टि के रचयिता की हस्ती रह जाती है। कुर्आन ने ऐलान किया कि वह ख़ुदा का नायब है। सारी दुनिया उसी के लिए पैदा की गई–

अनुवाद– *वह (अल्लाह)जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की तमाम चीज़ों को पैदा किया।*

(सूरः अल–बक़रह २९)

अनुवाद– *और 'हमने' आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और उनको थल और जल में सवारी और अच्छी पाक रोज़ी दी और अपनी बहुत सी मख़्लूक सृष्टि पर फ़जीलत (श्रेष्ठता) दी।*

(सूरः इस्रा ७०)

www.abulhasanalinadwi.org

इससे अधिक उसकी प्रतिष्ठा क्या हो सकती है कि साफ कह दिया गया कि इन्सान ख़ुदा का कुँबा (परिवार) है और ख़ुदा को अपने बन्दों में सबसे अधिक प्रिय वह है जो उसके कुटुम्ब के साथ अच्छा व्यवहार करे और उसको आराम पहुँचाये।

हदीसे कुदसी[1] में फरमाया कि "अल्लाह कियामत के दिन कहेगा ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ था तू मुझे देखने नहीं आया बन्दा कहेगा, परवरदिगार! मैं तेरी अयादत (बीमार को देखने जाना) क्या कर सकता हूँ? तू तो सारे जहानों का रब है। इरशाद होगा, क्या तुझे ज्ञात नहीं हुआ। मेरा अमुक भक्त बीमार पड़ गया था, तू उसे देखने को नहीं गया। तुझे मालूम नहीं था कि अगर तू उसकी अयादत करता, तो तू मुझे उसके पास पाता। फिर इरशाद होगा, ऐ आदम के बेटे! मैंने तुझसे खाना माँगा था, तूने मुझे खाना नहीं दिया। बन्दा कहेगा, तू तो सारे जहानों का रब है। इरशाद होगा, क्या तुझे इसकी जानकारी नहीं हुई कि मेरे अमुक बन्दे ने तुझसे खाना माँगा तूने उसे नहीं खिलाया। क्या तुझे इसकी ख़बर न थी कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता? ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझसे पानी माँगा, तूने मुझे पानी नहीं पिलाया। बन्दा कहेगा, ऐ रब! मैं तुझे कैसे पानी पिला सकता हूँ, तू तो सारे जहानों का पालनहार है? इरशाद होगा तुझसे मेरे फलाँ बन्दे ने पानी माँगा था, तूने उसे पानी नहीं दिया। तुझे इसका पता नहीं चला कि अगर तू उसको पानी पिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता?(सही मुस्लिम)

जो धर्म एक ईश्वर को मानता हो, क्या इन्सानियत की बुलन्दी का इससे बढ़कर उसमें ऐलान पाया जा सकता है? और क्या दुनिया

[1] अल्लाह की बात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शब्दों में

www.abulhasanalinadwi.org

के किसी मज़हब और फलसफः में इन्सान को यह मक़ाम दिया गया है? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया,

"रहम करने वालों पर रहमान की रहमत होती है। अगर तुम धरती वालों पर रहम खाओगे तो वह जो आसमान पर है वह तुम पर रहम करेगा।"(अबू दाऊद)

करो मेहरबानी तुम अहले जमीं पर,
खुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर।

(हाली)

आप गौर कीजिये कि इन्सानी एकता की छाप दिलों पर बिठाने के लिए जब यह प्रयास नहीं किया गया था, उस समय इन्सान का क्या हाल रहा होगा? एक इन्सान की तुच्छ इच्छा की क़ीमत हजारों इन्सानों से अधिक थी। बादशाह उठते थे और मुल्कों के मुल्कों का सफाया कर देते थे। सिकन्दर उठा और जैसे कोई कबड्डी खेलता है, हिन्दुस्तान तक चला आया और क़ौमों तथा तहजीबों के चिराग गुल कर दिये। सीज़र उठा और इन्सानों का इस तरह शिकार खेलना शुरू किया जैसे जँगली जानवरों का शिकार खेला जाता है। हमारे ज़माने में भी दो-दो विश्व युद्ध हुए जिन्होंने लाखों इन्सानों को मौत के घाट उतार दिया और यह सिर्फ राष्ट्रीय गर्व, राजनीतिक चौधराहट, सत्ता का लोभ या व्यापारिक मंडियों पर कब्जा करने की भावना का नतीजा था। इकबाल ने सच कहा:-

अभी तब आदमी सैदे ज़बून-ए-शहर यारी है,
क़यामत है कि इन्साँ नौए इन्साँ का शिकारी है।

चौथा इन्क़लाबी कारनामा यह हे कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु

www.abulhasanalinadwi.org

अलैहि वसल्लम के अभ्युदय के समय मानव जाति के अधिकांश लोगों पर मानव स्वभाव से बदगुमानी और ख़ुदा की रहमत से मायूसी व निराशा का एक आम माहौल था। इस मानसिक दशा के पैदा करने में ऐशिया के कुछ प्राचीन धर्म और मध्य पूर्व तथा योरोप की परिवर्तित ईसायी धर्म ने समान रोल अदा किया था। हिन्दुस्तान के धर्मो ने आवागमन के दर्शन शास्त्र के द्वारा जिसमें इन्सान के इरादा व इख़्तियार को कतई दखल नहीं है, और जिसके अनुसार हर इन्सान को अपने पहले जन्म के कर्मो और गलतियों की सज़ा भुगतनी ज़रूरी है। और ईसाइयत ने इन्सान के पैदाइशी गुनहगार (पापी) होने और इसके लिए हज़रत मसीह के कफ्फारः (प्रायश्चित) बनने की जरूरत के अक़ीदा (विश्वास) के नतीजे में उस समय के सभ्य संसार के लाखों करोड़ों व्यक्तियों को जो इन धर्मो के अनुयायी थे, अपने आपसे बदगुमानी और अपने भविष्य और ख़ुदा की रहमत से निराशा से ग्रसित कर दिया था।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी ताक़त व सफाई से ऐलान किया कि मानव स्वभाव एक सादा तख्ती (स्लेट) की तरह है जिस पर पहले से कोई तहरीर लिखी नहीं है, इस पर बेहतर से बेहतर तहरीर लिखी जा सकती है। इन्सान अपने जीवन का स्वयं शुभारम्भ करता है और अपने अच्छे या बुरे कर्म से अपना लोक–परलोक बनाता या बिगाड़ता है। वह किसी दूसरे के कर्म का ज़िम्मेदार या उत्तरदायी नहीं। क़ुर्आन ने बार–बार ऐलान किया कि आख़िरत (परलोक) में कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकेगा, और यह कि उसके हिस्से में उसी की कोशिश और उसके नतीजे आने वाले हैं। इन्सान में उसकी कोशिश का नतीजा ज़रूर ज़ाहिर होगा और उसका उसको भरपूर बदला मिलेगा।

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *यह कि 'कोई' व्यक्ति दूसरे (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा, और यह कि इन्सान को वही मिलता है, जिसके लिए उसने कोशिश की, और कि उसकी कोशिश देखी जाएगी, फिर उसको पूरा–पूरा बदला दिया जाएगा।*

(सूरः अंनज्म ३८/४१)

इस ऐलान से इन्सान का अपनी प्रवृत्ति और अपनी क्षमताओं पर वह आत्म विश्वास बहाल हो गया जो बिल्कुल विचलित होकर डगमगा गया था। वह नये संकल्प और विश्वास तथा उत्साह के साथ अपनी और इन्सानियत की तकदीर चमकाने और अपना भाग्य जगाने के सफर में सक्रिय हो गया।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुनाहों और भूल–चूक व गल्तियों को एक अस्थायी हालत करार दिया, जिसमें इन्सान कभी–कभी अपनी नादानी, अदूर दृष्टि और काम–लोभ व शैतान के उकसाने से लिप्त हो जाता है। नेक स्वभाविकता, लज्जा इन्सान की प्रवृत्ति का असल तकाजा और इन्सानियत का जौहर है। अपनी गलती मांगना, उस पर पछताना, खुदा के सामने रो–धो कर अपने कुसूर को माफ करा लेना, और आगे ऐसी गलती न करने का इरादा करना, इन्सान की शराफत और आदम की विरासत है। आपने दुनिया के निराश व टूटे दिल और गुनाहों के दलदल में गले–गले डूबे हुए इन्सानों पर तौबा का ऐसा दरवाजा खोला और इसका इस जोर शोर से प्रचार प्रसार किया कि आपके इस विभाग का दोबारा ज़िन्दा करने वाला कहना सही होगा। इसी आधार पर आपके नामों में एक नाम 'नबी उत्तौबह (तौबा का पैगम्बर) भी है। आपने तौबा को एक मजबूरी की बात के तौर पर पेश नहीं किया, बल्कि आपने उसके

www.abulhasanalinadwi.org

मर्तबा को इतना बुलन्द किया कि वह आला दर्जे की इबादत और ख़ुदा को राज़ी करने का ऐसा साधन बन गया कि उस पर बड़े–बड़े अल्लाह (ईश्वर) के भक्त रश्क करने लगे।

कुर्आन का यह ऐलान गुनहगार बन्दों के हक में ख़ुदा के रहीम व करीम (कृपालू व दानशील) होने के साथ उनका सच्चा कद्रदाँ होने की तरफ इशारा करता है:–

अनुवाद– (ऐ नबी) कह दीजिए "ऐ मेरे वह बन्दो! जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की, अल्लाह की रहमत (कृपा) से मायूस (निराश) न हों, अल्लाह सभी गुनाहों को माफ़ कर देता है। वह बड़ा क्षमादाता, कृपालू है।"

(सूरः अज़्ज़ुमर ५३)

एक दूसरी आयत में कहा गया–

अनुवाद– और अपने रब (पालनहार) की माफ़ी और उस जन्नत (स्वर्ग) की ओर दौड़ो, जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन जैसा है, जो डरने वालों के लिए तैयार की गई है। जो खुशहाली और तंगी हर हाल में खर्च करते हैं, और गुस्से को रोकते हैं और लोगों को माफ़ करते हैं और अल्लाह नेक लोगों को पसंद करता है। और यह कि जब वे कोई खुला गुनाह या अपने आप पर ज़ुल्म कर लेते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं और वे अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं, और अल्लाह के अलावा कौन है जो गुनाहों को माफ़ कर सके, और जानते बूझते वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते, उनका बदला उनके रब की ओर से मग़्फ़िरत (क्षमादान) है और ऐसे बाग़ है जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और क्या ही अच्छा बदल है (अच्छे) अमल करने वालों को।

(सूरः आलि–इम्रान १३३–१३६)

www.abulhasanalinadwi.org

इससे भी आगे बढ़कर सूरः तौबा में कहा गयाः—

अनुवाद— *तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द (प्रशंसा) करने वाले, रोजा रखने वाले (मिःसंबंध) रुकूअ़ करने वाले, सज्दा करने वाले, भलाई का हुक्म करने वाले, और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) ईमान वालों को (जन्नत की) खुशख़बरी सुना दीजिए।*

(सूरः अत्तौबा ११२)

इस प्रतिष्ठा की एक रौशन मिसाल यह है कि जब कुर्आन की ज़बान से उन तीन सहाबियों की तौबा की स्वीकार्यता का ऐलान किया गया जो गज़व—ए—तबूक के नाजुक मौके पर (जिसमें सम्मिलित होना अत्यावश्यक था) बिना किसी उचित कारण के मदीना में रहकर बड़ी कोताही की थी, तो उनका उल्लेख करने से पहले खुद पैगम्बर और उन मुहाजिरीन (शरणार्थियों) व अन्सार (सहायकों) का उल्लेख किया गया जिनसे इस मौके पर कोई कोताही नहीं हुई थी ताकि इन तीन पीछे रह जाने वालों को अपने अकेले और पसमान्दा (पिछड़ा) होने का एहसास न हो, और यह कि इन पर कोई उंगुली न उठा सके। और इन पर और क़यामत तक कुर्आन के पढ़ने वालों पर यह बात साफ हो जाये कि इनकी असल जगह और असल गिरोह यही सच्चे लोग, अन्सार व मुहाजिरीन के प्रथम पंक्ति के लोग हैं। सूरः तौबः में कहा—

अनुवाद— *बेशक अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अन्सार पर भी, बावजूद इस के कि उनमें से एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे (अर्थात—कुटिलता की ओर झुक गये थे) मुश्किल की घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर खुदा ने उन पर रहमत की नज़र डाली।*

www.abulhasanalinadwi.org

बेशक वह उनके हक़ में बड़ा शफ़ीक़ (करूणामय), रहम वाला है। और उन तीनों पर भी जिनका मामला मुलतवी किया गया था, यहाँ तक कि जब धरती विस्तृत होते हुए भी उन पर तंग हो गई और उनकी जान उन पर भारी हो गई और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह से बचने के लिए उसके सिवा कहीं पनाह (शरण) नहीं मिल सकती, फिर ख़ुदा ने उन पर रहम किया ताकि वे पलट आएं, बेशक अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला रहम वाला है। (सूरः अत्तौबः ११७–११८)

इसके अलावा एक नियम के तौर पर इसका ऐलान किया कि अल्लाह की रहमत (कृपा) हर चीज़ पर हावी है और ग़ज़ब गुस्सा व जलाल पर ग़ालिब हैः–

अनुवाद– *मेरी रहमत हर चीज पर छाई हुई है।*

(सूरः अल्–अअ़राफ १५६)

हदीसे कुदसी में है, मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़कर है।

कुर्आन ने निराशा को भी कुफ्र और जिहालत का पर्याय करार दिया है। एक जगह एक पैगम्बर (हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम) की ज़बान से कहलवाया गया–

अनुवाद– *अल्लाह की रहमत से तो काफ़िर ही मायूस होते हैं।*

(सूरः यूसुफ ८७)

दूसरी जगह एक दूसरे पैग़म्बर (हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम) का कथन नक़्ल किया गया–

अनुवाद– *अपने 'रब' की रहमत (कृपा) से पथ भ्रष्टों के अतिरिक्त निराश कौन हो सकता है?* (सूरः हिज्र ५६)

www.abulhasanalinadwi.org

इस प्रकार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौबा की फज़ीलत (प्रतिष्ठा) और खुदा की रहमत (कृपा) की विशालता का ऐलान करके डरी और सहमी इन्सानियत को, जो यहूदियों व ईसाइयों की देन थी, नई ज़िन्दगी का पैगाम दिया। उसके निराश और दुखे दिल में नई जान डाली, उसे तसल्ली दी और उसे धूल ग्रसित दशा से उठा कर मान–सम्मान और आत्मविश्वास का वरदान दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पाँचवा महान अविस्मर्णीय उपकार तथा एक अमूल्य उपहार दीन व दुनिया की वहदत (एकता) की परिकल्पना और यह क्रान्तिकारी सीख है कि इन्सान के कर्म व आचरण और उनसे पैदा होने वाले परिणामों की निर्भरता इन्सान की मानसिक दशा, कर्म के कारकों और उसके उद्देश्य पर है जिसको शरीअत की ज़बान में "नीयत" कहते हैं। उसके नज़दीक न कोई चीज़ "दुनिया" है और न कोई चीज़ "दीन" उसके नज़दीक खुदा की रजा की चाहत, निष्ठा और उसके आज्ञापालन की भावना व इरादों से बड़े से बड़ा दुनियावी कार्य, यहाँ तक कि हुकूमत, जँग, आनन्द, भोग, मेहनत–मजदूरी, जायज़ तफ़रीह का साधन, दाम्पत्य जीवन, सब उच्च कोटि की इबादत व आराधना, अल्लाह (ईश्वर) के सानिध्य का साधन, विलायत (परम भक्ति) तक पहुँचने का माध्यम और दीन बन जाते हैं। इसके विपरीत बड़ी से बड़ी इबादत और दीनी काम जो खुदा की प्रसन्नता से ख़ाली हो, ख़ालिस दुनिया और ऐसा कर्म गिना जायेगा जिस पर कोई सवाब (पुण्य) और बदला नहीं है।

प्राचीन धर्मों ने जीवन को दो ख़ानों (दीन व दुनिया) में बाँट दिया था एक दीनदार दूसरे दुनियादार लोग, जो न केवल एक दूसरे से जुदा थे और उनके बीच एक दुराव था बल्कि वह एक दूसरे से

www.abulhasanalinadwi.org

संघर्षरत थे। उनके नज़दीक दीन व दुनिया में खुला विरोध और घोर द्वेष था। जिसको इनमें से किसी एक से मेलजोल पैदा करना हो, उसको दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद और ऐलान जंग करना ज़रूरी था। कोई इन्सान एक समय में इन दोनों नवकाओं में संवार नहीं हो सकता था। रोज़ी-रोटी कमाना गफ़लत और ख़ुदा को भूले बिना, हुकूमत धार्मिक व नैतिक शिक्षाओं की अनदेखी किये बिना और दीनदार (धर्मिक) बननां दुनिया छोड़े बिना सोचा भी नहीं जा सकता था। ज़ाहिर है कि इन्सान की प्रवृत्ति में आराम तलबी और आनन्द है। धर्म की ऐसी परिकल्पना जिसमें दुनिया के किसी जायज लाभ, तरक्की और सरबुलन्दी, ताक़त और हुकूमत की गुँजाइश न हो बहुसंख्यकों के लिए स्वीकार्य नहीं। नतीजा यह हुआ कि दुनिया के सभ्य, बुद्धिमान, योग्य और व्यवहारिक इन्सानों की बड़ी तादद ने अपने लिये "दीन" के बजाये "दुनिया" को चुना और उसने इस पर अपने को राजी कर लिया। यह हर प्रकार की धार्मिक उन्नति से निराश होकर दुनिया की प्राप्ति और उसकी तरक्की में लग गयी। दीन व दुनिया के इस विरोधाभास को एक मज़हबी हक़ीक़त समझ कर इन्सानों के अनेक वर्गों ने आम तौर पर मज़हब को छोड़ दिया। राजनीति और सरदारी ने मज़हब के प्रतिनिधि चर्च से बग़ावत की और अपने को इसकी हर पाबन्दी से आज़ाद कर लिया। इन्सान "बेजंजीर हाथी" और समाज "बे नकेल ऊँट" होकर रह गया। दीन व दुनिया की इस दुई और दीनदारों तथा दुनियादारों की इस प्रतिद्वन्दिता ने न सिर्फ यह कि मज़हब व नैतिकता के असर का सीमित व कमज़ोर और मानव जीवन और मानव-समाज को उसकी बरकत व रहमत (बढ़ोत्तरी व कृपा) से वंचित कर दिया। बल्कि उस इल्हाद (दीन से फिर जाना) व लादीनियत (अधर्मता) का दरवाज़ा खोला जिसका सबसे पहले योरोप

www.abulhasanalinadwi.org

शिकार हुआ, फिर दुनिया की दूसरी क़ौमें, जो योरोप की विचारधारा अथवा सत्ता के प्रभाव में आयीं इससे प्रभावित हुई कोई कम, कोई अधिक वर्तमान संसार की वस्तुस्थिति जिसमें मज़हब व अख़लाक़ का पतन और भोग विलास अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है, इसी दीन व दुनिया के भेद का नतीजा है।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह महानतम चमत्कार और इन्सानियत के लिए महानतम भेंट आपकी सारे जहानों के लिए रहमत होने का मज़हर (रूप) है कि आप पूरे तौर पर रसूले वहदत (एकता के दूत) हैं और एक साथ "बशीर" (खुशख़बरी देने वाला) और "नजीर" (डराने वाला) हैं। आपने दीन व दुनिया के विरोधाभास के नजरिया (दृष्टिकोण) को ख़त्म करके पूरी ज़िन्दगी को इबादत में और भूतल को एक विशाल इबादतगाह (पूजा स्थल) में बदल दिया। दुनिया के इन्सानों को संघर्षरत कैम्पों से निकाल कर सद्कर्म, जनसेवा और अल्लाह की प्रसन्नता हासिल करने के एक ही मोर्चे पर खड़ा कर दिया। यहाँ दुनिया के पहनावे में दरवेश (सन्त), शाही जुब्बः में फ़क़ीर व ज़ाहिद, तलवार और तस्बीह के एक साथ रखने वाले, रात के इबादत गुजार और दिन के घुड़सवार नज़र आयेंगे। और उनको इसमें किसी प्रकार का विरोधाभास महसूस नहीं होगा।

छठी क्रान्ति यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय (बेअसत) से पहले इन्सान अपने लक्ष्य से बेख़बर था। उसको याद नहीं रहा था कि उसको कहाँ जाना है? उसकी क्षमताओं का असल मैदान और उसकी कोशिशों का असल निशाना क्या है? मनुष्य ने कुछ अस्पष्ट लक्ष्य और अपनी कोशिशों के लिए कुछ छोटे—छोटे

www.abulhasanalinadwi.org

दायरे बना लिये थे, उनमें उनकी क्षमतायें खर्च हो रही थीं। कामयाब और बड़ा इन्सान बनने का मतलब सिर्फ यह था कि मैं धनी बन जाऊँ, शक्तिमान और हाकिम बन जाऊँ। बड़े से बड़े इलाके (क्षेत्र) और अधिक से अधिक इन्सानों पर मेरी हुक्मरानी हो। लाखों आदमी ऐसे थे जिनकी कल्पना की उड़ान, साज–सज्जा, रंग व राग, लज्जत व स्वाद, चौपायों की नकल से बुलन्द नहीं होता था। हजारों इन्सान ऐसे थे जिनकी सारी बुद्धि अपने समय के दौलतमन्दों और तक़तवरों तथा दरबारों में खुशामद या बेमक़सद शायरी से दिल खुश करने में खर्च हो रही थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मानव जाति के सामने उसकी वास्तविक मंज़िल ला कर खड़ी कर दी आपने यह बात दिलों में बिठा दी कि सृष्टा की सही मारफत (पहचाना) उसकी जात व सिफ़ात (गुण) और उसकी कुदरत व हिकमत युक्ति का सही ईमान व यक़ीन की प्राप्ति, ख़ुदा का प्रेम, उसको राजी करना और उससे राज़ी हो जाना, इस अनेकता में एकता की तलाश, इन्सान की वास्तविक सौभाग्य है। अपने अन्तःकरण को सशक्त बनाना, ईमान व यक़ीन की दौलत से मालामाल होना, मानव–सेवा द्वारा ख़ुदा को राजी करना और कमाल व तरक्की की उस सीढ़ी तक पहुँच जाना जहाँ तक फरिश्ते भी नहीं पहुँच सकते, इन्सान के प्रयासों का असल मैदान है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय (बेअ्सत) के बाद दुनिया की रूत बदल गयी, इन्सानों के मिजाज बदल गये, दिलों में ख़ुदा की मुहब्बत का अंगारा भड़का, ख़ुदा प्राप्ति की ललक आम हुई, इन्सानों को एक़ नई धुन ख़ुदा की सृष्टि को ख़ुदा से मिलाने और उसको लाभ पहुँचाने तथा ख़ुदा को राजी करने की लग गयी, जिस तरह बसन्त या बरसात के मौसम में ज़मीन में उर्वरा शक्ति, सूखी सी

www.abulhasanalinadwi.org

टहनियों में हरियाली पैदा हो जाती है, नई–नई कोपलें निकलने लगती हैं, उसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय के बाद दिलों में नई हरारत पैदा हो गयी। करोड़ों इन्सान अपनी हकीकी मंजिल की तलाश और उस पर पहुँचने के लिए निकल खड़े हुए। हर मुल्क और कौम में यही भावना और यही नशा और हर तब्के में इस मैदान में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की होड़ नज़र आती है। अरब व अजम (गैर अरब), मिस्र व सीरिया, तुर्किस्तान व ईरान, ईराक व खुरासान, उत्तरी अफ्रीका और स्पेन और अन्ततः हमारा मुल्क हिन्दुस्तान और सुदूर पूर्वी द्वीप समूह सब इस मधुशाले के मतवाले और इसी मक़सद के दीवाने नज़र आते हैं। ऐसा लगता है जैसे इन्सानियत सदियों की नींद सोते–सोते जागी। आप इतिहास व तज़किरे की किताबें पढ़िये तो आपको नज़र आयेगा कि ख़ुदा प्राप्ति के अलावा कोई काम ही न था। शहर–शहर, कस्बा–कस्बा, गाँव–गाँव बड़ी तादाद में ऐसे ख़ुदा मस्त, साहसी, जन सेवक, इन्सान दोस्त, त्यागी इन्सान नज़र आते हैं जिन पर फरिश्ते भी रश्क करें। उन्होंने दिलों की सर्द अंगेठियाँ गर्मा दीं! कला–कौशल के दरिया बहा दिये, इश्के इलाही (ईशप्रेम) का शोला भड़का दिया, मारफत व मुहब्बत की ज्योति जगा दी और जेहालत, वहशत, जुल्म व अदावत से नफ़रत पैदा कर दी। मसावात (समरस्ता) का सबक़ पढ़ाया। दुखों के मारे और समाज के सताये हुए इन्सानों को गले लगाया। ऐसा मालूम होता है कि बारिश के क़तरों की तरह ज़मीन के हर चप्पे पर यह चीज़ें ज़ाहिर हूई और उनका शुमार नामुमकिन है।

नबूवत (दूतकर्म) का असल कारनामा

हमारी आधुनिक सभ्यता और मौजूदा वैचारिक नेतृत्व मानव

www.abulhasanalinadwi.org

समाज को जिम्मेदारियाँ संभालने वाले व्यक्ति तैयार करने और इन्सान की किरदार साजी में बुरी तरह नाकाम रही है। वह सूरज की किरणों को कैद कर सकती है। वह अन्तरिक्ष यात्रा के लिए सुरक्षित और तेज रफ्तार उपकरण मुहैया कर सकती है। वह अणुशक्ति से बड़े–बड़े काम ले सकती है, वह मुल्क से गरीबी दूर कर सकती है, वह पूरे–पूरे राष्ट्र को साक्षर बना सकती है। उसकी इन कामयाबियों से किसी को इन्कार की गुंजाइश नहीं। लेकिन वह नेक और आस्था वाले लोग पैदा करने में बिल्कुल असमर्थ है और यही उसकी सबसे बड़ी नाकामी और दुर्भाग्य है। और इसी कारण सदियों की मेहनतें बर्बाद हो रही हैं। सारी इन्सानी दुनिया निराशा और बिखराव का शिकार है। और अब उसका ज्ञान–विज्ञान पर से भी विश्वास उठ रहा है। आशंका है कि दुनिया में एक तीव्र प्रतिक्रिया का आन्दोलन और ज्ञान व सभ्यता के ख़िलाफ़ बग़ावत के दौर की शुरूआत न हो जाये। फसादी लोगों ने मासूम और नेक साधनों को भी फसादी बल्कि फसाद व तोड़–फोड़ का आला बना दिया है। आधुनिक सभ्यता की कश्ती मौजों की ताब नहीं रखती, उसका हर तख़्ता घुन खाया हुआ और दीमक का चाटा हुआ है। कमजोर तख्तों से कोई उम्दा व मजबूत बेड़ा तैयार नहीं हो सकता। यह भ्रम है कि कमजोर तख्ते अलग–अलग फासिद, कमजोर और अविश्वसनीय है, लेकिन जब इनको एक दूसरे से जोड़ दिया जाये और उनसे कोई सफीना (बेंड़ा) तैयार किया जाये तो वह ठीक हो जाते हैं। डाकू और चोर अलग–अलग तो रहजन और चोर है लेकिन जब वह अपनी पार्टी बना लें तो वह पासबानों और जिम्मेदार इन्सानों की पवित्र पार्टी हैं।

नये वैचारिक नेतृत्व ने जो व्यक्ति दुनिया को दिये हैं वह ईमान व यक़ीन (आस्था व विश्वास) से ख़ाली, मानव–आत्मा से वंचित,

www.abulhasanalinadwi.org

नैतिक अनुभूति से महरूम, प्रेम और निष्ठा के भावार्थ से अपरिचित, मानवता की प्रतिष्ठा और सम्मान से गाफिल हैं। वह या तो स्वाद व सम्मान के फल्सफः से वाकिफ़ हैं या फिर राष्ट्रवाद और देशभक्ति के भावार्थ से परिचित हैं इस तरह के लोग चाहे लोकतांत्रिक व्यवस्था के मुखिया हों या कम्युनिस्टिक व्यवस्था के जिम्मेदार कभी कोई स्वस्थ समाज, शान्तिपूर्ण माहौल और ख़ुदा से डरने वाली व पाकबाज़ सोसाइटी क़ायम नहीं कर सकते, और उन पर ख़ुदा की सृष्टि की किस्मत के बारे में कभी भरोसा नहीं किया जा सकता। इस दुनिया में अत्यन्त नेक लोग और अत्यन्त नेक समाज सिर्फ नबूवत ने तैयार किया है और उसी के पास दिल को फेरने और गरमाने, मन को झुकाने और जमाने, नेकी और पवित्रता की मुहब्बत, और गुनाह और बदी से नफरत पैदा करने, धन दौलत, मुल्क व सल्तनत, मान सम्मान, रियासत व बरतरी का जादुई आकर्षण का मुकाबला करने की ताक़त पैदा करने की क्षमता है। लोग जो इन क्षमताओं के मालिक हों दुनिया को बर्बादी से और आधुनिक सभ्यता को तबाही से बचा सकते हैं। नबूवत ने दुनिया को साइंस का ज्ञान नहीं दिया, ईजादें नहीं दीं, उसका कारनामा यह है कि उसने दुनिया को वह लोग दिये जो स्वयं सही रास्ते पर चल सकते हैं और दुनिया को चला सकते हैं और हर अच्छी चीज़ से स्वयं नफा उठा सकते हैं, दूसरों को पहुँचा सकते हैं और जो हर शक्ति और वरदान को ठिकाने लगा सकते हैं, जो जीवन के उद्देश्य से वाकिफ और पैदा करने वाले से अवगत हैं और उसकी ज़ात से लाभान्वित होने और उससे और अधिक नेअमतें हासिल करने की योग्यता रखते हैं।' उन्हीं का वजूद इन्सानियत की असल पूँजी और उन्हीं की दीक्षा नबूवत का असल कारनामा है।

www.abulhasanalinadwi.org

ख़त्म नबूवत् का अक़ीदा (विश्वास) एक इन्सानी ज़रूरत

यह अक़ीदा कि दीन (धर्म) मुकम्मल हो चुका है और अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर और ख़ातिमुन्नबीईन हैं और यह कि इस्लाम ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम और जीवन की पूर्ण व्यवस्था है, अल्लाह का एक इनआम है जिसको ख़ुदा ने इस उम्मत के साथ खास किया। इसीलिए एक यहूदी विद्वान ने हज़रत उमर के सामने इस पर बड़े रश्क और हसरत व्यक्त किया और कहा कि कुर्आन की एक आयत है जिसको आप लोग पढ़ते रहते हैं, अगर वह हम यहूदियों की किताब में उतरती और हमसे सम्बन्धित होती तो हम उस दिन को जिसमें यह आयत उतरी है, अपना राष्ट्रीय पर्व बना लेते। वह आयत सूरः माइदा की यही आयत थी जिसका अर्थ है:—

अनुवाद— *आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसंद किया।*

(सूरः अल्—माइदः ३)

हज़रत उमर ने इस नेअमत की महानता से इन्कार नहीं किया सिर्फ इतना कहा कि हमें किसी नये खुशी के दिन और त्योहार की ज़रूरत नहीं। यह आयत खुद ऐसे मौक़े पर उतरी है जो इस्लाम में एक शानदार महासम्मेलन और इबादत का दिन है। इस मौक़े पर दो ईदें एकत्र थीं, यौमे अरफः (नौ जिलहिज्जा) और जुमा का दिन।

ख़त्म नबूवत के अक़ीदे ने इस्लाम को फूट पैदा करने वाले उन आन्दोलनों का शिकार होने से बचा लिया जो इस्लाम के दीर्घकाल

www.abulhasanalinadwi.org

इतिहास और इस्लामी जगत के विस्तृत क्षेत्रफल में समय–समय पर सर उठाते रहे। "ख़त्म नबूवत" के इसी घेरे के भीतर मिल्लत (मुस्लिम सम्प्रदाय) उन नबूवत के दावेदारों की चढ़ाई से सुरक्षित रही जो इतिहास के विभिन्न चरणों और इस्लामी जगत के विभिन्न भागों में पैदा होते रहे और वह उन तमाम खतरों का मुकाबला कर सकी जिनसे किसी पैगम्बर की उम्मत इससे पहले सुरक्षित नहीं रही और इतनी लम्बी अवधि तक इसकी दीनी वहदत् और यकसानी (एकता) क़ायम रही। अगर यह घेरा न होता तो यह उम्मत ऐसी अनेक उम्मतों में बट जाती जिनमें से हर उम्मत का रूहानी मरकज (आध्यात्मिक केन्द्र) अलग होता, ज्ञान और सभ्यता का स्रोत अलग होता, हर एक का अलग इतिहास होता, हर एक के अलग पूर्वज और धार्मिक रहनुमा होते, हर एक का अलग अतीत होता।

ख़त्म नबूवत (नबूवत का समापन) का अक़ीदा वास्तव में मानव–जाति के लिए एक प्रतिष्ठा और विशिष्टता है। वह इस बात का ऐलान है कि मानव जाति प्रौढ़ता को पहुँच गयी है और उसमें यह योग्यता पैदा हो गयी है कि वह ख़ुदा के आख़िरी पैग़ाम को क़बूल करे। अब मानव समाज को किसी नई वह्इ, किसी नये आसमानी पैगाम की ज़रूरत नहीं। इस अक़ीदे से इन्सान के अन्दर आत्मविश्वास पैदा करने में मदद मिलती है। उसको यह मालूम होता है कि दीन अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है और अब दुनिया को इससे पीछे जाने की ज़रूरत नहीं। अब दुनिया को नई वह्इ के लिए आसमान की तरफ देखने के बजाय ख़ुदा की पैदा की हुई ताक़तों से फायदा उठाने और ख़ुदा के नाज़िल किये हुए दीन व अख़लाक (धर्म व आचरण) के बुनियादी उसूलों पर जीवन की व्यवस्था के लिए जमीन की तरफ और अपनी तरफ देखने की ज़रूरत है। ख़त्म नबूवत का

www.abulhasanalinadwi.org

अक़ीदा **इंसान को पीछे** की तरफ करने की **भावना पैदा करता** है, यह अक़ीदा **इन्सान को** अपने प्रयासों का मैदान और **दिशा** बतलाता है। अगर ख़त्म **नबूवत** का अक़ीदा न हो तो इन्सान हमेशा अनिश्चितता व अविश्वास के आलम में रहेगा। वह हमेशा ज़मीन की तरफ देखने के बजाय आसमान की तरफ देखेगा वह हमेशा अपने भविष्य की तरफ से असंतुष्ट और आशंकित रहेगा। उसको हर बार हर नया व्यक्ति यह बतलायेगा कि मानवता की वाटिका और रौज–ए–आदम (आदम का बग़ीचा) अभी तक अपूर्ण थी अब वह डाल–पात से पूरी हुई है। और वह यह समझने पर मजबूर होगा कि जब इस तरह वह बजाय इसकी सिंचाई और इसके फल–फूल के फायदा उठाने के नये बागवान का इन्तज़ार करेगा जो उसको डाल–पात से पूरा करे।

मुस्लिम समप्रदाय की सबसे बड़ी विशेषता

मैं इतिहास के एक विद्यार्थी बल्कि एक लेखक, और विश्व–इतिहास के एक जानकार की हैसियत से और फिर इसके साथ दुनिया के अनेक देशों और दुनिया के एक बड़े हिस्से का भ्रमण करने वाले एक दायी की हैसियत से भी आपके सामने कुछ विशेष बातें रखना चाहता हूँ, ऐसी बातें जो इस विषय पर निर्णायक सिद्ध होंगी, अल्लाह तआला कहता है–

अनुवाद– *आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दीं, और तुम्हारे लिए हमने धर्म के रूप में इस्लाम को पसंद किया।*

(सूरः अल्–माइदः ३)

दूसरी आयत में कहा–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम पुरुषों में से किसी के बाप नहीं बल्कि वह अल्लाह के रसूल और अंतिम नबी (ईशदूत) हैं।

इन आयतों से उम्मत को नहीं बल्कि संसार को जो दौलत मिली है जो विशेषता मिली है, उस पर भी बहुत कम लोगों ने गौर किया। एक बात तो यह है कि इन आयतों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत के समापन का ऐलान किया कि आप खातिमुन्नबीईन हैं, नबूवत का सिलसिला आपकी ज़ात पर समाप्त होता है, अब कोई नबी नहीं आयेगा। अब कोई दर्जा और अधिक तालीम व इस्लाह का बाक़ी ही नहीं रहा कि किसी नये नबी की ज़रूरत बाक़ी रहती। नबूवत के दावा की गुंजाइश ख़त्म हो जाती है। अल्लाह ने इस दीन (अर्थात इस्लाम) को परिपूर्ण कर दिया और अपनी नेअमत पूरी कर दी। इसके बाद यह बात सुस्पष्ट हो जाती है कि अब दीन में किसी संशोधन, घटाने बढ़ाने की गुंजाइश बाक़ी नहीं रही और न ही किसी नबी के अभ्योदय (बेअ्सत) की आवश्यकता।

यह इस उम्मत पर अल्लाह का एक महान उपकार व इनाम है और इसकी विशेषता कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन से पहले ही, यह खुला ऐलान कर देना था कि नबूवत का मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समापन हो गया। और दीन और ख़ुदा के महान वरदान को परिपूर्ण कर दिया गया। अब न मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी आयेगा, और न ही मुस्लिम संप्रदाय के बाद कोई मिल्लत होगी।

इस एलान से हमें बड़ा सबक़ और सन्देश मिलता है। पहली बात तो यह इससे सुस्पष्ट होती है कि क़यामत तक के लिए अब इस उम्मत के अक़ीदे भी एक होंगे, अरकान (स्तम्भ) भी एक होंगे, दूसरी

www.abulhasanalinadwi.org

बात यह कि हर काल में हर दौर में और हर उस जगह जहाँ मुसलमान आबाद हैं, **वहाँ पर** एक वहदत (एकता) पायी जायेगी, अर्थात दीनी वहदत।

अक़ीदों की वहदत (एकता)

"अक़ीदों की वहदत" यह है कि इस "उम्मत" के (जो अपने को मुसलमान कहती है, कुर्आन का कलिमा पढ़ती है, इस्लाम का दावा करती है) अक़ायद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्योदय (बेअसत) से लेकर क़यामत (महाप्रलय) तक एक रहेंगे, तोहीद पूरी रहेगी। पैगम्बरों की रिसालत (दूतता) और नबियों की नबूवत पर ईमान जिन्हें अल्लाह ने अपने–अपने समय और अपनी–अपनी जगह इस नाजुक और अजीम (महान) काम के लिए चुना, और फिर अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि जिन के बाद अब कोई नबी नहीं आयेगा, पिछले पैगम्बरों की रिसालत पर भी ईमान, ख़त्म नबूवत पर ईमान, कि अब किसी को भी क़यामत तक नबूवत नहीं मिलनी है। यह कोई मामूली और हल्की बात नहीं है, दुनिया में किसी भी उम्मत को यह फजीलत (बड़ाई) नहीं मिली।

अरकान की वहदत (एकता)

"अरकानी वहदत" यह है कि दीन के अरकान (स्तम्भ) में तनिक भी अंतर नहीं आने दिया जायेगा, न किसी ज़माने में न किसी इलाक़े में, कि हालात को देखकर नमाज़ तीन वक्त क़ी कर दी जाय या कोई और परिवर्तन लाया जाये, या यह कि रोजा के दिन बदल दिये जायें। एक चुटकुला याद आया। बड़े पद पर प्रतिष्ठित एक माननीय व्यक्तित्व ने (मैं नाम नहीं लूँगा) हमसे कहा कि मौलाना

www.abulhasanalinadwi.org

साहब! आप लोग इतने सख़्त मौसम में रोज़े रखते हैं, रमज़ान जाड़े में क्यों नहीं कर लेते। तो याद रखिये! अरकान जैसे थे वेसे ही रहेंगे, और उसी तरह अदा किये जायें, नमाज वही पाँच वक़्तों की, रोज़े वही रमजान के मुबारक महीने के, न जाड़े से उसमें फ़र्क़ आयेगा न गर्मी से, ज़कात (विशेष इस्लामी दान) उसी तरह अपने निज़ाम (पद्धति) व निसाब (धन की निर्धारित मात्रा) के मुताबिक जो बनाया गया है और जिसकी हमें तालीम दी गयी है, "हज" ठीक उसी तरह "बैतुल्लाह शरीफ (कअ्बा) का अपने तमाम मानासिक (कर्म) के साथ बिना किसी फ़र्क़ और तब्दीली के और इसके तमाम मा़ना़सिक (कर्म) हमेशा एक ही रहेंगे। क़यामत तक इसमें कोई फर्क नहीं हो सकता और न होने दिया जायेगा। यह जो वहदत है इस़े वहदते अरकानी कहते हैं।

नबूवत के समापन का एलान इस उम्मत की हिफाज़त व बक़ा की जमानत लेता है

आप इतिहास का अध्य्यन करें। हमने अल्हम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) इतिहास का अध्य्यन ख़ूब किया है। और हमें इसकी अपने लिखने–पढ़ने के कामों में बराबर ज़रूरत भी पड़ती रहती है। हमने यहूदी व इसाई धर्म की प्रामाणिक पुस्तकें भी पढ़ी हैं। आपको साफ नज़र आयेगा कि इनका पूरा इतिहास ज्वार–भाटा व उतार चढ़ाव का इतिहास है, पूरब–पश्चिम का इतिहास है, प्रेम और मतभेद का इतिहास है। अक़ायद में मतभेद, अरकान के अदा करने में मतभेद। यह जो मैं आपसे कह रहा हूँ मात्र उम्मत का एक व्यक्ति होने के नाते नहीं, इतिहास व धर्मों का अध्य्यन रखने वाले की हैसियत से भी। जरा आप भी अध्य्यन कीजिये, फ्रेंच की किताबें पढ़िये, जर्मन किताबें पढ़िये, इंग्लिश किताबें पढ़िये, धर्मों के इतिहास

www.abulhasanalinadwi.org

क़ा अध्ययन कीजिये। धर्मों का इतिहास लिखा गया है। आप इन इतिहासकारों को इसका एक़रार करते नहीं बल्कि शर्म से मानो मुँह पर हाथ रखते हुए बल्कि ऐसे हीन भावना के साथ इस हक़ीकत को बयान करते हुए देखेंगे और आप देखेंगे कि इस्लाम से पहले के धर्मों में से कोई भी धर्म ऐसा नहीं है कि उसके पैगम्बर ने जिस तरह एलान किया और जो बातें बताई वह धर्म उनकी बताई हुई शिक्षाओं के अनुसार सदियों चलता रहा हो। सदियों क्या बल्कि कभी तो आधी सदी और दहाइयों तक चलना मुश्किल हो गया।

इन धर्मों का इतिहास बताता है कि वहाँ ख़त्मे–नबूवत (नबियों के आने के क्रम की समाप्ति) का एलान नहीं किया गया था। यह कहीं नहीं मिलता है इन धर्मों को जो लोग सच्चा मानते हैं और इन पर पूरा यक़ीन रखते हैं और गर्व रखते हैं वह भी जहाँ तक हमारी मालूमात हैं इनमें से किसी ने यह दावा नहीं किया कि नबी व रसूल ने अपने अंतिम नबी होने का दावा किया हो। किसी ने भी ऐसा नहीं किया। न ही अल्लाह की तरफ से ऐसा ऐलान हुआ।

आप इन तमाम धर्मों के इतिहास में पढ़ेंगे, तनिक उदारता के साथ आप देखें तो आपको साफ नज़र आयेगा कि इनमे केवल विरोधाभास ही नहीं वरन् टकराव पाया जाता है, यह धर्म आरम्भ में यह कहता था और अब यह कहता है। इस मज़हब के पेशवा अगर यह न क़हें तो कम से कम एहतियात के लिए यह कहते हैं। इस मज़हब के पेशवा और प्रवक्ता तथा इसके प्रामाणिक पंडित पहले यह कहते थे, अब उनकी राय वह नहीं यह है, इबादत यह है, नहीं यह इबादत नहीं थी बिदअत है। यह साबित है, नहीं यह साबित नहीं मफरूज़ः (मान लिया गया) है। आप देखेंगे कि इन धर्मों में अक़ीदों (विश्वासों)

www.abulhasanalinadwi.org

का मत–भेद मिलेगा, अरकान कां स्तम्भों का मत–भेद मिलेगा, ज़माने के साथ वह बदलते रहेंगे। युग के कारण भी और स्थान की वजह से भी मतभेद मिलेंगे। इसके आपको साफ–साफ नमूने मिलेंगे। ऐसे नमूने कि इस मज़हब के प्रचार का जो दायरा और क्षेत्र है, जो इसकी दुनिया है उसके किसी हिस्से में कुछ हो रहा है, किसी हिस्से में कुछ। यह सब इसका नतीजा था, कि वहाँ ख़तम नबूवत का ऐलान नहीं हुआ था, उन लोगों के लिए इसका मौका था, और गुंजाइश थी, वैध और अवैध की सम्भाविक गुंजाइश थी कि वह जो चाहें दावा करें। आज यह बात क्यों है कि सारी दुनिया की क्रान्तियों के बावजूद सियासी इन्क़लाब भी, सामूहिक और नैतिक क्रान्तियाँ भी, यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्योदय से पहले नहीं पेश आयीं। यह इतिहास की गवाही है। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। ज्ञान–विज्ञान की क्रान्ति के साथ, तरक्क़ी के साथ, शोध कार्य के साथ, नयी–नयी खोज के साथ, नये–नये फायदे हासिल होने की उम्मीद के साथ, जो इसमें परिवर्तन करने और नया दीन और नया अक़ीदा पेश करने से हो सकते हैं, यह जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय के बाद हुआ है, इसके पहले कभी नहीं हुआ। मैं इतिहास से जानकार की हैसियत से कहता हूँ कि इसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

लेकिन इसके बावजूद यह दीन अब तक चला आ रहा है। नबी और रसूल जो गुज़र गये हैं, उन पर ईमान बाक़ी है। अभी भी अल्लाह की बरतरी, उसकी कुदरत और शान है कि जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका यह कहना कि हो जा तो वह चीज हो जाती है, और उसकी ज़ात की वहदत (एकत्ता) है कि पूरे आलम का चलाने वाला वही है। इन सब के बावजूद यही एक चीज़ है जो

www.abulhasanalinadwi.org

अभी तक बुनियादी अक़ायद पर क़ायम है, मैं उन चीज़ों को नहीं कहता जो किसी ने अपने सांसारिक लाभ के लिए या किसी रिशवत के नतीजे में या किसी फायदे के लिए, मान सम्मान के सिलसिले में पैदा कर दिया, दीन में वह चीज बिल्कुल नहीं चलने पाई। आज तक दीन बिल्कुल साफ और रौशन मौजूद है। और सब जानते हैं कि अगर नीयत ख़राब नहीं है और ख़ुदा का डर अगर किसी दर्जे में बाक़ी है तो वह बिदअत और सुन्नत को समझता है कि वह सुन्नत है और यह बिदअत है, बिदअत को कोई भी सुन्नत साबित नहीं कर सकता, गुनाह को कोई भी इबादत साबित नहीं कर सकता, शिर्क को कोई तौहीद साबित नहीं कर सकता। कोई अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) का ऐसा तरीका, जिसमें रस्म व रिवाज की बू आती हो, दुनियावी फायदा हो, नहीं जाना जा सकता। यह किस बात का नतीजा है, यह नतीजा है ख़त्म नबूवत के ऐलान का।

आज आप योरोप व अमेरीका के आख़िरी सिरे तक चले जाइये क्षमायाचना के साथ कहता हूँ कि कम लोगों को इतने भ्रमण का इत्तफ़ाक़ हुआ होगा जितना हमें हुआ। इसमें हमारी योग्यता को दख़ल नहीं यह केवल अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) व इनाम है कि कम से कम इस्लामी दुनिया को ले लीजिये, गैर इस्लामी दुनिया की भी हमने ख़ूब सैर की है, योरोप, अमेरीका व अफ्रीका सब हमने देखे हैं। इस्लामी दुनिया का तो शायद ही कोई कोना हमसे बचा हो, मोरक्को के अन्तिम छोर तक मैं गया हूँ, और फिर इसके बाद ताशकन्द व बुख़ारा और समरकन्द भी जाना हुआ है, वहाँ नमाज़ें भी पढ़ी हैं, बुज़ुर्गों के मज़ारों की ज़ियारत (दर्शन) भी की है, इसके अलावा अरब दुनिया का कोई मुल्क नहीं जहाँ मैं न गया हूँ। ईराक, सीरिया, मिस्र, लीबिया, जार्डन, तुर्की, खाड़ी का इलाक़ा और सिर्फ एक मुल्क ही नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

शहर–शहर गया हूँ लेकिन कोई जगह ऐसी न पाई जहाँ दीन की बुनियादी बातों में फर्क पाता। यहाँ दीन के अरकान (स्तम्भ) कुछ हों, वहाँ कुछ हों। नमाज पढ़ी भी और अल्लाह के फज़्ल से पढ़ाई भी, लेकिन इसके लिए हमें कोई गाइड बुक तक नहीं दी गई कि आप नमाजें पढ़ाने जा रहे हैं, यहाँ आपके मुल्क की तरह नमाज़ नहीं होती यहाँ वजू के बाद यह–यह करना और पढ़ना होता है, यहाँ खड़े होकर एक ख़ास दुआ पढ़नी होती है, यहाँ दीवारों पर यूँ हाथ लगाना होता है, यहाँ नमाज़ शुरू करने से पहले यह शब्द कहने पड़ते हैं, विशेष प्रकार की शिक्षा देनी पड़ती है कुछ कहना पड़ता है अगर क़ब्र है तो उसके आगे झुकना पड़ता है, बेजान से आवश्यकता पूरी करनी पड़ती है। यह कितना विशाल संसार है। चप्पे–चप्पे पर मुसलमान आबाद हैं लेकिन एक तरह की नमाज़ हर तरफ हो रही है। जाकर आप कहीं देख लीजिये। अफग़ानिस्तान, तुर्किस्तान, इंग्लैंड, मोरक्को, मिस्र, स्पेन, रूस, चीन और जापान कहीं चले जाइये, इधर लीबिया, सूडान जाकर देख लीजिये, आप इतमीनान से नमाज़ पढ़ सकते हैं। खुदा के फज़्ल से यह सम्मान व प्रतिष्ठा भी हमें हासिल हुई मगर किसी ने कुछ कहने की ज़रूरत न समझी और हमने कुछ पूछने की, वक्त हुआ तो कहा गया आगे बढ़िये, आगे गया, बाद में भी किसी को कोई शंका, ऐतराज नहीं हुआ और न कोई कमी लगी।

सब फ़ैज़ है ख़त्मे नबूवत का।

आख़िर यह किस बात का नतीजा है, यह नतीजा है ख़त्म नबूवत का। अगर यह ख़त्म नबूवत की दौलत न होती तो इस उम्मत को यह विशिष्टता न मिलती। मैं आपसे साफ कहता हूँ कि यह जो आप यहाँ बैठे, इतने विशाल मैदान में बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए दीन

www.abulhasanalinadwi.org

की बातें सुन रहे हैं यही नमाज, यही रोजा, यही ज़कात, यही हज, सारे अरकान इसी तरह बाक़ी है। राजनैतिक क्रान्तियाँ आईं और कितनी रूकावटें पैदा हुईं, समुद्र का सफर कितना खतरनाक बन गया, लेकिन हज का सफर उसी तरह चला आ रहा है। कोई भी इसको रोक न सका, बड़ी–बड़ी घटनायें घटित हुईं, हंगामे बरपा हुए, कुछ अंतर न पड़ा, कैसे–कैसे इन्क़लाब आये, हुकूमतें हट गयीं, माहौल बदल गया लेकिन हज जैसा कल फर्ज़ था आज भी फर्ज़ है, आज वैसे ही लोग हज को जा रहे हैं जो पहले जाते थे बल्कि अब तो बहुत बड़ी संख्या में जा रहे हैं कोई इसको रोक न सका। हिजाज़ में तो राजनीतिक व्यवस्था में ठहराव रहा ही नहीं। पहले किसी और की सत्ता। फिर शरीफ मक्का आये वह गये तो अब आले सऊद हुक्मरां हैं।

व्यवस्था और राजनीतिक परिवर्तन जो हों लेकिन दीन के अरकान में कोई परिवर्तन नहीं। हज की अदायगी में कोई रूकावट पैदा नहीं हुई। अल्लाह के फ़ज़्ल से हरमैन शरीफ़ैन (मक्का व मदीने का विशेष क्षेत्र) से उमरा करके अभी कुछ दिन हुए आ रहा हूँ वही काबा, वही मताफ़, वही हरम शरीफ़ वही तवाफ़। ज़मानों के साथ तवाफ़ में कमी ज़्यादती की जाती या इसकी सलाह दी जाती, ऐसा कुछ नहीं हुआ। जैसा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कर गये और बता गये वैसा ही आज जारी है। आज दीन वैसा ही है जैसा सहाबा ताबेईन, वलियों, बुजुर्गों के ज़माने में था। अगर कुछ बातों में नई चीज़े आ गयी हैं तो यह नतीजा है जेहालत का, ग़फलत का, मनमानी का, दावा कोई नहीं कर सकता कि यह सही है। कुर्आन में न कोई संशोधन कर सकता है, न यह सुन सकता है और देख सकता है। अल्लाह ने साफ–साफ केह दिया है:–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– इस नसीहत नामा (कुर्आन) को हमने हाँ हम ही ने उतारा है और हम ही इसके निगहबान (रक्षक) हैं।

(सूरः हिज ९)

शरीअत में इज़ाफ़ा करने वाला गुस्ताख़ है

हमें इस नेअ्मत (वरदान) की कद्र करनी चाहिए और इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए, गर्व करना चाहिये और मुसलमानों को इस पर गर्व करने का पूरा हक़ है कि उनका दीन परिपूर्ण हो चुका है। पूरी शरीअत अब हमारे सामने है। अब इस शरीअत (ईश्वरीय संविधान) में कोई इज़ाफ़ा नहीं होना है। और अगर ऐसा करने का दुस्साहस करता है तो वह गुस्ताख़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। हम किसी भी योरोपियन अंग्रेज और किसी भी दूसरे धर्म के मानने वाले से यह कहने का हक रखते हैं कि कहीं भी चले जाइये यही शरीअत मिलेगी जो यहाँ है, यही अहकाम मिलेंगे जो यहाँ है, यही अरकान मिलेंगे जो आप यहाँ देख रहे हैं। नमाज़ के जो अवक़ात यहाँ हैं वही दूसरी जगह। वही लन्दन में वही न्यूयार्क में, वही मास्को में, वही पेरिस में, कहीं कैसे भी हालात हों, मौसमी हालात हों, सियासी हालात हों, ख़तरात हों, सफर करना हो, गर्म इलाक़े हों या ठँडे इसमें कोई परिवर्तन नहीं। छोटे या बड़े दिन के कारण नमाज़ पाँच वक़्त से घटा कर तीन वक़्त या पाँच वक्त से बढ़ाकर सात वक़्त की न कर दी जाये या मग़रिब की अस्र के वक़्त या अस्र की जुह्र के वक़्त कर दी जाये यह सब कुछ भी नहीं। न कहीं ऐसा है न कभी हो सकता है। याद रखिये यह उसका फैज है और देन है ख़त्म नुबूवत के ऐलान का।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय तीन

आख़िरत

क़ुर्आन में आख़िरत का बयान और उसके तर्क

अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात (गुण) के ज्ञान के बाद दूसरा बड़ा ज्ञान जो नबी दुनिया को प्रदान करते हैं और जो उनके बिना किसी अन्य स्रोत से कदापि नहीं मिल सकता, वह यह ज्ञान है कि इन्सान मर कर दोबारा ज़िन्दा होगा और यह संसार टूट–फूट कर दोबारा बनेगा। उस दूसरी ज़िन्दगी में इन्सान को अपनी पहली ज़िन्दगी का हिसाब व किताब देना होगा। उसने दुनिया की ज़िन्दगी में कुछ किया वह उसके सामने आयेगा।

इन्सान के पास इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए नबियों के अलावा कोई साधन नहीं, इन्सान के पास हासिल करने की जो ताक़तें हैं उनसे न यह ज्ञान प्रारम्भिक रूप से हासिल किया जा सकता है न इसको नकारा जा सकता है। ज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि, अनुभव और इनके अलावा इन्सान की निहित शक्तियों और आध्यात्म में से कोई स्रोत ऐसा नहीं है जिससे इस दुनिया की ज़िन्दगी के अतिरिक्त किसी और ज़िन्दगी के अस्तित्व और उसके विवरण को साबित किया जा सके और न कोई पद्धति सम्भव है कि इस ज़िन्दगी में आख़िरत की बातों को देखा जा सके। यह जानकारी सब ग़ैब (परोक्ष) से सम्बन्ध रखती हैं और गैब को इन्सान खुद नहीं जान सकता। उसके ज्ञान और उसकी अक़्ल इसके हासिल करने में इन्सान की कोई मदद नहीं कर सकते।

इन्सान के लिए दो ही बातें शेष रह जाती हैं या नबियों पर

www.abulhasanalinadwi.org

भरोसा करके और उसके दावा की सच्चाई के प्रमाणों व लक्षणों को देखकर उनके बयान की तस्दीक़ या बिना किसी सबूत और तर्क के उसका इन्कार।

अनुवाद— *आप कह दीजिए, आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता हो, सिवाय अल्लाह के और, वे नहीं जानते कि कब उठाए जायेंगे।" बल्कि आख़िरत के बारे में उन लोगों की जानकारी असमर्थ हो गयी है, बल्कि वे उसकी ओर से शक में हैं, बल्कि वे उससे बिल्कुल अन्धे हैं। –*

(सूरः अं—नम्ल ६५—६६)

लेकिन जैसा कि ऊपर कहा गया है, इस पेश आने वाली सच्चाई की निशानियाँ और इसके वजूद की सम्भावनायें इस दुनिया में और इस जीवन में मिलते हैं जिनसे इन्सान यह अनुमान लगा सकता है कि ऐसा होना हर प्रकार मुमकिन है। और इससे कोई बौद्धिक शंका नहीं है।

इसका एक बड़ा लक्षण और इसका एक गवाह खुद इन्सान की पैदाइश और उसका जीवन है। उसने न होने से होने तक, फिर होने के बाद अस्तित्व की परिपूर्णता तक कितने सोपान तय किये हैं। उसने वीर्य से नुत्फ़े, नुत्फ़े से जमे हुए ख़ून की या जोंक का रूप धारण किया फिर एक गोश्ता का टुकड़ा बना, फिर हड्डियों का ढाँचा बना, फिर उस पर मास चढ़ाया गया, फिर वह एक दूसरी सृष्टि बन कर प्रकट हुआ। फिर उसे पेट की अन्धेरी कोठरी से निकालने के बाद वह कुछ समय तक शैश्वावस्था में रहा, फिर जवान हुआ, फिर या तो उसका दूसरा क़दम मौत की चौखट पर पड़ा या उसको इतनी मुहलत मिली कि जीवन की इस बहार को देख कर उसने बुढ़ापे का

www.abulhasanalinadwi.org

पतझड़ भी देखा और जीवन का उल्टा सफर शुरू हुआ अर्थात जवानी के बाद बुढ़ापे में फिर उस पर बचपने की बातें तारी होने लगीं, उसकी शक्तियों ने एक–एक करके जवाब दिया, स्मरण शक्ति ने साथ छोड़ा, वह बच्चों की तरह बेबस, दूसरों के सहारे का मुहताज हुआ, उस पर खुद फरामोशी तारी रहने लगी। उसके लिए हर जानी पहचानी चीज़ अंजानी हो गयी।

इस मंजिल पर सफर का एक हिस्सा ख़त्म हो गया, लेकिन उसका सफर ख़त्म नहीं हुआ, सफर की सिर्फ एक बीच की मंज़िल पेश आई जिसका नाम मौत और आलमे बरज़ख है:–

मौत एक मान्दगी का वक्फ़ा है
यानी आगे चलेंगे दम ले कर।

अतः जिस इन्सान की असल व हक़ीकत (मिट्टी और पानी) और फिर उसकी शुरूआत और उसकी उत्पत्ति मालूम है, उसके नज़दीक मर कर ज़िन्दा होने में कौन सी बौद्धिक शंका है और जिसने इन्सान में इतने इन्क़लाब देखे उसके लिए एक आख़िरी इन्क़लाब को मुमकिन मानने में क्या कठिनाई है। ज़िन्दगी बाद मौत का दुसरा खुला हुआ नमूना ज़मीन की दोबारा जिन्दगी के दृश्य हैं जो बार–बार आँखों के सामने आते रहते हैं, यह ज़मीन जिसके सीने में हजारों पैदा होने वाले इन्सान और ज़िन्दा होने वाले हैवानों की ज़िन्दगी की अमानतें और खज़ाने हैं, वह खुद मुर्दा पड़ी होती है, उसके होंटों पर सूख कर पपड़ियाँ जम जाती हैं, वह मिट्टी का एक बेहिस व बेजान लाश होता है जिसमें न खुद जिन्दगी होती है और न किसी और चीज के लिए सामान, लेकिन जब उसके होंटों पर पानी की बूँदें गिरती हैं और उसके गले से होकर सीने तक पहुँच जाती हैं, तो वही ज़मीन मौत

www.abulhasanalinadwi.org

की नींद **से अचानक** जाग जाती है, उसमें जीवन की लहर दौड़ जाती है, वह झूम उठती है, उसका मुँह दौलत हरियाली और ज़िन्दगी का खजाना उगल देता है। लहलहाती खेती, भूतल पर रेगने वाले कीड़े, साँप, नेवले आदि पृथ्वी के अन्दर जीवन और जीवनदायी का पता देते हैं। बरसात और बहार के मौसम में ज़मीन की इस ज़िन्दगी का दृश्य किसने अपनी आँखों से नहीं देखा?

जिन्दगी के बाद मौत के गवाह व दृश्य हर जगह देखे जा सकते हैं और हर एक उसको देख सकता है। अल्बत्ता एनाटामिस्ट, ज्योलाजिस्ट और जिसने जीव विज्ञान तथा वनस्पति के उदय व विकास का अध्ययन किया है उसके लिए इसकी पुष्टि व मरणोपरान्त जीवन के अनुमान का अधिक अवसर है, इस कारण पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला ने विभिन्न स्थानों पर इन दोनों वास्तविकताओं को मरणोपरान्त जीवन के प्रमाण के लिए प्रस्तुत किया है और इनकी ओर ध्यान आकर्षित कराया है। एक स्थान पर कहता है!

अनुवाद– *ऐ लोगों! यदि तुमको मरने के बाद जिंदा होने पर संदेह है तो विचार कर लेना कि हमने तुमको मिट्टी से बनाया है, फिर नुफ्का (टपकती बँद) फिर खून का लोथड़ा बना दिया फिर गोश्त की बोटी बना दी कभी सूरत का नक्शा बना दिया, कभी अधूरी छोड़ दी अपनी कुदरत जाहिर करने के लिए यह साफ–साफ बयान जारी कर रहे हैं, एक निर्धारित अवधि तक मातृ गर्भ में जिस नुत्फा (बूँद) को चाहें ठहरा देते हैं, फिर बच्चा बनाकर निकालते हैं तुमको , ताकि भरपूर जवानी को तुम पहुंचो, कुछ लोग तुममें से वे लोग होते हैं जो जवानी ही में उठा लिये जाते हैं, कुछ वे लोग होते हैं जो बुढ़ापे वाली निकम्मी आयु तक पहुंचा दिये जाते हैं, परिणाम स्वरूप ज्ञान व बुद्धि की प्राप्ति के*

www.abulhasanalinadwi.org

बाद वह सठिया कर अज्ञान होकर रह जाता है, दूसरा प्रमाण यह है कि तुम धरती को सूखा देखते हो फिर जब हम उस पर बारिश करते हैं। तो वह ताज़ा हो जाती है तथा फूलती है भाँति–भाँति के आकर्षक हरियाली उगाती है, यह सब इसी लिए है कि अल्लाह की हस्ती ही सत्य है और वह मुर्दों को जीवित करेगा तथा वह हर चीज़ पर सक्षम है तथा निःसंदेह क़यामत (महाप्रलय) आने वाली है, इसमें कोई संदेह नहीं और अल्लाह तआला क़ब्र वालों को ज़रूर उठाएंगे।

(सूरः हज ५–७)

अनुवाद– *और हमने इंसान को मिट्टी के निचोड़ (जौहर) से बनाया, फिर टपकती बूँद बनाकर एक सुरक्षित स्थान (अर्थात गर्भाशय) में रखा, फिर हमने उस बूँद को जमा हुआ खून बना दिया फिर उस जमे हुए खून को गोश्त का टुकड़ा बना दिया फिर उस गोश्त के टुकड़े में हड्डियां बनाई फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया, फिर हमने (उसमें रूह डाल कर) एक नई सृष्टि (मखलूक़) बना दिया, बस बड़ी शान वाला है अल्लाह जो सबसे बेहतर बनाने वाला है, फिर इसके बाद जरूर मरोगे और फिर निःसंदेह क़यामत (महाप्रलय) के दिन जिंदा करके उठाए जाओगे।*

(सूरः अल–मुअ्मिनून १२–१६)

धरती के जीवन तथा पानी के एहसान की हालत को क़ुर्आन ने अपने चमत्कारी शब्दों में विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान किया है।

अनुवाद– *अल्लाह ही हवाओं को भेजता है, फिर वह बादलों को उठाती है, फिर वह जैसा चाहता है बादलों को आकाश में फैला देता है और उसको टुकड़े–टुकड़े कर देता है। फिर तुम उसके बीच से बारिश को निकलते हुए देखते हो, तो जब वह अपने जिन बन्दों को*

चाहता है बारिश पहुँचा देता है तो प्रसन्न हो उठते हैं, जबकि इस वर्षा से पहले वे निराश होते हैं। अल्लाह की रहमत (कृपा) की निशानियों को तो देखो कि धरती की मौत के बाद वह कैसे उसे जीवित कर देता है? इस हकीकत में तनिक भी संदेह नहीं कि अल्लाह ही मुर्दों को जिलाने वाला है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

(सूरः रूम ४८–५०)

अनुवाद– *अल्लाह ही है जिसने हवाएं भेजीं, तो वे बादल को उठाती है, फिर हम उसे किसी बेजान (सूखे) शहर की ओर हांक देते हैं। फिर हम उसके ज़रिये उस धरती को मौत (सूखने) के बाद जीवित कर देते हैं (सुन लो) इसी तरह दोबारा उठाया जाएगा।*

(सूरः फातिर ९)

अनुवाद– *उसकी खुली निशानियों में से यह है कि तुम धरती को बेजान सूखा जीवन के लक्षणों से खाली देखते हो, फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो वह तरो ताज़ा हो जाती है और फूलती है, अवश्य वही अल्लाह है जिसने मुर्दा धरती को जीवन प्रदान किया वही मुर्दों को दुबारा जीवित करेगा, वह हर काम करने में सक्षम है।*

(सूरः हा–मीम सजदा ३९)

अनुवाद– *वह अल्लाह है, जिसने आसमान से पानी बरसाया एक विशेष मात्रा में, फिर उसके द्वारा जीवन प्रदान किया किसी मुर्दा क्षेत्र को, बस ऐसे ही तुम उठाए जाओगे।*

(सूरः जुखरूफ ११)

इन दो निशानियों तथा खुले हुए दोनों नमूनों के अतिरिक्त भी ब्रह्माण्ड का यह विशाल व महान कार्यक्षेत्र मरणोपरान्त जीवन के नमूने तथा दृश्य दिन रात प्रस्तुत करता रहता है, यहाँ पलभर में जो चीज

www.abulhasanalinadwi.org

बन कर बिगड़ती है और टूट–फूट कर बनती रहती है, एक बेजान व संवेदनहीन चीज से अच्छी खासी जीती जागती, जीवन धारक हस्ती तथा एक अच्छी खासी जानदार हस्ती से बिल्कुल बेजान और मुर्दा हस्ती निकलती है। बहुत सी वस्तुओं से ऐसे विलोम लक्षण व परिणाम सामने आते हैं, बहुत सी सृष्टियाँ दुबारा पैदा की जाती हैं, जिसने सृजनहार की इस असीम क्षमता, सृष्टियों की प्रारम्भिक पैदाइश तथा बनाने व पैदा करने की विशाल प्रक्रिया का कुछ भी अध्ययन किया है उसको एक क्षण के लिए भी मरणोपरान्त जीवन में संदेह नहीं हो सकता और उसके लिए इसमें कोई बौद्धिक संदेह नहीं है।

अनुवाद– *क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह सृष्टि को पहली बार पैदा करता है, फिर वह उनको दोबारा पैदा करेगा, यह काम अल्लाह के लिए बहुत सरल है। आप उनसे कहिए कि धर्ती पर चल फिर कर देखो कि अल्लाह ने सृष्टि को किस प्रकार पैदा किया, फिर वही अल्लाह आख़िरी बार भी पैदा करेगा, निःसंदेह अल्लाह हर चीज़ पर सार्मथ्य रखता है।*

(सूरः अन्क़बूत १९–२०)

अनुवाद– *अल्लाह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को जिन्दा से और धरती की मुर्दा होने (सूख जाने) के बाद जीवन प्रदान करता है, अतः इसी प्रकार क़यामत में उठाए जाओगे।*

(सूरः अर्रूम १९)

अल्लाह के लिए किसी वस्तु को अस्तित्व प्रदान करना और फिर उसको दोबारा जीवन प्रदान करना दोनों समान रूप से सरल हैं, लेकिन इंसान के **लेहाज़ से किसी** वस्तु को दोबारा बनाना उसके पहली बार **बनाने से अधिक सरल है**। इसलिए जिसने एक बार

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह के गुण 'सृष्टा' को स्वीकार लिया उसके लिए इस गुण का दोबारा मानना कोई कठिन कार्य नहीं (यानी यही अल्लाह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करेगा)।

अनुवाद– *वही है जो पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा पैदा करेगा, और यह दोबारा पैदा करना उसको ज़्यादा आसान है और आसमान और ज़मीन में उसकी शान सर्वोत्तम है और वह ज़बरदस्त युक्तिवान है।*

(सूरः अर्रूम २७)

अनुवाद– *क्या क़यामत का इन्कार करने वाला इन्सान इस वास्तविकता को नहीं जानता कि हमने उसको नुत्फे (वीर्य) से बनाया, तो अब वह खुलकर आपत्ति करने लगा है तथा हमारी शान में अजीब बात कही और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहता है, मुर्दा हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है, जब कि वह बोसीदा (चूर–चूर) हो चुकी होंगी? "कह दीजिए उनको वही ज़िन्दा करेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया था और वह हर प्रकार की पैदाइश को ख़ूब जानता है, (वही है) जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे वृक्ष से आग पैदा की, फिर तुम उससे आग जलाते हो" क्या वह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात की कुदरत (सामर्थ्य) नहीं रखता, कि इन जैसों को पैदा करे? क्यों नहीं और वह तो बड़ा पैदा करने वाला, महाज्ञाता है। उसकी शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे हुक्म देता है, कि हो जा, तो वह हो जाती है।*

तो पाक (महिमावान) है वह जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है, और उसी की ओर तुम लौट कर जाओगे।

(सूरः यासीन ७७–८३)

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद— *और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से* ***ख़ास तरीक़े से पैदा*** *किया* ***फिर वह*** *तुम्हें उसी में ले जाएगा और (क़यामत में) वही तुम्हें उसी से* ***बाहर*** ***निकालेगा***।

(सूरः नूह १७–१८)

फिर जिसने इस संसार में खुदा के **गुणों का स्पष्ट** रूप देखा है और जो उसकी कुदरत और हिकमत से वाक़िफ़ है उसके लिए यह क्या अजीब चीज़ है:—

अनुवाद— *क्या उनको इसकी जानकारी नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं, वह* ***अवश्य इसकी*** *शक्ति रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों नहीं! वह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है।*

(सूरः अहकाफ ३३)

अनुवाद— *क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा! हमने उसको कैसे बनाया और (तारों से) सजाया, और इसमें कोई रख़ना (दरार) नहीं और ज़मीन को हमने फैलाया और इसमें पहाड़ जमा दिये और हर तरह की इसमें सुन्दर चीज़ें उगायीं, इसमें अल्लाह की ओर झुकने वाले बन्दे के आँख खोलने तथा विचार करने का साधन है।*

और 'हमने' आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे बाग और फसल के अनाज और लम्बी–लम्बी खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं। यह सब बन्दों की रोज़ी के लिए है और हमने उस (पानी) से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह क़यामत के दिन निकलना होगा।

(सूरः काफ़ ६–११)

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *हमने तुमको पहली बार पैदा किया, तो तुम (हमारे दोबारा पैदान करने को) सच क्यों नहीं मानते? तो क्या तुमने विचार किया जो चीज (नुत्फे) तुम गर्भाशय में टपकाते हो? क्या तुम उसे आकार प्रदान कर देते हो या हम हैं आकार देने वाले? हमने तुम्हारी मौत का समय मुकर्रर किया और हम आजिज़ (असमर्थ्य) नहीं हैं, कि तुम्हारी तरह के और लोग पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी हालत में बना दें जिसे तुम जानते भी नहीं, और तुम तो पहली पैदाइश को जानते हो, तो फिर तुम (इसी से दोबार पैदा किये जाने को) क्यों नहीं समझ लेते। अच्छा फिर यह बताओ कि जो बीज तुम धरती में डालते हो तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं? अगर हम चाहें तो उसे चूर–चूर कर दें और तुम अचंभित रह जाओ, और कहने लगो कि हम तो तावान में पड़ गये बल्कि हम तो बिल्कुल महरूम (वंचित) रह गये।" अच्छा यह तो बताओ कि जो पानी तुम पीते हो? क्या तुमने उसको बादल से उतारा है, या उतारने वाले हम हैं? अगर हम चाहें तो खारा कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते? क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो? क्या तुमने उस वृक्ष को पैदा किया है, या उसके पैदा करने वाले हम हैं।*

(सूरः अल–वाक़िआ ५७–७२)

अनुवाद– *क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा? क्या वह वीर्य की एक बँद न था? जो (गर्भाशय में) टपकाया गया? फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, तो अल्लाह ने उसको शरीर बनाया और उस (के अंगों) को दुरूस्त किया, फिर उससे जोड़ा बनाया, मर्द और औरत, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को जिन्दा कर दें?*

(सूरः क़ियामः ३६–४०)

www.abulhasanalinadwi.org

इस दुनिया पर ध्यान देकर चिन्तन करने से इन्सान की अन्तर आत्मा स्वयं गवाही देती है कि इस दुनिया के बाद एक दूसरी दुनिया और इस ज़िन्दगी के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी होनी चाहिए जो इस दुनिया का उपसंहार हो। जिसमें इस ज़िन्दगी के कर्मो के परिणाम सामने आए, अगर यह दूसरी ज़िन्दगी नही तो दुनिया और यह सारा कारख़ाना बे मक़सद है। कुर्आन में मानव–स्वभाव को सम्बोधित करके फरमाया गयाः–

अनुवाद– *क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा?*

(सूरः अल्–क़ियाम ३६)

अनुवाद– *क्या तुमने यह समझा था कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है, और तुमको हमारी ओर लौट कर नहीं आना है?"*

(सूरः अल्–मुमिनून ११५)

ज़मीन व आसमान के बारे में फरमायाः–

अनुवाद– *और हमने आसमान और ज़मीन को और उनके बीच के ब्रह्माण्ड को बेकार और बेमकसद नहीं पैदा किया है।*

(सूरः सादः २७)

अनुवाद– *और हमने आसमानों व ज़मीन को और उनके बीच की चीज़ों को तमाशे के तौर पर नहीं बनाया।*

(सूरः अद्–दुखान ३८)

ज़मीन व आसमान और उनके अजायबात पर गौर करने से मनुष्य का अन्तःकरण स्वयं गवाही देता है और उनकी जबान स्वयं इसका इकरार करती हैः–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात–दिन के अदल–बदल में, अक्ल वालों के लिए (बड़ी) निशानियाँ हैं, जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे (हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं। और आसमानों, और धरती की पैदाइश पर ग़ौर करते हैं, ऐ हमारे रब! तूने यह सब बेकार नहीं पैदा किया है, 'तू' पाक है, तो हमको दोज़ख के अज़ाब से बचाइए, ऐ हमारे रब! 'तूने' जिसे आग (जहन्नम) में डाला उसे रूसवा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(सूरः अलि–अ़िम्रान १६०–१६२)

आख़िरत पर ईमान की विशेषतायें

एक पक्का अकीदा **(विश्वास) एक सही** और बे ऐब बीज की तरह है जब दिल की ज़मीन में यह बीज पड़ जाये और ज़मीन इसको कुबूल कर ले और फिर इसे पानी भी मिले और देख भाल भी हो तो इससे एक हरा–भरा पौधा ज़ाहिर होता है, फिर वह पेड़ बनता है जो पूरी ज़िन्दगी को अपने साया में ले लेता है।

आख़िरत पर ईमान भी एक बीज है जो अपनी स्वयं की विशेषतायें रखता है जब इस बीज की सही बढ़त हो जाती है तो आचरण व आमाल, सीरत व किरदार, चाल–ढाल, बात–चीत कोई चीज़ इसके असर से वंचित नहीं होती। आख़िरत के एक मानने वाले और उसके इन्कार करने वाले की ज़िन्दगी और सीरत में वही फर्क़ होता है जो विभिन्न बीजों से पैदा होने वाले पेड़ों की डालों, पत्तों और फलों में होता है। यह दो अलग–अलग साँचे हैं जिनमें दो अलग–अलग प्रकार की सोचें ढल कर निकलती हैं।

इन दोनों में सैद्धान्तिक अन्तर यह होता है कि आस्था रखने

www.abulhasanalinadwi.org

वाला जल्दी मिलने वाली चीज की तुलना में देर से मिलने वाली चीज़, नक़द के मुकाबले में कर्ज, मिट जाने वाली खुशी के मुकाबले में हमेशा की राहत का इच्छुक होता है। कुर्आन मजीद ने इस सैद्धान्तिक अन्तर को अपनी आयतों में बार–बार स्पष्ट किया है दुनिया को वह आजिला (जल्दबाजी) कहता है और मौत के बाद की ज़िन्दगी को आख़िरत कहता है और दोनों में वह चयन की इजाज़त देता है।

अनुवाद– *जो व्यक्ति जल्द मिलने वाली (दुनिया) का इच्छुक हो तो हम उसमें से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं जल्द दे देते हैं, फिर 'हमने उसके लिए दोज़ख को निश्चित कर रखा है जिसमें वह दाख़िल होगा इस हाल में कि तिरस्कृत ठुकराया हुआ होगा, और जो व्यक्ति आख़िरत का इच्छुक होगा और उसके लिए कोशिश करेगा जैसी कोशिश करना चाहिए, शर्त यह है कि वह ईमान वाला भी हो, तो उनकी कोशिश कुबूल की जाएगी।*

(सूरः इस्राः १८–१६)

यह दो अलग–अलग प्रकार की खेतियाँ जो अभी बोई जाये और आख़िरत में काटी जाय, दूसरी जो तुरन्त बोई जाये और तुरन्त काट ली जाय। कुर्आन ने जहाँ दोनों खेतियों का उल्लेख किया है, वहाँ एक बड़ा बारीक फर्क रखा है। फरमाया है कि जो आख़िरत की खेती चाहेगा हम उसमें बरकत बढ़ोत्तरी अता फरमायेंगे, और जो दुनिया की खेती चाहेगा हम उसको उसमें से दे देंगे, अर्थात एक का नतीजा तुरन्त सामने और दूसरे के नतीजे के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

अनुवाद– *जो व्यक्ति आख़िरत की खेती का इच्छुक हो, हम उसकी खेती को बढ़ाते हैं। और जो दुनिया की खेती का इच्छुक हो, हम*

www.abulhasanalinadwi.org

उसमें से उसे कुछ देते हैं और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

(सूरः अश्–शूरा २०)

आख़िरत का इन्कार करने वाले की इस जल्दबाजी की मानसिकता को साफ–साफ बयान किया गया हैः–

अनुवाद– *कदापि नहीं! तुम तो दुनिया को चाहते हो, और आख़िरत को छोड़े हुए हो।* (सूरः क़यामः २०–२१)

अनुवाद– *निःसंदेह यह लोग बस दुनिया से प्रेम करने वाले हैं और अपने आगे आने वाले बड़े भारी दिन का ध्यान छोड़े हुए हैं।*

(सूरः अद्–दह्‍र २७)

इन्हीं लोगों के बारे में कहा गया–

अनुवाद– *फिर उनके बाद उनके वह उत्तराधिकारी आए, जो किताब (तौरात) के वारिस हुये और (इसी के द्वारा) इसी दुनिया का सामान समेटने लगे, इसको मामूली गुनाह समझने लगे और कहा, हमें तो ज़रूर माफ़ कर दिया जाएगा और अगर इस जैसा और सामान भी उनके पास आ जाए तो वे उसे भी ले लेंगे, क्या इनसे किताब में इसका अहद (प्रतिज्ञा) नहीं लिया गया कि अल्लाह पर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न गढ़े और उन्होंने इस ग्रन्थ के आदेशों को पढ़ा भी है और आख़िरत तो उन लोगों के लिए बेहतर है, जो डर रखते हैं, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?*

(सूरः अल्–अअ़राफ़ १६९)

दोनों के लक्ष्य और मक़सद में भी अंतर होता हैः–

अनुवाद– *और कुछ लोग ऐसे हैं, जो प्रार्थना करते हैं 'ऐ हमारे रब! हमको (जो देना हो) दुनिया में दे दे "और ऐसे लोगों का आख़िरत*

www.abulhasanalinadwi.org

(परलोक) में कोई हिस्सा नहीं और उनमें कुछ ऐसे हैं, जो दुआएं मांगते हैं, कि ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी अच्छा जीवन दे और आख़िरत में भी अच्छा जीवन प्रदान कर दे और हमें आग के अज़ाब (यातना) से बचा।

(सूरः अल्--बकरह् २००–२०१)

ज़िन्दगी और दुनिया के बारे में दोनों की सोच एक दूसरे से सैद्धांन्तिक रूप से अलग–अलग होती है, एक कहता है:–

अनुवाद– *ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े फायदे की चीज़ है, और आख़िरत ही असल ठिकाने का घर है।*

(सूरः अल्–मोमिन ३६)

दूसरा कहता है :–

अनुवाद– *यहाँ हमारे लिए बस यह सांसारिक जीवन है और हमें इसी दुनिया में मरना और जीना है और हम दुबारा जीवित नहीं किये जायेंगे।*

(सूरः अल्–मोमिनून ३७)

आख़िरत के अक़ीदे के साथ घमण्ड, बड़ा बनने का शौक और ज़मीन में दंगा व फसाद और तोड़–फोड़ की भावना इकट्ठा नहीं हो सकती। इन उद्देश्यों व चरित्र का इस अकीदे (विश्वास) की प्रकृति से कोई संबंध नहीं। कुर्आन ने साफ–साफ कह दिया:–

अनुवाद– *आख़िरत का यह घर (स्वर्ग तथा उसकी नेमतें) हम उन लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो न तो ज़मीन पर अपनी बड़ाई चाहते हैं और न फसाद और अच्छा अंजाम केवल परहेज़गारों के लिए है।*

(सूरः कसस ८३)

www.abulhasanalinadwi.org

इसी लिए एक आख़िरत को मानने वाले के जवीन में बड़ा बनने की भावना पैदा नहीं होती, सत्ताधारी होने पर भी उसकी बन्दगी व विनम्रता की आदत् नहीं जाती, बल्कि जितना उसे सरबुलन्दी हासिल होती है उतना अधिक वह विनम्र होता है उसको जब ताक़त और दौलत हासिल होती है तो वह एक आख़िरत का इन्कार करने वाले (क़ारून) की तरह नहीं बोल उठता किः–

अनुवाद– *यह तो मुझे अपनी क़ाबिलियत (व्यक्तिगत ज्ञान) की वजह से मिला है।*

(सूरः कसस ७८)

बल्कि एक सच्चे और आख़िरत को मानने वाले (सुलैमान अलैहिस्सलाम) की तरह कहता हैः–

अनुवाद– *"यह मेरे रब का फ़ज़ल (अनुग्रह) है, ताकि वह मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ अथवा नाशुक्री।*

(सूरः अं–नमल ४०)

वह जब अपने हाथों को खुला हुआ और अपने राज्य को फैला हुआ देखता है तो फिरऔन की तरह यह नहीं कह उठताः–

अनुवाद– *क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं और क्या यह नहरें मेरे नीचे नहीं बह रही हैं।*

(सूरः–अज़्ज़ुख़रूफ)

कौन मुझसे अधिक शक्तिमान है।

बल्कि एक पैगम्बर बादशाह की तरह उसका दिल ख़ुदा की तारीफ़ और उसके शुक्र से झुक जाता है और सहज पुकार उठता हैः–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *ऐ 'रब'! तौफ़िक़ (सामर्थ्य) दे कि मैं तेरे उन पुरस्कारों का शुक्र अदा करता रहूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ–बाप पर किया है, और यह कि मैं ऐसे अच्छे काम करूँ जो तुझे पसंद आएं और अपनी रहमत से मुझे अपने भले बन्दों में दाख़िल कर।*

(सूरः–अं नमल १६)

वह दुनिया की इस सत्ता पर संतुष्ट नहीं होता, वह जानता है कि असल इज़्ज़त आख़िरत (परलोक) की इज़्ज़त है, और असल दौलत ख़ुदा की सच्ची गुलामी की दौलत है, इसलिये वह ख़ुदा के इनामों के शुक्र के साथ, जिस आख़िरी चीज़ की इच्छा करता है वह यह है कि दुनिया से एक सच्चे आज्ञापालक की तरह उठे और ख़ुदा के नेक बन्दों में शामिल हो। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कहते हैं–

अनुवाद– *ऐ मेरे रब! तूने मुझे हुकूमत दी और सपनों की तअ़बीर (स्वप्नार्थ) का ज्ञान दिया और उसके द्वारा वास्तविकताओं को समझने की प्रतिभा भी प्रदान की।। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदान करने वाले, दुनिया और आख़िरत (लोक परलोक) में तू ही मेरा संरक्षक है, अब तू मुझे इस्लाम की हालत में दुनिया से उठा ले और मुझे भले बन्दों में शामिल कर दे।*

(सूरः यूसुफ १०१)

आख़िरत पर अक़ीदा रखने वाला दुनिया की रूसवाई के मुकाबले में आख़िरत और हश्र के मैदान में रूसवाई से ज्यादा डरता है। वह उसे सोच कर काँप जाता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ है:–

अनुवाद– *हे अल्लाह! मुझे उस दिन रूसवा न करना, जिस दिन लोग दुबारा उठाए जाएंगे, जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद,*

www.abulhasanalinadwi.org

केवल वही लोग (उस दिन की रूस्वाई से बचेंगे) जो शुद्ध मन लेकर आएगा।

(सूरः अश्–शुअरा ८७–८९)

मोमिन (आस्थावान) की दुआ

अनुवाद– *ऐ हमारे रब! तूने जिसे आग (नर्क) में डाला उसे रूसवा किया, और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं......... और क़यामत के दिन हमें रूस्वा न करना बेशक 'तू' अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।*

(सूरः आलि–इमरान १९२ व १९४)

इसी का कारण है कि आख़िरत के इस नितांत अज़ाब (दण्ड) और हश्र की इस जिल्लत व रूसवाई पर दुनिया की बड़ी से बड़ी तकलीफ और बड़ी से बड़ी रूसवाई व बदनामी को वह वरियता देता है, इस भय से न केवल उसको सहन करता है बल्कि कभी तो अपने गुनाह का इज़हार करके उसको खुद मोल लेता है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में एक मुसलमान पुरूष माइज़ और एक मुसलमान औरत ग़मिदियह ने बार–बार अपनी गलती का इज़हार किया और इच्छा की कि उनको दुनिया में सज़ा देकर आख़िरत के दाग़ से और जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया जाये। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनदेखी की लेकिन वे बार–बार सामने आये और उन्होंने इस सज़ा की प्रार्थना की। घटना इस प्रकार हैः–

अब्दुल्लाह पुत्र बुरैदा अपने पिता से सुनकर कहते हैं कि एक दिन माइज़ पुत्र मालिक अस्लमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

www.abulhasanalinadwi.org

वसल्लम की सेवा में आये। और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने अपने पर बड़ा अत्याचार कर डाला, अर्थात मुझसे बलात्कार का पाप हो गया है, अतः मुझ पर हद जारी करके (दण्ड देकर) मुझे पाक कर दिया जाये। आपने उस दिन उनको वापस कर दिया अगले दिन वह फिर उपस्थित हुए और वही प्रार्थना की। आपने दूसरी बार भी उनको लौटा दिया। और उनके ख़नदान वालों को बुलवा के पूछा कि तुम्हें कुछ ज्ञात है। यह आदमी गलत तो नहीं कह रहा है। उन्होंने कहा जहाँ तक हमें मालूम है हम तो इसको समझदारी में अपनी क़ौम के अच्छे लोगों में ही समझते हैं। माइज़ तीसरी बार फिर हाज़िर हुए। आपने उनको उनके क़बीले वालों के पास भेज कर फिर उनके बारे में जानकारी करायी। उन्होंने यही कहा कि हमारे नज़दीक इसके होश व हवास ठीक हैं। फिर जब चौथी बार आये तो उनके लिए एक गड्ढ़ा खुदवाया गया और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश से उनको पत्थरों से मार डाला गया। फिर औरत आयी और उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं बलात्कार की पापिन हूँ। अतः हद (दण्ड) जारी कराके मुझे इस गुनाह से पाक करा दीजिये। आपने उसे वापस कर दिया, अगले दिन वह फिर आई और कहा श्रीमान आपने मुझे क्यों लौटा दिया शायद आपने मुझे (शक संदेह के कारण) उसी प्रकार से वापस किया जैसे माइज़ को वापस किया था। अल्लाह की कसम मैं गर्भवती हूँ। आपने फरमाया जब यह बात है तो इस समय हद नहीं जारी हो सकती। अतः तब आओ जबकि तुम्हारा बच्चा पैदा हो जाये। इस घटना को बयान करने वाले कहा करते हैं कि जब उसके बच्चा हो गया तो एक कपड़े में उस बच्चे को लेकर आई और कहा, यह बच्चा है जो मुझसे पैदा हो चुका है (अतः अब मुझ पर हद जारी करा दी जाये) आपने कहा नहीं। जाओ इसको दूध पिलाओ,

www.abulhasanalinadwi.org

यहाँ तक कि यह रोटी का टुकड़ा खाने लगे। फिर जब उस बच्चे का दूध छूट गया और वह कुछ खाने लगा तो फिर यह उसको लेकर हाजिर हुई और उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा था और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने इसका दूध छुड़ा दिया है और यह खाने लगा है, (अतः अब मुझ पर हद जारी करा दी जाये), आपने लड़के को लेकर मुसलमानों में से एक व्यक्ति के हवाले कर दिया। फिर आपके आदेश से उसके सीने तक का एक गड्ढा खोदा गया (जिसमें उसको सीने तक गाड़के) उसको लोगों ने पत्थरों से मार डाला। इन संगसार करने वालों में ख़ालिद पुत्र वलीद रज़ियल्लाहु अंहु भी थे, उन्होंने एक पत्थर उठाकर उसके सर पर मारा उस से जो ख़ून निकला तो ख़ालिद के चेहरे तक उसके छींटें आईं। उन्होंने उसको कुछ बुरा भला कहा जिसको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुन लिया तो आपने ख़ालिद से फरमाया उसको बुरा-भला न कहो। कसम उस ज़ात की जिसके कब्जः में मेरी जान है उसने ऐसी तौबः की है कि अगर अवैध टैक्स वसूल करने वाला कोई ज़ालिम भी ऐसी तौबः करे तो बख़्शा जाये। फिर हुजूर के हुक्म से उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गयी और वह दफन कर दी गयी। (सही मुस्लिम)

एक सर्वथा दुनिया परस्त और आख़िरत का इनकार करने वाले के नज़दीक यह कार्य पूर्णतया मूर्खता और पागलपन है। एक आदमी अपना ढका छिपा ऐब ज़ाहिर करे और अनावश्यक अपने शरीर को अज़ाब में डाले। लेकिन एक मोमिन के नज़दीक इससे बढ़कर कोई समझदारी का कार्य नहीं हो सकता कि आख़िरत के अज़ाब के मुकाबले में दुनिया के अज़ाब को सहन करे, इसलिए कि उसके **नज़दीक आख़िरत का अज़ाब ज़्यादा बड़ा है, ज़्यादा लम्बा है, ज़्यादा रूसवा करने वाला और ज़्यादा कठोर है।**

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– *और आख़िरत का अज़ाब बहुत **कठोर और** बहुत देर तक बाक़ी रहने वाला है।*

(सूरः ताहा १२७)

अनुवाद– *और आख़िरत का अज़ाब अधिक अपमानजनक है।*

(सूरः हामीम सजदा १६)

अनुवाद– *और आख़िरत का अजाब तो और भी सख़्त है, और वहाँ उनको कोई अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला न होगा।*

(सूरः अर्रअद ३४)

और इस अक़ीदे का नतीजा यह होता है कि आदमी दुकेले अकेले में समान रूप से कानून का पाबन्द, सावधान और ख़ुदा परस्त रहता है और जहाँ उसको देखने वाला और उससे सवाल करने वाला कोई नहीं होता, वहाँ भी उससे आचरण व दियानत के खिलाफ कोई बात नहीं होती।

मदायन की विजय में लोगों ने मालेगनीमत (युद्ध के पश्चात मिला माल) में ईरान के बादशाहों का फर्श लिया जो लाखों रूपये की मालियत का था, और सुरक्षित सेनापति के पास पहुँचा दिया। इसी तरह एक मामूली सिपाही को किस्रा क़ा बहुमूल्य जड़ाऊ वाला ताज हाथ आया, उसने भी इसको सरदार के हवाले कर दिया। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह सामान हज़रत उमर को भेजा, और उन्होंने इसको माले–ग़नीमत में देखा तो उनकी ज़बान से सहज ही निकल गया "जिन लोगों ने इन बहुमूल्य चीज़ों को हाथ नहीं लगाया और उनकी नीयत ख़राब नहीं हुई निश्चय ही वह बड़े नेक लोग हैं।"

आख़िरत के अक़ीदे का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह होता है

www.abulhasanalinadwi.org

कि इन्सान में दुनिया की तकलीफों, ज़िन्दगी की कटुताओं और असफलताओं का सहन करने की जबरदस्त ताक़त पैदा हो जाती है, जो एक आख़िरत का इन्कार करने वाले में नहीं होती।

यह विश्वास रखना है कि केवल यही ज़िन्दगी नहीं है, बल्कि इसके बाद की एक दूसरी ज़िन्दगी है जो हमेशा रहने वाली है और जो सांसारिक जीवन के क़ानून के अधीन नहीं है। इसलिए अगर वह मोमिन है और अच्छे कर्म करता है तो उसको विश्वास है कि उसकी सारी तकलीफों का वहाँ बदला मिलेगा। यह चार दिन की ज़िन्दगी तो किसी न किसी तरह गुज़र जायेगी, फिर वहाँ इसका ख़्याल भी नहीं होगा।[१] और आख़िरत का अक़ीदा, अल्लाह के दर्शन का शौक, जन्नत की ललक इन्सान में ऐसी लगन पैदा कर देता है जो दूसरी तदबीरों और वीर रस की कविताओं और दूसरे तरीकों से मुमकिन नहीं मोमिन अपनी जान को एक बिका हुआ सौदा समझता है जिसकी क़ीमत उसको जन्नत के रूप में मिलेगीः–

अनुवाद– *अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जान (प्राण) और उनके माल, जन्नत (स्वर्ग) के बदले में खरीद लिए हैं, यह लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो मारते भी है और मारे भी जाते हैं, इसी पर सच्चा वादा है।*

(सूरः अत्तौबः १११)

इसी अक़ीदे ने मुसलमानों में जान देने के लिए वह बेक़रारी और इस्लाम के लिए जान न्योछावर कर देने की वह भावना पैदा कर दी जिसकी मिसाल नहीं मिलती। मुस्लिम शरीफ़ की रवायत है कि

[१] इसीलिए इस्लामी देशों में आत्महत्या की संख्या पश्चिमी देशों की तुलना में शून्य है।

www.abulhasanalinadwi.org

दुश्मनों की मौजूदगी में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन सुना कि, "जन्नत के दरवाजे तलवारों के साये के नीचे हैं।" एक व्यक्ति जो परेशान हाल था, फटे कपड़े पहने हुए था, खड़ा हुआ और कहा कि ऐ अबू मूसा! क्या तुमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है? उन्होंने कहा हाँ! वह अपने साथियों के साथ लौट कर गया और कहा कि मेरा सलाम कुबूल करो, मैं चलता हूँ फिर तलवार का नियाम तोड़ा और ज़मीन पर फेंक दिया और तलवार लेकर दुश्मनों में घुस गया और ख़ुदा की राह में जान दे दी।

एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा:–

अनुवाद– "उठो चलो उस जन्नत की तरफ जिसकी चौड़ाई में तमाम ज़मीन और आसमान हैं।"

उमैर पुत्र हुमाम अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन है या जिसकी चौड़ाई में ज़मीन व आसमान आ जायेंगे?" आपने फरमाया, "हाँ"! उन्होंने कहा, "ओ हो"। अल्लाह के रसूल ने फरमाया, "यह क्यों कहते हो"? उन्होंने कहा ए अल्लाह के नबी! सिर्फ इस उम्मीद में कहता हूँ कि शायद मैं भी उन जन्नत के लोगों में से हूँ। आपने फरमाया, "तुम उनमें हो!" वह अपनी थैली में से खजूर निकालने और खाने लगे। फिर कहा कि अगर मैं इन खजूरों के खाने तक ज़िन्दा रहूँ तो यह तो बड़ी लम्बी ज़िन्दगी है। फिर उन्होंने खजूरें फेंक दीं, और लड़ना शुरू किया, यहाँ तक कि शहीद हो गये।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु **कहते हैं कि अनस पुत्र नज़र**

www.abulhasanalinadwi.org

रज़ियल्लाहु अन्हु ने ओहद युद्ध में हज़रत साद पुत्र मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा तो कहा कि 'नज़र के ख़ुदा की कसम मुझे जन्नत की खुशबू ओहद के पहाड़ों के उस ओर से आ रही है। जब वह शहीद हुए तो उनके जिस्म पर कुछ ऊपर अस्सी जख़्म (घाव) थे। तलवार के, बर्छे के और तीर के जख़्मों से छलनी, हो जाने की वजह से उनको पहचाना भी नहीं जा सकता था मगर उनकी बहन ने उनकी सिर्फ एक उंगली की वजह से पहचान लिया जिसमें कोई ख़ास निशानी होगी।

आख़िरत के इन्कार के प्रभाव

आख़िरत के इन्कार का पहला स्वाभाविक प्रभाव यह है कि संसारिक जीवन और दुनिया की चीज़ों से स्वाद और लाभ का एक जुनून पैदा हो जाता है और यही जीवन का लक्ष्य करार पाता है जो सोसाइटी यह अक़ीदा (विश्वास) रखती है वह 'खाओ पियो मस्त रहो' में भूली रहती है। और इसी में मुक़ाबला होता रहता है। वास्तव में आख़िरत के इन्कार के बाद यह जुनून सर्वथा बुद्धिमता है, जो इस जीवन के बाद किसी दूसरे जीवन की कल्पना से ख़ाली हो, वह इस जीवन का आनन्द लेने और दिल की आग बुझाने में क्यों कमी करें। और भोग विलास को किस दिन के लिए उठा रखें। इसी लिए कुर्आन कहता है:–

अनुवाद– और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे आख़िरत से निश्चिन्त हो कर फायदे उठा रहे हैं, और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाता है और उनका ठिकाना अग (नर्क) है।

(सूरः मुहम्मद १२)

उन्हीं लोगों से क़यामत के दिन कहा जायेगा–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– तुम अपने हिस्से की अच्छी चीजे दुनिया की ज़िन्दगी में ले चुके और उनसे खूब फायदा भी उठा चुके, तो आज तुम्हें अपमानित करने वाला अजाब (दण्ड) दिया जाएगा, क्यों कि तुम जमीन में बिना किसी हक़ के घमंड करते थे।

(सूरः अल्–अह्क़ाफ २०)

आख़िरत के इन्कार का स्वाभाविक नतीजा है कि यह दुनिया, इसकी चीज़ें, इसमें काम आने वाले कर्म अधिक लुभावने बन जाते हैं। निगाह भौतिकवादी और ओछी हो जाती है जो वास्तविकताओं तक नहीं पहुँच सकतीः–

अनुवाद– जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, 'हमने' उनके काम उनके लिए खुशनुमा (सुन्दर) बना दिये हैं तो वे परेशान (सत्य मार्ग से) भटकते फिरते हैं।

(सूरः अं–नम्ल ४)

अनुवाद– कह दीजिए, "क्या हम तुम्हें उनकी ख़बर दें, जो अपने अमल की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं? यह वह लोग हैं, "जिनकी पूरी कोशिश दुनिया ही की ज़िन्दगी में बरबाद हो कर रही, और वह अपने आप को यही समझते रहें, कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। यही वे लोग हैं; जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसके सामने हाजिर होने को न माना तो उनके काम भी किसी काम न आये। फिर क़यामत के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला वही दोज़ख है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र (इन्कार) किया, और हमारी आयतों, और हमारे रसूलों की हँसी उड़ाई। जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं। जिनमें वे हमेशा रहेंगे वहाँ से और कहीं न जाना चाहेंगे।"

(सूरः अल्–कहफ १०३–१०८)

www.abulhasanalinadwi.org

इसका एक नतीजा यह भी होता है कि जीवन में हक़ीक़त और संजीदगी (गम्भीरता) का हिस्सा कम और लहुव लइब (वह खेल–कूद और बात जो धार्मिक कामों से रोके) का हिस्सा ज़्यादा होता है। उनके जीवन के एक बड़े हिस्से को तफरीह और मौज मस्ती की व्यस्ततायें घेरे रहती हैं और बड़े–बड़े गंभीर समय और खतरों में भी उनके इस तफरीही कामों में कोई अंतर नहीं आता। कुर्आन **कहता है**:–

अनुवाद– *और आप उन लोगों को उनके हाल पर छोड़ दीजिए जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है, और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है।*

(सूरः अल्–अन्**आम ७०**)

इसका एक नतीजा यह भी है कि घटनाचक्र के **वास्तविक** कारण पर उनकी नज़र नहीं पड़ती, बल्कि कुछ ज़ाहिरी **चीज़ों में** उलझ कर रह जाती है, वह मामलात की गहराई तक **नहीं उतर** सकते जिसका नतीजा यह होता है कि ठीक बर्बादी के समय भी उनकी तफरीही व्यस्तता और गफलत कम नहीं होती। वह इन घटनाओं की कोई तावील (किसी बात का ऐसा फल बताना जो करीब–करीब ठीक जान पड़े) कर लेते हैं और उनकी कोई फर्जी और ग़ैर हक़ीक़ी वजह तलाश करके संतुष्ट हो जाते हैं। और उनके रवैये में कोई बड़ी तब्दीली नहीं आती। निम्न आयत साक्षी हैः–

अनुवाद– *जब हमारी ओर से उन पर अज़ाब (दण्ड) आया तो फिर क्यों न गिड़गिड़ाए तथा क्यों न रोए व हमसे सम्पर्क साधा? लेकिन बात यह है कि उनके दिल तो कठोर हो गये हैं और जो कुछ वे करते थे, शैतान ने उसे उनके लिए मुज़य्यन (मनमोहक) बना दिया था।*

(सूरः अल्–अन्आम ४३)

www.abulhasanalinadwi.org

आख़िरत के इन्कार का एक नैतिक नतीजा यह होता है कि नैतिक क्रियाओं का कोई उत्प्रेरक बाक़ी नहीं रहता और उन अख़लाक़ व आमाल (नैतिकता व अच्छे कार्य) की कोई आमादगी पैदा नहीं होती जिनमें कोई दुनियावी फायदा नज़र नहीं आता, या उनके करने के लिए इन्सान मजबूर नहीं होता।

अनुवाद– *क्या आपने उस व्यक्ति को देखा जो बदला व दण्ड को झुठलाता है? यह वही है जो यतीम को धक्के देता है और मिस्कीन मुहताज को खिलाने की तर्गीब (प्रोत्साहन) नहीं देता।*

(सूरः अल–माऊन १–३)

और अगर वह ऐसे कोई कार्य करते भी हैं तो दिखावे के लिएः–

अनुवाद– *और जो लोगों को दिखाने के लिए अपने माल ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते न आख़िरत के दिन पर, जिस किसी का साथी शैतान हो, तो वह बहुत ही बुरा साथी है।*

(सूरः अं–निसा ३८)

अनुवाद– *उस व्यक्ति की तरह (बर्बाद न कर दो), जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल खर्च करता, अल्लाह और आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखता।*

(सूरः अल्–बक़रह् २६४)

आख़िरत के इन्कार की एक विशेषता यह है कि आदमी घमण्डी हो जाता है, जो अपने से ऊपर किसी हाकिम या ताक़त और सर्वगुण सम्पन्न मालिक की अदालत और इस जिन्दगी के बाद किसी ज़िन्दगी और बदले के दिन का यक़ीन नहीं रखता। उसको एक बे नकेल ऊँट और एक सरकश इन्सान बनने से क्या चीज़ रोक सकती है।

www.abulhasanalinadwi.org

दुनियावी क़ानून और मसलहत व अवरोध किसी हद तक उसके रास्ते में रूकावट बनेंगे, लेकिन यह अवरोध जब दूर हो जायेंगे या इन पर जहाँ वह हावी हो सकेगा तो वहाँ वह फ़िरऔन बन कर भी प्रकट होगा। कुर्आन में आख़िरत के इनकार के साथ, इसी लिये, अक्सर तकब्बुर (घमण्ड) का ज़िक्र किया गया हैः–

अनुवाद– *तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल इन्कार कर रहे हैं और वे अपने आपको बड़ा समझ रहे हैं।*

(सूरः अं–नहल २२)

फ़िरऔन और उसके लश्कर के बारे में कहा गयाः–

अनुवाद– *और वह और उसकी सेनाओं ने धरती में नाहक घमण्ड किया, और समझा कि उन्हें हमारी ओर लौटना ही नहीं है।*

(सूरः अल्–क़सस ३६)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उस कथन में जो कुर्आन में किया गया है, इस क़िस्से की तरफ इशारा किया गया हैः–

अनुवाद– *और मूसा ने कहा, मैं हर घमंडी के मुकाबले में जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता अपने और तुम्हारे रब की पनाह (शरण) ले चुका हूँ।"*

(सूरः अल्–मूमिन २७)

आख़िरत का इन्कार करने वाला सामान्यतः इस दुनिया मे भी एक आध्यात्मिक अज़ाब (पीड़ा) और मनोवैज्ञानिक उलझन से ग्रसित रहता है। इनमें जिन लोगों की आत्मा मर नहीं गई है, उनको यह खटक हर हाल में तकलीफ देती रहती है कि जीवन बहरहाल सीमित है, उम्र कितनी ही लम्बी हो, भोग विलास का सामान कितना ही

www.abulhasanalinadwi.org

अधिक हो, मौत यक़ीनी है और इस आनन्द भवन से एक दिन ज़रूर ही निकलना पड़ेगा और इस भोग विलास को अनिवार्यतः छोड़ना पड़ेगा। दिल की यह फांस और आँखों की यह खटक उनके ऐश को किरकिरा कर देती है और उन्हें बेचैन रखती है। दुनिया में वह बड़े निराश होते हैं और हक़ीक़त में उनसे बढ़कर कौन निराश हो सकता है:—

मुनहसिर[१] मरने पे हो जिसकी उम्मीद,
ना उम्मीदी उसकी देखा चाहिए।

इसलिए इनमें से बहुत से लोग अपने दिल को मौत के ख्याल से बचाते रहते हैं, और इसका ख्याल किसी तरह आने नहीं देते। मौत के नाम से वह घबराते हैं, और कुछ इसका इन्तेज़ाम करते हैं कि उनको किसी तरह भी यह नागवार (अप्रिय) हक़ीक़त याद न आये इसलिए वह लोग नशे का इस्तेमाल करते हैं ताकि उन पर हमेशा बेख़ुदी (बेहोशी) छायी रहे—

मय[२] से गरज़ निशात[३] है किस रू सियाह[४] को
एक गूनः[५] बेख़ुदी[६] मुझे दिन—रात चाहिए।

फिर इनकी यह हालत होती हे कि सारी उम्र उनको यह कड़ुवा यथार्थ कभी नहीं याद आता और उनका यह आलम होता है:—

सदा ख़्वाबे ग़फ़लत में मदहोश रहना,
दमे मर्ग[७] तक ख़ुद फ़रामोश[८] रहना।

उनकी आँखें उस समय खुलती हैं जब वह हमेशा के लिए बन्द

[१] निर्भर [२] मदिरा [३] खुशी [४] गुनाहगार [५] किस्म [६] बेहोशी [७] मौत [८] स्वयं को भूल जाना

www.abulhasanalinadwi.org

होने लगती हैं:–

अनुवाद– *वे लोग बड़े घाटे में हैं जो अल्लाह के सामने पेशी को झूठ बताते व समझते हैं। यहाँ तक कि जब अचानक उन पर क़यामत (महाप्रलय) आ जाएगी, तो वे कहेंगे "हाय! अफ़सोस, उन कोताहियों पर जो इस क़यामत की तैयारी में हमसे हुई" और हाल यह होगा कि अपने पापों के बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे, देखो। सावधान! बहुत बुरे वह बोझ होंगे जिनको वह उठाए हुए होंगे। बुरा बोझ है जो यह उठाए हुए हैं।*

(सूर: अल्–अन्आम ३१)

अनुवाद– *और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो केवल खेल–तमाशा है, और आख़िरत का घर ही अस्ल ज़िन्दगी है, क्या ही अच्छा होता कि लोग इस वास्तविकता को जान लेते?*

(सूर: अल–अन्कबूत ६४)

—— **समाप्त** ——

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org